स्व. दयाराम बेरी

आप का जन्म १८६५ ई० में अमृतसर (पंजाब) में हुआ। रामरतन बेरी के आप पुत्र थे।



स्वाधीनता संग्राम में आप किशोरावस्था में ही कूद पड़े थे। १६१४ ई० में प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय सेना में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ प्रचार करने के आरोप में आप दण्डित हुए। फिर असहयोग आन्दोलन, जालियांवाला बाग हत्याकांड विरोध, साइमन कमीशन विरोध, नमक सत्याग्रह, आदि में भाग ले कर आप बारम्बार दण्डित हुए और कुल २२ वर्ष आप ने कारागृह में व्यतीत किए। आप का कार्यक्षेत्र अमृतसर से बढ़ कर नेपाल, छपरा, बनारस होता हुआ सुदूर कलकत्ता महानगर तक फैल गया था। बंगाल में आप ने छोटे-छोटे बच्चों को लेकर वानरी सेना का गठन किया था। रामगढ़ कांग्रेस में बंगाल से जो ज्योति गई थी, उसे आप ही एक रथ पर ले गए थे। द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ने पर जब ब्रिटिश सरकार ने आप को ७ वर्ष के लिए जेल भेज दिया, तब देवली कैम्प में आप ने ३२ दिनों तक अनशन किया।

१६३४ ई० में आप समाजवादी दल में सम्मिलित हो गए थे। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, डॉ० राममनोहर लोहिया, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन, आदि शीर्षस्थ राजनेताओं के निकट सानिध्य में कार्य करने का अवसर आप को प्राप्त हुआ। १६५२, १६६२ एवं १६६७ ई० में पश्चिम बंगाल विधान सभा के आप सदस्य निर्वाचित हुए।

आप संघर्षशील एवं लोकप्रिय श्रमिक नेता थे। १६३३ ई० में श्रमिकों को साप्ताहिक अवकाश दिलवाने हेतु समाजवादी पार्टी के मंच से आप ने जोरदार आन्दोलन चलाया और सफलता भी प्राप्त की। आप नेशनल यूनियन आफ जूट वर्कर्स के अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय राष्ट्रीय मजदूर संघ के उपाध्यक्ष थे। स्काटलैण्ड की जूट मिलों से भारत में आयोजित जूट के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन चला कर आप ने सरकार को उस पर प्रतिबन्ध लगाने पर बाध्य किया था। १६३६ ई० में आप के नेतृत्व में जूट मिल मजदूरों ने ऐतिहासिक हड़ताल की और छांटे गए १ लाख मजदूर पुनः बहाल किए गए। भारत सरकार को भी जूट मजदूरों के लिए एक 'वेज बोर्ड' का गठन करना पड़ा। इस हड़ताल के दौरान पुलिस की लाठी से सख्त रूप में घायल हो कर आप २१ दिन चारपाई पर पड़े रहे। जब वेज बोर्ड की सिफारिशों पर अमल नहीं हुआ, तब पुनः १३ फरवरी १६६१ ई० से जूट मिलों में हड़ताल करवा कर आप ने लाखों मजदूरों को अंतरिम सहायता दिलवाई। १६५० ई० में जिनेवा में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक संघ सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में आप ने भाग लिया।

पत्रकारिता तथा साहित्य के क्षेत्र में भी आप का उल्लेखनीय योगदान रहा। अंग्रेजों के दमन चक्र के चलते जब एक के बाद एक हिन्दी समाचार पत्र बन्द होते जा रहे थे, तब आप ने 'सेनापति' नामक साप्ताहिक का प्रकाशन किया और इसका सम्पादकत्व भी खुद ही सँभाला। इस पत्र को 'उग्र' तथा

निराला जैसे दिग्गजों का सहयोग मिला। 'सेनापति' से क्रुद्ध ब्रिटिश सत्ता ने आप को १९३८ ई० में बंगाल से निर्वासित कर दिया।

धार्मिक तथा सार्वजनिक सेवा कार्य में आप की प्रवृत्ति थी। गंगासागर मेले पर सेवा के लिए आप ने एक स्वयंसेवक दल का गठन किया। आप की गौरवपूर्ण राष्ट्रसेवा के लिए खत्री समाज ने आप को 'जाति रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया था।

१६ मई १९७८ ई० को आप परलोकगामी हुए। स्वातन्त्र्य योद्धा तथा श्रमिक नेता के रूप में आप स्मरणीय रहेंगे। •

बद्री प्रसाद सरावगी

आप का जन्म १८९७ ई० में राजगढ़ (चुरु) में हुआ। मुनीलाल सरावगी आप के पिता थे। जीवनारम्भ आप ने सरकारी विद्यालय में अध्यापन से किया। १९१९ ई० में आप कलकत्ता आ गए।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी तथा बिहार इंस्टीच्यूशन के माध्यम से आप ने सार्वजनिक सेवा में विशेष योग दिया। १९२० ई० में जब डाक-कर्मचारियों की हड़ताल हुई, तब आप ने अपने साथियों के साथ सुचारु रूप से व्यवस्था संभालने में योगदान किया।

१९३१ ई० में लन्दन में आयोजित गोलमेज सम्मेलन के पश्चात् बीकानेर के महाराजा गंगासिंह अपने विरुद्ध निकले एक इश्तिहार को देख कर स्वाधीनता सेनानियों से क्रुद्ध हो गए। अन्य ८ सहयोगियों के साथ आप गिरफ्तार हो गए और २ वर्ष की सजा सुना दी गई। स्वाधीनता संग्राम की रजत जयन्ती पर राजस्थान सरकार ने आप को ताम्र-पत्र से विभूषित किया।

आप एक ध्येयनिष्ठ तथा सेवाभावी राष्ट्रकर्मी हैं। •

स्व. दीनबन्धु शुक्ल

स्वाधीनता संघर्ष की बागडोर जब महात्मा गांधी के हाथ में आई, तब उन्होंने विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करने के लिए



देशवासियों का आह्वान किया। एक निष्ठावान स्वयंसेवक के रूप में आप ने उस आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और गिरफ्तार हो कर कारावास का दण्ड भी सहा। •

मदन लाल मिश्र

आप का जन्म ४ फरवरी १९०१ ई० को हुआ। गंगानारायण मिश्र आप के पिता थे।



स्वातन्त्र्य-संग्राम में आप ने युवावस्था से ही भाग लिया। कांग्रेस के अधिवेशनों में आप नियमित रूप से शामिल होते रहे। विदेशी वस्त्र बहिष्कार तथा 'नमक सत्याग्रह' में सक्रिय भाग ले कर आप गिरफ्तार हुए और जेल गए। बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के

आप मन्त्री रह चुके हैं। डलहौसी स्क्वायर स्थित ब्लैक हॉल को तोड़ने की आप ने योजना बनाई, जो कि फिर फजलूल-हक के मुख्य मंत्री बनने पर वहाँ से हटा दिया गया। १९४२ ई० के 'करो या मरो' आन्दोलन में भाग ले कर आप जेल गए।

सामाजिक तथा जातीय उत्थान में भी आप सक्रिय भाग लेते रहे। खत्री सेवा संघ के आप मन्त्री बने। १९६०ई० में आप काशी चले गए और वहाँ भी सार्वजनिक संस्थाओं में यथासम्भव योग दे रहे हैं। काशी सारस्वत सभा के आप सभापति रह चुके हैं।

आप दृढ़व्रती तथा देशप्रेमी व्यक्ति हैं।●

विजय सिंह नाहर

आप का जन्म १९०३ ई० को अजीमगंज (मुर्शिदाबाद) में हुआ। सुप्रसिद्ध पुरातत्व-वेत्ता एवं मारवाड़ी समाज के प्रथम विधिवेत्ता पूरण चन्द्र नाहर आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर (एम. ए.) अध्ययन अधूरा छोड़ कर ही आप स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े।



आप महात्मा गांधी के अनन्य श्रद्धालु हैं। १९२८ ई० में बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आप सदस्य बनाए गए। १९३३ ई० से लगातार ११ वर्ष तक आप कलकत्ता नगर निगम के पार्षद रहे और बाद में एल्डरमेन भी बने। १९४२ ई० में 'भारत छोड़ो' आह्वान के पर आप ने आन्दोलन में भाग लिया और ३ वर्ष तक कैद रहे। १९४६ ई० से १९५७ ई० तक आप पश्चिम बंगाल की विधान सभा के कांग्रेसी सदस्य रहे। १९५७ ई० में आप डॉ० विधान चन्द्र राय के मंत्रि-मण्डल में शामिल हुए और १९७१ ई० में कांग्रेसी विधायक दल के नेता निर्वाचित हुए और फिर सरकार में उप-मुख्यमंत्री के पद पर रहे। इसके पूर्व पश्चिम बंगाल कांग्रेस पार्टी के आप महामंत्री तथा अध्यक्ष रह चुके थे। चुनाव रणनीति के आप विशेषज्ञ माने जाते रहे हैं। १९७७ ई० में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर आप जनता पार्टी में शामिल हुए और इस के प्रतिनिधि के रूप में उत्तर-पश्चिम कलकत्ता क्षेत्र से लोकसभा में सांसद निर्वाचित हुए। आप जनता पार्टी के महासचिव भी रहे। सम्प्रति सक्रिय राजनीति से अवकाश ले आप धर्म तथा समाज की सेवा में संलग्न हैं।

ओसवाल महासम्मेलन के अजमेर अधिवेशन में पर्दा-प्रथा विरोधी प्रस्ताव आप ने पास करवाया। दहेज प्रथा तथा विवाह संबंधी अन्य कुरीतियों के खिलाफ भी आप ने सत्याग्रह किया।

कलकत्ता श्वेताम्बर जैन समाज के आप अग्रगण्य नेता हैं। बिहार राज्य जैन श्वेताम्बर न्यास परिषद के अध्यक्ष के रूप में आपने बिहार स्थित श्वेताम्बर जैन तीर्थक्षेत्रों की व्यवस्था सुधारने तथा हिसाब-किताब को नियमित करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निबाही। कलकत्ता श्वेताम्बर जैन समाज की विभिन्न संस्थाओं में विधिवत निर्वाचन-प्रणाली की परम्परा कायम करने में आप की विशेष भूमिका रही। वास्तु-शिल्प तथा पुरातत्व शास्त्र में आपका गहन अध्ययन है। अपनी गौरवपूर्ण समाज सेवा के लिए आप

श्वेताम्बर जैन समाज द्वारा 'श्रावक रत्न' की उपाधि से अलंकृत किए गए।

आप एक वरिष्ठ राजनेता तथा अग्रणी समाजसेवी हैं। •

तैय्यब मोहम्मद जरीब

आप का जन्म २१ नवम्बर १६०९ ई० को कलकत्ता में हुआ। प्रतिष्ठित व्यवसायी मोहम्मद अली हुसेन अली आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर आप ने पत्रकार जीवन का प्रारम्भ किया। पूर्वी भारत में उर्दू के सब से पुराने और प्रसिद्ध अखबार 'रोजाना हिन्द' के प्रारम्भ से ही आप उससे सम्बद्ध हैं।



राष्ट्रवाद के आप प्रबल पक्षधर हैं। स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग ले कर आप अंग्रेज शासकों के कोप-भाजन बने और यातनाएँ भी सहीं। बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के आप दो बार अध्यक्ष चुने गए। हज समिति, अल्पसंख्यक बोर्ड, फैज हैदरी तथा फैज हुसैन के आप सक्रिय सदस्य रहे। अमेरिका तथा अन्य कई देशों की आप यात्रा कर चुके हैं।

आप कलकत्ता में गुजराती समाज के अग्रणी कार्यकर्त्ता हैं। बीमार, असहाय तथा जरुरतमन्दों की मदद करना आप अपना फर्ज समझते हैं। लगातार २५ वर्ष तक आप ने अवैतनिक प्रेसीडेन्सी मैजिस्ट्रेट पद का दायित्व सँभाला। अपनी गौरवपूर्ण राष्ट्र सेवा के लिए आप प० बंगाल राज्य सरकार द्वारा १६७२-'७३ ई० के लिए कलकत्ता महानगर के 'शेरिफ' नियुक्त किए गए।

आप सहृदय तथा कर्त्तव्य-परायण राष्ट्रसेवी हैं। •

स्वतन्त्र सिंह कोठारी

आप शिवसिंह कोठारी के पुत्र हैं। चार्टर्ड एकाउन्टेंसी की उपाधि प्राप्त कर आप ने इंगलैण्ड जा कर टैक्सेशन में उच्चतम शिक्षा प्राप्त की। सम्प्रति कलकत्ता महानगर के अग्रणी चार्टर्ड एकाउन्टेंटों में आप की गणना है। आप इंस्टीट्यूट आफ चार्टर्ड एकाउण्टेंटस की केन्द्रीय परिषद की रोजगार उपसमिति के अध्यक्ष रह चुके हैं। १६६७ ई० में पेरिस में आयोजित चार्टर्ड एकाउन्टेन्टस् के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधि रूप में आप ने भाग लिया।

१६६७ ईस्वी में जनसंघ के प्रतिनिधि के रूप में लोकसभा का चुनाव लड़ कर आप संसद सदस्य बने। विभिन्न महत्वपूर्ण संसदीय समितियों में रह कर आप ने अपनी कार्य-क्षमता का अच्छा प्रदर्शन किया। सरकारी उद्योगों के प्रबन्ध हेतु सार्वजनिक समिति का जब गठन हुआ, तब आप इसके संयोजक बने। मध्य प्रदेश सड़क परिवहन के आप निदेशक रहे। कलकत्ता उत्पादकता परिषद, राज्य बचत सलाहकार बोर्ड और गोयनका कालेज आफ कामर्स एण्ड बिजनेस मैनेजमेण्ट के आप निदेशक रह चुके हैं।

आप की रुचि लेखन की ओर है। आर्थिक जगत, सार्वजनिक राजस्व समस्याओं तथा करारोपण सम्बन्धी विषयों पर आप के लेख स्टेट्समैन तथा अन्य अंग्रेजी समाचार-पत्रों में प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं।

आप प्रबुद्ध व कर्मठ राष्ट्र-सेवी हैं। •

शंकर लाल भट्टर

आप का जन्म आश्विन शुक्ला तृतीया संवत् १९८३ को कलकत्ता में हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आप समर्पित कार्यकर्त्ता हैं। आपात्-काल के दौरान में संघ पर लगे दमनकारी प्रतिबन्ध के खिलाफ सत्याग्रह कर आप ने कारावास का दण्ड सहा।

१९६५ ई० में भारतीय जनसंघ के उम्मीदवार के रूप में कलकत्ता नगर निगम निर्वाचन में आपने तगड़ा संघर्ष किया। भारतीय मजदूर संघ के तत्वावधान में आप ने श्रमिक वर्ग के संगठन तथा आन्दोलनों में योग दिया।

आप विश्व हिन्दू परिषद की उत्तर कलकत्ता शाखा के कोषाध्यक्ष रहे तथा दक्षिण कलकत्ता शाखा के संस्थापकों में से हैं। मधुपुर (संथाल परगना) में आप ने विश्व हिन्दू परिषद की शाखा तथा सरस्वती विद्या मन्दिर की स्थापना की है।

सामाजिक तथा सार्वजनिक संस्थाओं में आप की अनुरक्ति है। बांगला देश शरणार्थियों की 'वस्तुहारा सहायता समिति' के दमदम शिविर के माध्यम से आप ने सेवा की।

आप स्पष्टवक्ता तथा ध्येयनिष्ठ कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। ●

सैफुद्दीन कश्मीरी

आप का जन्म १९१४ ई० में अमृतसर (पंजाब) में हुआ। आप के पिता शेख झण्डू शाल विक्रेता थे। व्यवसाय हेतु आप लोग सपरिवार कलकत्ता आ गए। आप उर्दू भाषा के विद्वान हैं तथा धाराप्रवाह वक्ता भी।

भगत सिंह नवजागरण भारत सभा के माध्यम से आपने राजनीति में प्रवेश किया। १९३९ ई० में कांग्रेस पार्टी के भीतर सोशलिस्ट फ्रण्ट के गठन में आप की प्रमुख भूमिका रही। १९४२ ई० में 'भारत छोड़ो' के आह्वान पर आप ने २ वर्ष तक भूमिगत रह कर कार्य किया। १९४६ ई० के साम्प्रदायिक दंगों में आप ने शान्ति स्थापनार्थ



बहुत काम किया और कट्टरपन्थियों के हाथों घायल भी हो गए। पुनः १९५० ई० में जब साम्प्रदायिक दंगे भड़के, तब जोड़ासांकू का थानेदार आप को बिना वजह ४५ दिन तक बन्द रखने के अपराध में मैजिस्ट्रेट द्वारा दण्डित हुआ। १९७३ ई० में पश्चिम बंगाल सोशलिस्ट पार्टी के आप अध्यक्ष बने।

मजदूर आन्दोलनों में आप सक्रिय भाग लेते रहे हैं। बीड़ी मजदूरों तथा जूट मिल श्रमिकों के संगठन हेतु आप ने काम किया। वर्तमान में आप रबर मजदूर पंचायत के अध्यक्ष तथा हिन्द मजदूर सभा की कार्य-कारिणी समिति के सदस्य हैं।

आप प्रबुद्ध देशभक्त तथा कर्मठ श्रमिक नेता हैं। ●

रामकृष्ण सरावगी

आप का जन्म १७ नवम्बर १९२४ ई० को हुआ। सुप्रसिद्ध समाजसेवी तुलसीराम सरावगी आप के पिता थे। बी. कॉम. की उपाधि प्राप्त कर आप ने जीवन-संग्राम में प्रवेश किया।

१९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में आप ने भाग लिया। १९६१ ई० में पश्चिम

बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता –

बंग सरकार द्वारा आप 'जस्टिस आफ पीस' नियुक्त किए गए। १६६५ ई० में कलकत्ता नगर निगम निर्वाचन में आप कांग्रेसी पार्षद चुने गए। निगम की विभिन्न उपसमितियों से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध रहे। १६६६ ई० से १६७२ ई० तक लगातार आप बड़ाबाजार क्षेत्र से पश्चिम बंग विधानसभा में कांग्रेसी प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित होते रहे। १६७२ ई० में सिद्धार्थशंकर राय मन्त्रिमण्डल में आप राज्य मन्त्री बने।

•



सामाजिक तथा सार्वजनिक कार्यों में आप की अभिरुचि है। १६४१-४२ ई० में बर्मा से आए शरणार्थियों की मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के माध्यम से आप ने सेवा की। कालांतर में आप सोसाइटी के विभागीय मन्त्री बने। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी सभा पुस्तकालय, सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय, बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय तथा कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी के आप मन्त्री रह चुके हैं। सामाजिक सुधारों के आप पक्षधर हैं।

आप एक निपुण तथा मिलनसार राजनीतिज्ञ हैं। •

राजेश खेतान

आप का जन्म १६ फरवरी १६४५ ई० को बम्बई में हुआ। राधाकृष्ण खेतान आप के पिता थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. कॉम. परीक्षा उत्तीर्ण कर आप ने कलकत्ता उच्च न्यायालय से 'सालिसीटर' की उपाधि प्राप्त की।



कांग्रेस (इ) दल के आप कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। अपने दल के वरिष्ठ नेताओं से सम्बन्धित महत्वपूर्ण मुकदमों की आप ने विभिन्न उच्च न्यायालयों तथा सर्वोच्च न्यायालय में पैरवी की। पश्चिम बंगाल इण्टक के आप कानूनी सलाहकार हैं। सम्प्रति पश्चिम बंगाल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आप कोषाध्यक्ष भी हैं। १६८२ ई० में बड़ाबाजार क्षेत्र से आप कांग्रेस (इ) के प्रतिनिधि के रूप में पश्चिम बंगाल विधानसभा निर्वाचन में विजयी रहे।

सामाजिक कार्यों में आप की रुचि है। श्री चाओ सती ट्रस्ट (झुझनूं) के आप ट्रस्टी हैं। वेस्ट बंगाल मारवाड़ी फेडरेशन, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, काशी विश्वनाथ सेवा समिति आदि से आप सम्बद्ध हैं।

आप कुशल विधिवेत्ता तथा सक्रिय राजनीतिज्ञ हैं। •

देवकीनन्दन पोद्दार

आप का जन्म १० सितम्बर १६३४ ई० को कलकत्ता में हुआ। घासीराम पोद्दार आप के पिता थे। पटना विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप कलकत्ता आ कर पैतृक व्यवसाय में संलग्न हो गए।

छात्रावस्था से ही आप राजनीति में सक्रिय थे। सुप्रसिद्ध समाजसेवी तथा उद्योगपति आनन्दी लाल पोद्दार आप के चाचा थे। फलतः कांग्रेस पार्टी से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध हो गए। १९६९ ई० से १९७२ ई० तक आप जोड़ासाकूं क्षेत्र से पश्चिम बंग विधानसभा में कांग्रेसी प्रतिनिधि के रूप में निर्वाचित हुए। पुनः १९८२ ई० में आप इसी क्षेत्र से विधायक चुने गए हैं।

सामाजिक तथा सार्वजनिक कार्यों में आप की अभिरुचि है। काशी विश्वनाथ सेवा समिति के अध्यक्ष के रूप में आप ने उसके सदस्यों का पारस्परिक मनोमालिन्य दूर किया। विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी हास्पिटल, विशुद्धानन्द हास्पिटल (बड़तल्ला), मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, नागरिक स्वास्थ्य संघ आदि के माध्यम से आप जनहित कार्यों में संलग्न हैं। आप सनातन धर्म विद्यालय के सभापति तथा रघुमल आर्य विद्यालय एवं विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय की प्रबन्ध-कारिणी के सदस्य रह चुके हैं।

आप उत्साही तथा कर्मठ राजनीतिज्ञ हैं। ●

स्व. प्रमोदानन्द ब्रह्मचारी

आप ने जनता में स्वाधीनता की अलख जगाने के लिए अहर्निश कार्य किया। आप ओजस्वी वक्ता तथा निष्णात गायक थे।



अपनी बहुमुखी प्रतिभा से आप ने कलकत्ता महानगर की देशप्रेमी जनता को महात्मा गांधी के आन्दोलनों में सक्रिय सहयोग देने के लिए प्रेरित किया।

कर्मठ एवं समर्पित स्वातंत्र्य-योद्धा के रूप में आप स्मरणीय रहेंगे। ●

सरला माहेश्वरी

आप का जन्म २१ जुलाई १९५४ ई० को बीकानेर (राजस्थान) में हुआ। हरीश भादानी की आप पुत्री हैं। राजनीति शास्त्र में एम. ए. की उपाधि प्राप्त कर आप ने कलकत्ता निवासी अरुण माहेश्वरी से विवाह किया है।



छात्रावस्था से ही आप ने राजनीति में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। बीकानेर विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया। गत पश्चिम बंगाल विधान सभा निर्वाचन में जोड़ाबगान केन्द्र से मार्क्सवादी साम्यवादी उम्मीदवार के रूप में आप ने प्रतिद्वन्दिता की।

मार्क्सवादी साम्यवादी दल के साप्ताहिक मुखपत्र 'स्वाधीनता' के सम्पादक मंडल तथा 'जनवादी लेखक संघ' की कार्यकारिणी की आप सदस्या हैं। आप के निबंध तथा रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

आप कुशल वक्ता तथा सक्रिय राज-नीतिक कार्यकर्त्ता हैं। ●

स्व. रमा देवी मुरारका

स्वाधीनता सेनानी तथा समाजसेवी वसन्त लाल मुरारका की आप धर्मपत्नी थी। महात्मा गांधी के आह्वान पर १९२० ई० के



विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में आप ने महिला सत्याग्रहियों के जत्थों का नेतृत्व किया। पुनः १९३० ई० में नमक सत्याग्रह में आप ने हिस्सा लिया।

आप समाज सुधार के लिए प्रबल आग्रही थीं। नारी जाति को घर की चहारदिवारी से बाहर निकल कर स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के लिए आप ने प्रेरित किया।

आप ओजस्वी देशभक्त रमणी थीं। ●

स्व. डॉ. जे. एम. दासगुप्त

आप सुविज्ञ चिकित्सक के रूप में बड़ाबाजार अंचल में लोकप्रिय थे। स्वाधीनता संग्राम में अपनी पत्नी विमल प्रतिभा देवी के साथ आप ने सक्रिय भाग लिया। महात्मा गांधी के आह्वान पर १९२० ई० में विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन के दौरान आप ने विलायती कपड़ों की दूकानों के सामने धरना दिया और अंग्रेज शासकों के क्रोध के शिकार हो कर कारावास का दण्ड भी सहन किया।

कालान्तर में बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटी के आप अध्यक्ष बने तथा बंगाल विधान सभा के निर्वाचन में बड़ाबाजार क्षेत्र से विजयी हुए।

आप दृढ़-प्रतिज्ञ राष्ट्रसेवी थे। ●

स्व. दिलीप कुमार घोष

तरुणावस्था से ही आप महात्मा गांधी के आह्वान पर स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। १९२० ई० में विदेशी वस्त्र बहिष्कार के दौरान आप ने विलायती कपड़ों के विक्रेताओं की दूकानों के सामने सत्याग्रह किया। फिर जब बंगाल में सशस्त्र क्रान्तिकारियों का जोर बढ़ा, तब आप ने उन्हें भी सहयोग दिया। १९३० ई० के नमक सत्याग्रह तथा १९४२ ई० के भारत छोड़ो आन्दोलन



में आप ने सक्रिय हिस्सा लिया और जेल भी गए।

बंगाली समाज में व्याप्त रूढ़िवादिता तथा जड़ता को विनष्ट करने के लिए भी आप सतत् उद्यमी रहे।

आप सक्रिय तथा निर्भय देशभक्त थे। ●

स्व. देवी राँका

सुप्रसिद्ध स्वातन्त्र्य-वीर सरदार सिंह महनोत की आप भतीजी थीं। १९२० ई० के स्वदेशी आन्दोलन तथा १९३० ई० के नमक सत्याग्रह में भाग ले कर आप अपनी चाची सज्जन देवी के साथ दो बार जेल गईं।

विवाह हो जाने पर आप नागपुर चली गईं और वहाँ भी सार्वजनिक तथा राजनैतिक आन्दोलनों में भाग लेती रहीं। अपनी सरल एवं तेजस्वी वक्तृता से आप महिलाओं में स्वाधीनता संग्राम के प्रति जागृति उत्पन्न करती रहीं। अल्पायु में ही आप का आकस्मिक निधन हो गया।

आप ओजस्वी वक्ता तथा कर्त्तव्यनिष्ठ रमणी थीं। ●

स्व. दयाशंकर वाजपेयी

आप महात्मा गांधी के अनन्य अनुयायी थे। बड़ाबाजार में जब भी आंदोलन होता, तब आप आगे बढ़ कर साम्राज्यवादी अंग्रेज



शासन के विरुद्ध नारे लगाते थे। १६२० ई० के विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन में भाग ले कर आप जेल भी गए। ●

स्व. राजवंशी सिंह

आप महात्मा गांधी के अनन्य श्रद्धालु तथा जागरुक स्वतन्त्रता संग्रामी थे। १६२० ई० में विदेशी वस्त्र बहिष्कार आन्दोलन तथा १६३० ई० में नमक सत्याग्रह में आप ने बड़ाबाजार कांग्रेस के स्वयंसेवक के रूप में सक्रिय भाग लिया। फलस्वरूप अंग्रेज शासकों की कोपाग्नि का पात्र बन आप ने कारावास के दण्ड का वरण किया। ●

श्याम कन्हैया सिंह

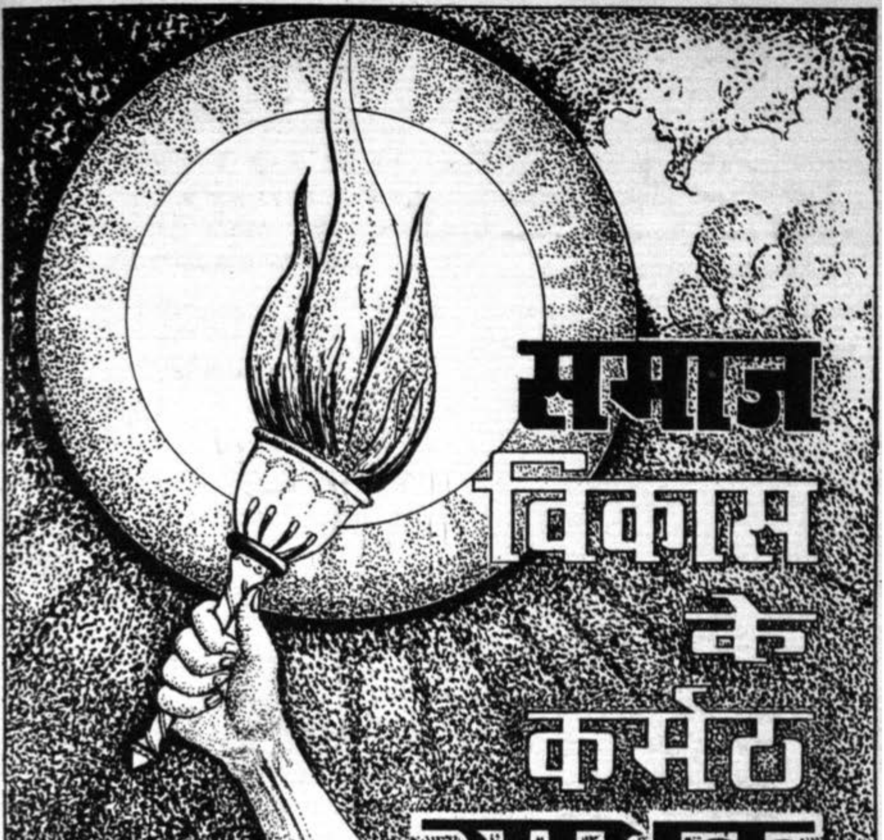
आप का जन्म सैदपुर (गाजीपुर) में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम. ए. तथा बी. एड. की परीक्षा उत्तीर्ण कर आप अध्यापन में संलग्न हैं। सम्प्रति सारस्वत खत्री विद्यालय के आप प्राचार्य हैं।



प्रारम्भ से ही आप राष्ट्रवादी राजनीति के विकास तथा समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान में सक्रिय हैं। आपातकाल के दौरान जनता की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के दमन के विरोध में आप ने सत्याग्रह में भाग लिया और कारावास का दण्ड भी सहन किया। अपनी पुत्री के विवाह के अवसर पर भी आप ने पैरोल पर छूटना स्वीकार नहीं किया था। पश्चिम बंगाल प्रान्त के गत विधान सभा निर्वाचन में बड़ाबाजार क्षेत्र से आप भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार रह चुके हैं।

आप साहित्यानुरागी हैं तथा राष्ट्रवादी साहित्यकारों एवं कवियों के अनेक संगठनों से सम्बद्ध हैं। आप ओजस्वी वक्ता तथा प्रबुद्ध लेखक हैं। छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु आप सतत् प्रयत्नशील हैं।

आप प्रबुद्ध राष्ट्रसेवी एवं संघर्षशील बुद्धिजीवी हैं। ●



बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता – स्मरण और अभिनन्दन ग्रंथ

स्व. छाजूराम चौधरी

आप का जन्म अलखपुरा (भिवानी) के साधारण कृषक जाट परिवार में १८६२ ई० में हुआ। एण्ट्रेंस पास कर आप कलकत्ता आ गए। जीवकोपार्जन हेतु पहिले



ट्यूशन, फिर बट्टा का काम, शेयर बाजार, पाट की दलाली और शेष में बोरों की दलाली की। प्रथम महायुद्ध का समय होने के कारण आप को व्यवसाय में बहुत घट-बढ़ देखनी पड़ी पर धैर्य एवं विवेक से आपने अपार धन अर्जित किया।

प्रकृति से आप उदार थे एवं आस्था में श्रद्धालु आर्यसमाजी। शायद ही कोई ऐसी आर्य समाजी संस्था हो जिसे आपने दान न दिया हो। कलकत्ते में आर्य समाज की स्थापना में आप ने तन-मन-धन से सहयोग दिया। १९ विधान सरणी (कार्नवालिस स्ट्रीट) स्थित आर्य समाज भवन आप के दान से ही बना। आर्य कन्या महाविद्यालय के भवन निर्माण के लिए आप ने ५०,०००) दिये। आपके साथ ही जुगलकिशोर बिड़ला एवं जयनारायण पोद्दार ने भी पच्चीस-पच्चीस हजार रुपये तदर्थ दिये।

हिसार में डी. ए. वी. कालेज को पहिले १ लाख रुपये दिए फिर २ लाख रुपये और लगा कर अपने नाम का छात्रावास भी बनवा दिया। रोहतक में जाट हाईस्कूल के लिए १ लाख रुपये दिए। हिसार में जाट हाईस्कूल और छात्रावास के लिए ४ लाख रुपये दान दिए। अपनी पुत्री कमला के नाम पर ५ लाख रुपये लगा कर भिवानी में महिला अस्पताल खोला। भिवानी में ही ५० हजार रुपये लगा कर पानीकल बनवाया।

१८९९ ई० में जब देशव्यापी अकाल पड़ा, तब आप ने २ लाख रुपये अकाल-राहत कार्यों में लगाये।

आप की सार्वजनिक कार्यों में दानशीलता से प्रसन्न हो सरकार ने आपको पहिले 'सी. आई. ई.' और फिर १९२८ ई० में 'सर' की उपाधि से सम्मानित किया। पंजाब कौंसिल के भी आप सदस्य रहे। अपनी दानशूरता के लिए आप हमेशा चिरस्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. विश्वेश्वर लाल हलवासिया

आप का जन्म भिवानी (हरियाणा) में १८७० ई० में हुआ। आपके पिता जानकीदास हलवासिया थे। केवल अष्टम कक्षा तक अध्ययन कर जीवकोपार्जन हेतु आपको कलकत्ता आना पड़ा। हेसियन की दलाली



से प्रारंभ कर आप अपने अध्यवसाय से प्रसिद्ध विदेशी फर्मों के बेनियन बने। अपनी व्यवसायिक दूरदर्शिता से आपने अपार सम्पदा अर्जित की।

प्रकृति से आप धर्मपरायण, मितव्ययी,

सरल एवं सहृदय थे। गोशाला, पाठशाला, अस्पताल आदि सार्वजनिक संस्थाओं को आप मुक्त-हस्त दान देते थे। १९०९ ई० में अपने पिता की स्मृति में हावड़ा में आपने 'डिसपेन्सरी' खोली जिसका उद्घाटन स्वयं बंगाल के छोटे लाट ने किया। कलकत्ते में श्राद्ध घाट एवं मन्दिर (तुलापट्टी में), वृन्दावन में मन्दिर और धर्मशाला, भुवनेश्वर में धर्मशाला आदि का निर्माण आपकी सतत् कर्मठता एवं दानशीलता का परिचायक है। सनातन धर्म महामण्डल के वरिष्ठ संरक्षकों में आप थे। १९१३ ई० में अंग्रेज सरकार ने 'राय बहादुर' की उपाधि से आपको अलंकृत किया। १९१५ ई० में मारवाड़ी एसोसियेशन के आप अध्यक्ष निर्वाचित हुए। यद्यपि सामाजिक कार्यों में आप तत्कालीन परम्परा-वादियों के साथ थे पर न्यायोचित समाज-सुधार के भी पक्षधर थे। सुप्रसिद्ध 'घी' आन्दोलन में निष्पक्ष जाँच करा कर न्यायपूर्ण व्यवस्था दिलवाने में आप अग्रणी थे।

उद्योग एवं व्यवसाय के क्षेत्र में बैंकों के महत्व को समझते हुए 'मारवाड़ी बैंक' की स्थापना कर अपनी प्रखर व्यावसायिक दूर-दृष्टि का समाज को लाभ दिया।

पं० राधाकृष्ण एवं पं० माधव प्रसाद मिश्र की प्रेरणा से अनेक पुस्तकों के प्रकाशन में आपने आर्थिक सहयोग दिया। १९१६ ई० में कलकत्ता में आयोजित अखिल भारतीय वैष्णव सम्मेलन में भी धार्मिक ग्रन्थों के प्रकाशन का संकल्प आपके साहित्यनुराग का प्रमाण है। तत्कालीन हिन्दी साहित्य के विद्वानों की गोष्ठियाँ आपके यहाँ प्राय: होती रहती थीं।

अपने अन्त समय में वसीयत बना कर अपनी सारी सम्पत्ति दान कर आपने मारवाड़ी समाज के इतिहास में अपना अप्रतिम स्थान बना लिया। आपका निधन १९२५ ई० में हुआ।

स्व. नागरमल मोदी

आप का जन्म मण्डावा (जयपुर) में सं० १९३४ में हुआ। आपके पिता भीमराज मोदी थे। आप का पैतृक व्यवसाय राँची में था, पर फिर कलकत्ते में आकर आपने व्यवसाय बढ़ाया। साथ ही आर्य समाज के विचारों से आप बहुत प्रभावित हुए एवं सार्वजनिक कार्यों में लग गए।



अग्रवाल महासभा एवम् मारवाड़ी सम्मेलन के मंच से विधवा विवाह का समर्थन एवं बाल विवाह व परदा प्रथा का घोर विरोध करने के कारण आप को रूढ़िवादी समाज ने अन्य सहयोगियों सहित जाति-बहिष्कृत कर दिया। पर आप धुन के पक्के थे – अपने पुत्र का न केवल एक विधवा के साथ विवाह कराया वरन् जहाँ भी विवाह में पर्दा हो या बाल विवाह हो, उस विवाह का सहयोगियों सहित बहिष्कार किया। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के संस्थापक सदस्यों में से आप भी एक थे। राँची में सोसाइटी के आरोग्य भवन की स्थापना के लिए आप ने चुन्नीलाल गणपतराय से २६ बीघा जमीन और १ कोठी दिलवाई और स्वयं भी अपने २ बगीचे दिए। अपनी मातृभूमि मण्डावा में भी आप ने एक बड़ी जमीन वहाँ की युवक सभा को प्रदान की, जिस पर आज एक बाल मन्दिर (विद्यालय) चल रहा है।

महात्मा गांधी के आप अनन्य भक्त थे । १६०५ ई० में बंग-भंग आन्दोलन से ही आप स्वाधीनता संघर्ष में सक्रिय भाग लेने लगे । १६२१, १६३०, १६३२ एवं १६४२ ई० के स्वातन्त्र्य आन्दोलनों में भाग लेने के लिए आप को बारम्बार कारावास का वरण करना पड़ा । आप ने खादी पहिनने का व्रत लिया और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार में आगे रहे । १६४६ ई० में बिहार विधान सभा के कांग्रेसी सदस्य के रूप में आप विधायक निर्वाचित हुए ।

स्वातन्त्र्य संघर्ष एवं समाज सुधार के क्षेत्र में आप के विशिष्ट योगदान के लिए कलकत्ता एवं राँची के कार्यकर्त्ताओं ने मिल कर राँची में आप का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया । ८० वर्ष की आयु में जलोदर की बीमारी से आप की इहलीला समाप्त हुई । राँची के भाईयों ने आप की स्मृति में 'नागरमल मोदी सेवा सदन' अस्पताल स्थापित किया है जो कि आप की स्मृति का चिरस्थायी स्तम्भ है । ●

स्व. चैनसुख पाण्ड्या

आप का जन्म १८७६ ई० में हुआ । आप सफल वस्त्र व्यवसायी तो थे ही, अपनी दूरदृष्टि से वस्त्र निर्यातक भी बन गए । प्रकृति से आप कर्मठ, धर्मपरायण, दानवीर



एवं सामाजिक-धार्मिक कार्यों में अभिरुचि रखनेवाले थे ।

श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी कोठी (मधुबन) के नव-निर्माण, कलकत्ते के श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर में चतुर्मुखी प्रतिमा की प्रतिष्ठा एवं श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में चन्द्रप्रभु की मूर्त्ति की स्थापना में आपकी विशेष भूमिका रही । आपकी दानवीरता के कारण दिगम्बर जैन समाज (कलकत्ता) ने आपको 'दानवीर' तथा खण्डेलवाल महासभा (नावां) ने 'जाति रत्न' की पदवी से सम्मानित किया । आप श्री दिगम्बर जैन भवन तथा श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर के ट्रस्टी एवम् श्री बंगाल-बिहार-उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सभापति भी रहे । ●

स्व. राम कुमार गोयनका

आप का जन्म अगहन सुदी ५ सम्वत् १६३७ में रानीगंज (बंगाल) में हुआ । आप के पिता सेढमल गोयनका थे । आप की शिक्षा कलकत्ते की गुरुकुल पाठशाला में हुई, पर अंग्रेजी भाषा का व्यावहारिक ज्ञान भी



स्वाध्याय से आपने अर्जित कर लिया । फिर आप कपड़े की चलानी का काम करने लगे ।

सार्वजनिक जीवन का आरम्भ १ जनवरी १६०१ ई० से तब हुआ, जब आप ने समाजसेवा हेतु 'वैश्यमित्र' नामक संस्था स्थापित की । उस समय नीमतल्ला के श्मशान घाट पर बड़ी धाँधली मची हुई थी । राजा

दीनेन्द्र राय और डॉ० कैलाश बोस से वहाँ का निरीक्षण करवा, आप ने ठेकेदारों की मनमानी समाप्त कर सुव्यवस्था कायम करवाई। १९१५ ई० में आप कलकत्ता कारपोरेशन के चुनाव में कौंसिलर चुने गए। फिर १९२४ ई० में ५ नं० वार्ड से निर्विरोध कौंसिलर चुने गए। धांगड़ों ने आप के वार्ड का कूड़ा उठाना बन्द कर दिया, तब आप स्वयं आगे बढ़ कर सफाई में जुट गए और फलस्वरूप जन सहयोग से सम्पूर्ण वार्ड साफ हो गया।

उस समय वस्त्र-व्यवसायी दो वर्गों में विभाजित थे – एक तो वे जो बड़े-बड़े प्रतिष्ठानों से खरीद करते थे और दूसरे वे जो दूकानदारों से वस्त्र खरीद कर चलान करते थे। दूसरे वर्ग को चलानीवाले कहते थे। पहिले वर्गवाले 'मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स' संस्था गठित कर अपनी मनमानी शर्तों पर कारबार करने लगे। तब आप ने चेम्बरवालों की मनमानी रोकने के लिए चलानीवालों का संगठन कर 'मर्चेण्ट कमेटी' की स्थापना की। दोनों संस्थाओं में जम कर संघर्ष हुआ, पर अन्ततः आप की संस्था की सर्वत्र धाक जम गई।

आप का निधन ९३ वर्ष की आयु में १९७३ ई० में हुआ। अन्याय एवं धांधली के विरुद्ध आप का संघर्ष प्रेरणास्पद है। ●

स्व. हनुमान प्रसाद पोद्दार 'भाईजी'

आप का जन्म १७ सितम्बर १८९२ ई० को रतनगढ़ में हुआ। आपके पिता का नाम भीमराज पोद्दार था। यद्यपि आप को किसी पाठशाला में विधिवत शिक्षा नहीं मिली, पर अध्यवसाय से संस्कृत, बंगला, राजस्थानी एवं हिन्दी भाषाओं के साहित्य का गहन अध्ययन किया। मराठी, गुजराती, गुरुमुखी, असमिया आदि भाषाओं का भी आप को व्यावहारिक ज्ञान था।



१३ वर्ष की किशोरावस्था से ही आपने 'स्वदेशी' का व्रत ले खादी पहिनना शुरू कर दिया। आप लोकमान्य तिलक के उग्र राष्ट्रवादी विचारों से विशेष प्रभावित थे। मारवाड़ी सहायता समिति, कलकत्ता (जो कालान्तर में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी बनी) के आप सक्रिय सदस्य थे। इस समिति ने सर्वप्रथम गीता का अनुवाद प्रकाशित करवाया। क्रान्तिकारी एवं विप्लवी कार्यों में संलग्न रहने के कारण आप को सरकार ने राजद्रोह का अपराधी घोषित कर दिया, फलतः यह समिति भी सरकार की आँखों में चढ़ गई एवं आप को इससे विवशतापूर्वक अलग होना पड़ा। १९१६ ई० में सुप्रसिद्ध रोड़ा काण्ड में तीन साथियों सहित आप को कठोर कारावास का दण्ड मिला। पहिले कलकत्ता एवं बाद में शिमलापाल (बांकुड़ा) में आप को २१ माह तक नजरबन्द कर दिया गया एवं फिर बंगाल से निष्कासित कर दिया गया। अतः आप पुनः रतनगढ़ लौट आये। इस दौरान आप की देश-प्रेम एवं समाज-सुधार की भावना ने उत्तरोत्तर विकसित हो अध्यात्म-प्रेम का रूप ले लिया। यहाँ से जमनालाल बजाज के निमन्त्रण पर बम्बई चले गए। वहाँ आप की राजनैतिक एवं सामाजिक गतिविधियाँ पुनः

प्रारम्भ हो गई। वहीं महात्मा गांधी से भी सम्पर्क दृढ़ हुआ।

किन्तु कालान्तर में आप ने राजनीति को त्याग कर समाज सेवा को अपनाया। १९२१ ई० में बम्बई में आप ने अखिल भारतीय मारवाड़ी अग्रवाल सभा की स्थापना की और बाल विवाह, वृद्ध विवाह जैसी कुरीतियों का विरोध, प्रवंचित स्त्रियों का उद्धार तथा दीन-दुखियों की सेवा, शिक्षा प्रचार, आदि सेवा-कार्य प्रारम्भ किये। १९५५ ई० में गोरखपुर में आपने एक मूक-बधिर विद्यालय की स्थापना की। गांधी स्मारक निधि की उत्तर प्रदेश शाखा ने गोरखपुर में कुष्ठ सेवाश्रम की स्थापना के लिए आप से सहयोग माँगा।

बम्बई प्रवास में ही आप का सम्पर्क परम धार्मिक जयदयाल गोयन्दका से हुआ एवं उन्हीं की प्रेरणा से आप ने 'कल्याण' मासिक का सम्पादन स्वीकार कर साहित्य, धर्म एवं संस्कृति की अवर्णनीय सेवा की। गीता-प्रेस के माध्यम से आप ने सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय को सुलभ मूल्य में विश्व के कोने-कोने में पहुँचा दिया एवं सर्वसाधारण के लिए सुलभ कर दिया। कल्याण के विशेषांकों ने तो पत्रकारिता में नया मानदण्ड ही स्थापित कर दिया। आप के सम्पादन काल में कल्याण के २४ विशेषांक प्रकाशित हुए। लगभग २५ हजार पृष्ठों के मौलिक वाङ्मय की आप की रचना में प्रायः दो हजार भक्ति रस पूर्ण पद भी हैं।

गो-रक्षा को आप राष्ट्र-रक्षा ही मानते थे। गौ-रक्षा महाभियान समिति के निर्माण में आप का प्रमुख हाथ था।

आप अत्यन्त निस्पृह एवं सहृदय व्यक्ति थे। आप को सब लोग प्रेम से 'भाईजी' कह कर पुकारते थे। स्वयं के सम्मान या प्रचार से आप कोसों दूर रहते थे। कई बार आपके अभिनन्दन की तैय्यारी की गई, पर मालूम पड़ते ही आपने रुकवा दिया। २२ मार्च १९७१ को आप पार्थिव शरीर को त्याग कर गोलोकवासी हो गए। धार्मिक जगत आपका चिर ऋणी रहेगा।

जीवनदानी सर्वोदयी दाताराम मक्कड़

आप का जन्म १८९२ ई० में हुआ था। १९१८ ई० में जालियांवाला बाग हत्याकांड के आप प्रत्यक्षदर्शी हैं। उसी समय विदेशी शासन के लोमहर्षक अत्याचारों से मर्माहत हो आपने देश सेवा का संकल्प लिया। १९२२ ई० में आप कलकत्ता आ गए। यहाँ पर जीविकोपार्जन हेतु हेसियन बोरे की दलाली करने लगे।

आपने १९५१, १९५३, १९५४ ई० में हुए सर्वोदय सम्मेलनों में भाग लिया। जब सन्त विनोबा के आह्वान पर जयप्रकाश नारायण एवं चारुचन्द्र भण्डारी ने सर्वोदय कार्य के लिए जीवन दान का संकल्प लिया, तब आप भी पीछे न रहे। कलकत्ता लौट कर दलाली बन्द कर घर-घर सर्वोदय साहित्य बेचने का बीड़ा आपने उठाया। उस समय आप के पास ३०,०००) की जमा पूँजी थी, जो दो मित्रों के पास जमा करवा दी। कुछ दिनों बाद दोनों ने ही आपकी रकम मार दी। आचार्य विनोबा को जब यह प्रकरण ज्ञात हुआ, तब उन्होंने लिख भेजा कि आपके सिर का भार हल्का हो गया, अब आप निश्चिन्त होकर अधिक काम कर सकेंगे। तब से आज तक नित्य प्रति ६-७ किलो का बोझ लेकर हिन्दी भाषा-भाषियों के घरों में आप सर्वोदय एवं अन्य स्वस्थ साहित्य बिक्री कर कमीशन से प्राप्त रकम से अपना व पत्नी का जीवन-यापन कर रहे हैं। अपने उच्च पदस्थ इंजीनियर पुत्र के सानुनय अनुरोध पर भी उससे एक पैसा भी नहीं लेते।

ऐसे कर्मठ, दृढ़ संकल्पी एवं सर्वस्व त्यागी व्यक्तियों के यज्ञमय जीवन से ही समाज एवं राष्ट्र का चरित्र-निर्माण संभव है। ●

स्व. ओंकारमल सराफ

आप का जन्म माघ सुदी ९ सं० १९४९ में शेखावाटी (राजस्थान) में हुआ था। आपके पिता मोहनलाल सराफ थे। कलकत्ते के हिन्दू स्कूल में आपकी शिक्षा-दीक्षा हुई।



सामाजिक एवं सार्वजनिक कार्यों में आपका विशेष योगदान रहा। जब आप मात्र २० वर्ष के ही थे, तभी एक दिन क्रॉस स्ट्रीट (सूतापट्टी) में निर्मित हो रही मल्लिक कोठी से एक बड़ा काठ हनुमान बक्स अग्रवाल पर गिर पड़ा और व्यवस्था के अभाव में उस घायल की कोई चिकित्सा न हो सकी। आप इस दुर्घटना के प्रत्यक्षदर्शी थे। आपने तभी दृढ़ संकल्प लिया कि बड़ाबाजार क्षेत्र में चिकित्सा केन्द्र अविलम्ब खोला जाय। जुगल किशोर बिड़ला, किसनलाल पचीसिया, लोकनाथ ढांढनियाँ, लक्ष्मीनारायण मुरोदिया तथा श्रीनारायण महाराज आदि समाज के गणमान्य व्यक्तियों के सामने आपने अपना प्रस्ताव रखा और उन सब के सहयोग से रविवार, २ मार्च १९१३ ई० को तुलापट्टी की जोड़ा कोठी में 'मारवाड़ी सहायक समिति' की स्थापना की। वही संस्था कालांतर में पल्लवित हो आज का सुप्रसिद्ध अस्पताल 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' है।

१९२६ ई० में हिन्दू रिलीफ सोसाइटी, १९५३ ई० में राजस्थान विकास मण्डल, १९६१ ई० में देवालय संरक्षण समिति, श्रीनगर धर्मशाला ट्रस्ट फण्ड आदि के संस्थापकों में आप भी थे। अपने पिता की स्मृति में मोहनलाल चैरिटी ट्रस्ट की आपने स्थापना की।

मारवाड़ी समाज की कुरीतियों एवं कट्टरता के आप विरोधी थे। मारवाड़ी सनातन धर्म (अग्रवाल) के समर्थकों द्वारा जिन ११ विधवा विवाह समर्थकों को जाति बहिष्कृत किया गया उनमें आप भी थे। मंडावा में सनातन धर्म पुस्तकालय के संस्थापकों में आप भी एक थे।

उस समय व्यवसायी समाज को लेन-देन में बड़ी असुविधा होती थी। अतः कई सहयोगियों के साथ कलकत्ता इण्डस्ट्रियल बैंक की आपने स्थापना की। आप मारवाड़ी ट्रेड एसोसियेशन एवं इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स के संस्थापक सदस्यों में थे।

राजनीतिक क्षेत्र में आप सक्रिय रहते थे। अगस्त १९१४ ई० में क्रान्तिकारी आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको नजरबन्द कर दिया गया था।

आपका निधन कलकत्ता में भाद्रपद सुदी ४ संवत् २०२५ तदनुसार २७ अगस्त १९६८ ई० को हुआ। बड़ाबाजार अंचल में चिकित्सा-सेवा संस्थानों के आदि-प्रेरक के रूप में आप सदैव याद किए जायंगे। ●

स्व. तुलसी राम सरावगी

आप का जन्म मंगसिर बदी १४ सम्वत् १९५० में हुआ था। आप गणपतराय सरावगी के पुत्र थे। आप ने मिडिल तक ही स्कूली शिक्षा पाई।



स्वतन्त्रता संघर्ष में आप ने सक्रिय भाग लिया। २२ वर्ष की आयु से ही केवल खद्दर पहिनना शुरू कर दिया। बंगाल कांग्रेस कमेटी के समाज सेवा विभाग के वर्षों तक आप मन्त्री रहे। १९४७ ई० में जब साम्प्रदायिक सौहार्द की स्थापना हेतु महात्मा गांधी नोआखाली गए, तब आप भी उनके साथ गए थे। १९५२ ई० में आप कलकत्ता कारपोरेशन के २३ नं० वार्ड से कौंसिलर चुन लिए गये।

सार्वजनिक कार्यों में आप की विशेष अभिरुचि रही। १९१३ ई० में मारवाड़ी सहायता समिति (अब मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी) के सदस्य के रूप में बर्दवान जिले के बाढ़-पीड़ितों की सेवा की। १९४१-४२ ई० में जब जापान की बमबारी के कारण जल और स्थल सभी मार्गों से बर्मा से शरणार्थियों का अबाध गति से आना प्रारम्भ हुआ, तब आप के संयोजकत्व में सोसाइटी ने केवल कलकत्ता में ही नहीं वरन् मणिपुर, सिलचर और डीमापुर तक सहायता शिविर खोले और एक ऐतिहासिक सेवा कार्य किया। कालान्तर नें आप सोसाइटी के मन्त्री एवं सभापति भी रहे।

समाज सुधार में भी आप की सक्रिय भूमिका रही। आप अखिल भारतवर्षीय अग्रवाल महासभा के महामन्त्री, मारवाड़ी सभा के अध्यक्ष, मारवाड़ी ट्रेड एसोसियेशन के मन्त्री तथा अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे। १९३१ ई० में ही अपने परिवार में 'परदा' की कुप्रथा का अंत कर दिया। आप ने अपने एक पुत्र का अन्तर्जातीय विवाह करवाया और दूसरे का एक विधवा से। दहेज एवं अन्य कुरीतियों के विरुद्ध भी आप सदैव संघर्षशील रहे। 'अग्रवाल' और 'समाजसेवक' पत्रिकाओं का आप ने सम्पादन किया।

इस निस्पृह समाजसेवक की इहलीला १७ दिसम्बर १९५६ ई० को समाप्त हुई। ●

पद्मभूषण सीताराम सेकसरिया

आप का जन्म १ मई १८९३ ई० को हुआ। ९ वर्ष की अल्पायु में ही आपको माता एवं पिता दोनों का ही वियोग सहना पड़ा।



शिक्षा के प्रचार-प्रसार में आपका अमूल्य योगदान रहा है। मात्र १६ वर्ष की किशोरावस्था में ही अपनी जन्मभूमि नवलगढ़ में अपने सहपाठियों के सहयोग से 'श्री विद्या विवर्धन पुस्तकालय' और 'श्री नवलगढ़ विद्यालय' का बीजारोपण आपने किया जो आज भी उस अंचल में ज्ञान के प्रचार-प्रसार में संलग्न हैं। बालिकाओं के शिक्षण हेतु शायद ही कोई महत्वपूर्ण हिन्दी भाषी संस्था, कलकत्ते में हो जिसके आप संस्थापक, सभापति या ट्रस्टी न हों, जैसे – मारवाड़ी बालिका विद्यालय, श्री शिक्षायतन (स्कूल,

कॉलेज एवं छात्रावास), अभिनव भारती, मनोविकास केन्द्र, आदि। वनस्थली विद्यापीठ (जयपुर) एवं हिन्दी भवन (शांतिनिकेतन) भी आपके सत्प्रयासों के मूर्त्त रूप हैं। इसके अतिरिक्त अन्य विभिन्न साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थाओं से भी आप सम्बद्ध रहे, यथा – भारतीय संस्कृति संसद, नागरी प्रचारणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग), गांधी विद्या मंदिर (सरदारशहर)। १६३२ ई० में कृति महिला साहित्यकारों के लिए हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) द्वारा आपने ५००) का सेकसरिया पुरस्कार प्रारंभ करवाया।

आप प्रबल गांधीवादी हैं। महात्मा गांधी के आन्दोलनों के दौरान १६३०, १६३२, १६४० और १६४२ ई० में आप जेल गए। अपनी पत्नी की अत्यधिक रुग्णावस्था में भी आपने पैरोल पर रिहा होने से इन्कार कर दिया।

अपने समकालीन देश के सभी शीर्षस्थ राजनेताओं, पत्रकारों, साहित्यकारों, विद्वानों तथा समाजसेवियों से आपका घनिष्ठ एवं आत्मीय सम्बन्ध रहा है। महात्मा गांधी, तिलक, मदनमोहन मालवीय, जमनालाल बजाज, मोतीलाल नेहरू, सरदार पटेल, पुरुषोत्तम दास टण्डन, रवीन्द्रनाथ टैगोर, निराला, दिनकर, पंत, महादेवी. बच्चन, शिवपूजन सहाय, मुंशी नवजादिक लाल, आदि सभी से आपका गहरा लगाव रहा है।

आप कृति साहित्यकार भी हैं। स्मृति-कण (१६५०), मन की बात (१६५२), बीता युग : नयी याद (१६७०)– आपकी मौलिक एवं संग्रहणीय कृतियाँ हैं।

आपकी विशिष्ट सेवाओं से प्रभावित हो भारत सरकार ने १६६२ ई० में आपको पद्मभूषण से अलंकृत किया। शिक्षा-प्रसार के क्षेत्र में आपकी कर्मठता एवं दृढ़ संकल्प आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रकाश-स्तम्भ है। ●

स्व. बालकृष्ण मोहता

आप का जन्म १६ जनवरी १८६३ ई० को बीकानेर में हुआ। १० वर्ष की अल्पायु में पिता एवं अन्य परिजनों के असामयिक निधन से आप को विषम परिस्थितियों का



सामना करना पड़ा। यद्यपि आप को विधिवत शिक्षा नहीं मिल पाई, फिर भी प्रारम्भ से ही नयी-नयी वस्तुएँ बनाने की आप में विशिष्ट क्षमता रही। स्याही, बुनकर मशीन, बिजली पंखा, ट्यूबवेल, चपड़ा मशीन, छापाखाना, बर्फ कल, कोल्ड स्टोरेज, सेमल रुई की मिल, अम्बर चरखा, लकड़ी का साबुन आदि विभिन्न उद्योग आप ने स्थापित किए। कोल्ड-स्टोरेज का भारत में सर्वप्रथम आरम्भ आप ने ही किया।

१६३१ ई० में आप महात्मा गांधी के भक्त बन गये और खादी पहनना शुरू किया। महात्मा गांधी, कृष्णदास जाजू एवं जमनादास बजाज के साथ डेढ़ वर्ष तक वर्धा में रहे। फिर कलकत्ता लौट कर मारवाड़ी बालिका विद्यालय का कार्यभार सम्भाला। आप के सत्प्रयासों से १६४१ ई० में माहेश्वरी बालिका विद्यालय का निर्माण हुआ। इसकी एक शाखा बीकानेर में भी खोली गई। १६२५ ई० से 'माहेश्वरी सभा' का कार्य सम्भाला। १६४१, १६४३ व १६४७ ई० में आप इसके मन्त्री रहे। अखिल भारत-

वर्षीय माहेश्वरी सभा के भी कुछ समय तक अध्यक्ष एवं मन्त्री रहे। १९४३ ई० में बीकानेर में रामगोपाल मोहता के सहयोग से पुस्तकालय खोले। १९३० ई० से ही आप आर्य समाजी हो गए। कलकत्ता आर्य समाज के मन्त्री भी रहे। स्वतन्त्रता-संघर्ष के स्वदेशी आन्दोलन में आप अत्यन्त सक्रिय रहे, आप की पत्नी भी अनेक महिलाओं के साथ जेल गई।

समाज सुधार के आप प्रबल पक्षधर थे। श्राद्ध, मृत्यु भोज, बाल विवाह, दहेज, परदा आदि कुप्रथाओं के आप घोर विरोधी थे। अन्तर्जातीय विवाह एवं विधवा विवाह के आप प्रबल समर्थक थे। सुधार का प्रारम्भ आप अपने घर से ही करते थे। अपनी माँ व दादी की मृत्यु पर किसी प्रकार के रीति-रिवाज या रस्म की अदायगी आप ने नहीं की। अपने लड़के का अग्रवालों में सम्बन्ध कर माहेश्वरी और अग्रवालों में अन्तर्जातीय विवाह प्रारम्भ किए। पद्मराज जैन के साथ १९३२ से १९५५ ई० तक हिन्दू अबला आश्रम में उपमन्त्री के रूप में अबलाओं और विधवाओं का उद्धार किया। १९५६ ई० में अपने बड़े पौत्र का विवाह विधवा अग्रवाल कन्या के साथ किया। दहेज एवं परदा प्रथा हटाने का काम भी अपने ही घर से शुरू किया। आप ने अनेक लेख भी लिखे।

१९६२ ई० से सार्वजनिक जीवन से सन्यास ले आप रांची में रहने लगे। ११ जुलाई १९६७ ई० की रात्रि को सुषुप्तावस्था में ही कुछ नीचों ने आप की सेवक सहित हत्या कर दी। समाज सुधार के क्षेत्र में आप का चरित्र युवकों के लिए सदा प्रेरणा का स्रोत रहेगा। •

स्व. रघुमल खण्डेलवाल

आप का जन्म १८७४ ई० में हुआ था। आप के पिता लाला बुधसिंह दिल्ली में लौह व्यवसायी थे। तरुणावस्था में ही परिजनों की असामयिक मृत्यु से आप को भारी आघात लगा और आप कलकत्ता आ गये। १९१३ ई० में 'माधोराम हरदेवदास' फर्म की आप ने यहाँ स्थापना की। प्रथम विश्वयुद्ध के कुछ पूर्व ही आप टाटा संगठन के सम्पर्क में आये और विश्वयुद्ध के अन्त तक आप के फर्म की शाखाएँ बम्बई, कराची और कानपुर में भी खुल गयीं तथा आप की गणना देश के प्रमुख व्यापारियों में होने लगी।



आप का परिवार यद्यपि परम्परावादी था, पर स्व-संस्कृति के प्रति अगाध प्रेम के कारण आप स्वामी श्रद्धानन्द के अनन्य भक्त हो गये। आर्य समाज द्वारा संचालित विभिन्न सार्वजनिक संस्थाओं के साथ ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं रामजस कॉलेज (दिल्ली) को भी आप ने मुक्त-हस्त दान दिया। स्वातन्त्र्य संघर्ष के दौरान चाँदनी चौक (दिल्ली) में हुए गोली काण्ड के शहीदों की स्मृति में 'माधोराम शहीद हॉल' बनवाने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द को आप ने १ लाख रुपये दिये। अकाल, बाढ़ आदि दैवी प्रकोपों एवं साम्प्रदायिक संघर्षों में पीड़ित जनों के लिए राहत कार्यों में आप न केवल धन से मुक्त-हस्त सहायता करते थे वरन् स्वयं भी निर्भीकतापूर्वक प्रभावित क्षेत्रों में जाकर पीड़ितों की सेवा करते थे।

अपने जातीय उत्थान के लिए 'खण्डेलवाल महासभा की स्थापना का श्रेय भी आप को ही है।

१९२६ ई० में जब आप सांघातिक रूप से बीमार पड़े, तब आप ने अपनी विशाल सम्पत्ति के अधिकांश अंश का 'रघुमल चैरिटी ट्रस्ट' के नाम से वसीयतनामा कर दिया। आज इस ट्रस्ट के अन्तर्गत कलकत्ते में रघुमल आर्य कन्या विद्यालय, रघुमल प्राइमरी स्कूल, रघुमल वैदिक पुस्तकालय, रघुमल आर्य विद्यालय एवं दिल्ली में रघुमल आर्य कन्या विद्यालय, रघुमल प्राइमरी स्कूल आदि शैक्षणिक संस्थाएँ चल रही हैं। इन संस्थाओं में अपनी संस्कृति एवं परम्परा के अनुसार छात्र - छात्राओं के बौद्धिक विकास एवं चरित्र - निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

आप सफल व्यवसायी एवं उदात्त दानी थे। अपनी सदाशयता के लिए आप सदा सुविख्यात रहेंगे। ●

स्व. लाला सखीचन्द जैन

आप का जन्म १८७९ ई० में हुआ था। बी. ए. की डिग्री लेने के बाद सरकारी सेवा में जिस योग्यता और कुशलता से आप ने अपने दायित्व का निर्वाह किया, उससे



प्रभावित होकर भारत सरकार ने आप को 'रायबहादुर' की उपाधि से विभूषित किया तथा 'कैसरे हिन्द' गोल्ड मेडल भी प्रदान किया।

सरकारी सेवा में रहते हुए भी सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में आप का योगदान प्रशंसनीय रहा। देश के प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ जगन्नाथपुरी मन्दिर के जब आप सुपरिटेंडेंट थे, तब उसमें लाखों रुपये लगवा कर उसकी मरम्मत करवाई, साथ ही वहाँ पर अनाथालय, कुष्ठाश्रम, पाठशाला, औषधालय आदि की स्थापना आप के ही प्रयत्नों का द्योतक है। उड़ीसा के अकाल के समय आप ने हर सम्भव राहत कार्य तो किया ही, जनता को भी प्रेरित कर पीड़ितों की सहायता के लिए काफी धन लगवाया। पटना, आरा एवं दरभंगा के अपने सेवाकाल में भी आप ने वहाँ स्थान - स्थान पर अनाथालय की स्थापना करवायी। पटना में आप डिप्टी इन्सपेक्टर जनरल आफ पुलिस पद पर भी रहे। राजगृह में आप ने जैन धर्मशाला एवं मिडिल स्कूल की स्थापना की। कलकत्ता के दक्षिणेश्वर काली मन्दिर की मरम्मत भी आप के द्वारा करवाई गई। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की कार्य - समिति के सदस्य के रूप में आप ने स्थानीय जनता की भी काफी सेवा की। शान्ति - निकेतन (विश्व भारती) के आप आजीवन सदस्य रहे।

अग्रवाल समाज ही नहीं वरन् अन्य समाजों से भी आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध थे। आप के धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों से प्रेरित होकर 'भारत धर्म महामण्डल' की ओर से 'बिहार भूषण' और 'दयानिधि' की उपाधि देकर आप को सम्मानित किया गया।

सरकारी सेवा में रहते हुए आप ने जिस मनोयोग से धार्मिक एवं सामाजिक सेवाएँ कीं, वह वर्त्तमान में हम सब के लिए प्रेरणादायक रहेगी। ●

स्व. दौलतराम चोखानी

आप का जन्म कलकत्ते के लब्धप्रतिष्ठ चोखानी परिवार में हुआ था। आप के बड़े भाई हरमुखराय चोखानी का मारवाड़ी एसोसियेशन एवं श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान था। अपने अग्रज के निधन के पश्चात् मारवाड़ी एसोसियेशन एवं श्री विशुद्धानन्द



सरस्वती विद्यालय के सर्वांगीण विकास के लिए आप ने बहुत लगन एवं परिश्रम से काम किया। ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना में भी आप का सक्रिय सहयोग था। रायबहादुर भगवानदास बागला अस्पताल की स्थापना काल से ही उसकी संचालक समिति के वरिष्ठ सदस्य के रूप में आप पीड़ितों की लगातार २७ वर्षों तक सेवा करते रहे। अग्रवाल पंचायत के आप सम्माननीय सदस्य थे एवं आप के निर्णय सर्वमान्य होते थे।

सं० १९८३ में आप गोलोकवासी हुए। सामाजिक उत्थान में आप की भूमिका स्मरणीय रहेगी। •

स्व. गणेशप्रसाद माहेश्वरी

माहेश्वरी समाज के बहुचर्चित 'सिह-पंचायती' विवाद के समय आप की सामाजिक भूमिका प्रारम्भ हुई, जिसे सुलझाने में आप को काफी ख्याति मिली। समाज सुधार आन्दोलनों में आप सदा आगे रहते थे। आप पर्दा प्रथा के विरोधी एवं महिला शिक्षा के समर्थक थे। छुआछूत एवं जातिभेद के भी विरोधी थे। विभिन्न समाचार-पत्रों में समाज-सुधार सम्बन्धी आप के लेख प्रकाशित होते रहते थे। माहेश्वरी बालिका विद्यालय की स्थापना में बालकृष्ण मोहता को आप का पूर्ण सहयोग मिला। आप की पत्नी ब्रज कुंवर माहेश्वरी इस विद्यालय की मन्त्री थीं एवं आप उपमन्त्री। (उस समय इस संस्था में ऐसी व्यवस्था थी कि कार्यकारिणी में पति-पत्नी दोनों ही को रखा जायेगा)



ओंकार मल सराफ के साथ जसीडीह आरोग्य भवन के संचालन में आप ने बहुत काम किये। आप का प्रमुख काम सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को तैयार करना था। आप ने कार्यकर्त्ताओं के लिए एक फार्म छपाया था, जिसमें प्रत्येक कार्यकर्त्ता अपने सामाजिक कार्यों का दैनन्दिन विवरण देता था कि किसी की भलाई की या नहीं, किसी कुप्रथा या रूढ़ि को मिटाने के लिए कुछ किया या नहीं तथा अन्य क्या काम किया? कहते हैं कि माधोदास मूँधड़ा, रामकिशन बागड़ी, दामोदरदास डागा जैसे कर्मनिष्ठ कार्यकर्त्ता आप ही के द्वारा प्रशिक्षित हुए थे।

समाज-सुधारक एवं संगठनकर्त्ता के रूप में आप स्मरणीय रहेंगे। •

पद्मविभूषण
डॉ० घनश्यामदास बिड़ला

आपका जन्म १८६४ ई० (सं० १६५१, रामनवमी) में पिलानी (राजस्थान) में हुआ। आप राजा बलदेवदास बिड़ला के तृतीय पुत्र हैं। आप की शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई। १६०७ ई० में १३ वर्ष की तरुणावस्था में ही आप कलकत्ता आ गये एवं अपने पैतृक व्यवसाय 'बलदेवदास जुगलकिशोर' फर्म में लग गये। अग्रज जुगलकिशोर बिड़ला ने शीघ्र ही आप के ऊपर व्यवसाय की पूरी जिम्मेदारी डाल दी।



ब्रिटिश काल में भारतीयों को बड़ी ही हेय दृष्टि से देखा जाता था। अंग्रेज व्यापारी भी भारतीय व्यापारियों को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे। अंग्रेजों के सहयोग से गनी और जूट के दलाल के रूप में अपने को स्थापित करने के उद्देश्य से आप को ब्रिटिश व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में जाना पड़ता था। एक दिन काफी लम्बी प्रतीक्षा करवाने के बाद भी एक अंग्रेज व्यापारी आप पर नजर पड़ते ही बरस पड़ा—'निकल जाओ यहाँ से।' इस अपमानजनक घटना ने आप के जीवन को एक ऐतिहासिक मोड़ दिया और आप फिर कभी लौट कर वहाँ नहीं गये। दृढ़ निश्चय एवं विवेकपूर्ण दूरदर्शिता के साथ आप ने देश में उद्योग-धन्धे स्थापित करने की ओर ध्यान दिया और 'बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड' के नाम से अपने व्यवसाय का पुनर्गठन किया। आज 'बिड़ला ब्रदर्स' भारत का अग्रगण्य व्यापारिक एवं औद्योगिक संगठन है, जिसका संचालन आप के कुशल निर्देशन में हो रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दक्षिण-पूर्व एशिया एवं पूर्वी अफ्रीका में इसकी औद्योगिक इकाइयों की स्थापना हो रही है।

आप ने १६२५ ई० में 'इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स' तथा १६२७ ई० में सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर के सहयोग से 'फेडरेशन आफ इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज' (भारतीय वाणिज्य-उद्योग महामण्डल) की स्थापना की। आज भी ये दोनों व्यवसायिक संस्थान भारतीय व्यवसायियों एवं उद्योगपतियों के हितों की रक्षा करने में अग्रणी हैं। आप देश के कई आर्थिक आयोगों के सदस्य रह चुके हैं। देश में व्यापारिक एवं औद्योगिक प्रश्नों पर आप की सम्मति बहुमूल्य समझी जाती है।

१६०७ ई० में जब आप कलकत्ता आये, उस समय राजनीतिक उथल-पुथल मची हुई थी। आप भी उससे अछूते नहीं रहे। अनेक क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में रहने के कारण आप ब्रिटिश सरकार की नजरों में चढ़ गये। १६१७ ई० में जब गिरफ्तारी का वारण्ट जारी हुआ, तब आप भूमिगत हो गये। जब महात्मा गांधी अहिंसात्मक ढंग से दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद एवं जातिभेद के विरुद्ध अपना सत्याग्रह आन्दोलन चला रहे थे, तभी से आप उनके अनन्य प्रशंसक एवं अहिंसा के पक्षपाती बन गये। देश की आजादी के लिए जब हमारा व्यापारिक वर्ग कुछ सोच भी नहीं पाया था, उस समय आप ने अपनी सेवायें महात्मा गांधी एवं कांग्रेस को अर्पित कीं। आप के बारे में महात्मा गांधी ने कहा

था – 'ईश्वर ने मुझे सुधारनेवालों को दिया है, जिनमें एक घनश्यामदास बिड़ला हैं।' आप के ही राजी किये जाने पर महात्मा गांधी ने १९३१ ई० में लन्दन के द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था।

स्वाधीनता संग्राम के दौरान कांग्रेस को आप लगातार आर्थिक सहयोग देते रहे, साथ ही सत्याग्रहियों को भी समय-समय पर आर्थिक सहायता प्रदान करते रहे। उस समय कलकत्ता, बम्बई और दिल्ली के 'बिड़ला भवन' राष्ट्रीय नेताओं के लिए निवास-स्थान बन गये थे। उत्तर प्रदेश के बलिया क्षेत्र से १९२७ ई० में आप ने चुनाव भी लड़ा तथा महामना पं० मदनमोहन मालवीय के आशीर्वाद एवं सक्रिय सहयोग के फलस्वरूप अपने प्रतिद्वन्दी श्रीप्रकाश जैसे विद्वान को पराजित किया था। किन्तु जब १९३० ई० में विधान सभा में भारतीय व्यवसायियों एवं उद्योगपतियों की उपेक्षा होने लगी, तब आप यह बर्दाश्त न कर सके और सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया।

हरिजनों के प्रति आप का हृदय विशेष रूप से दयार्द्र है। पूना पैक्ट के समय महात्मा गांधी ने आप को 'हरिजन सेवक संघ' का अध्यक्ष बनाया। त्रावणकोर के प्रसिद्ध 'पद्मनाथ मन्दिर' में हरिजनों का प्रवेश कराने के लिए त्रावणकोर की महारानी एवं उनके तत्कालीन दीवान सी० पी० रामास्वामी को आप ने ही राजी किया था।

मात्र २२ वर्ष की अवस्था में ही १९१६ ई० में आप 'मारवाड़ी सहायक समिति' (सम्प्रति मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी) के मन्त्री निर्वाचित हुए। अपने मन्त्रित्व काल में आप ने बड़ी ही लगन एवं दूरदर्शिता से समिति की सेवा के साथ-साथ समाज की भी सेवा की। सामाजिक रूढ़ियों एवं विषमताओं को समाप्त करने के लिए आप सामाजिक क्रान्ति के समर्थक हैं। अन्तर्जातीय विवाह एवं विधवा विवाह के आप सक्रिय समर्थक हैं। अपने अग्रज रामेश्वरदास बिड़ला की प्रथम पत्नी का देहान्त हो जाने पर आप ने उनका विवाह माहेश्वरी जाति की ही अन्य शाखा 'कोलवार' में करवाया, फलतः माहेश्वरी समाज के कोपभाजन बने।

आप ने धन के भोग से दान को अधिक महत्व दिया है – 'तेन त्यक्तेन भुंजिथाः'। आप उन 'भामाशाहों' की परम्परा में हैं जिन्होंने अपने देश, समाज एवं जाति के उन्नयन के लिए अपनी अर्जित सम्पत्ति अर्पित कर दी। अनेकों विद्यालयों, महाविद्यालयों, मन्दिरों, अस्पतालों आदि का संचालन आप के ही आर्थिक सहयोग से होता है। आपने लन्दन के 'बेल साइज पार्क' (एन० डब्लू० ३) में 'बिड़ला आर्य समाज मन्दिर' का निर्माण करवाया है। देश के प्रायः सभी तीर्थ-स्थलों पर आप ने मन्दिर, धर्मशाला एवं उपचार गृहों का निर्माण करवाया है। आप के द्वारा स्थापित पिलानी, रेणुकूट, कल्याण और नागदा के मन्दिर भारतीय स्थापत्य कला के भव्य स्मारक हैं।

आप ने 'बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट' की स्थापना की, जिसके अन्तर्गत शुद्ध अकादमी से लेकर उच्च तकनीकी स्तर तक के शिक्षण संस्थानों की स्थापना की गयी है। पिलानी (राजस्थान) को तो आप ने शिक्षा-तीर्थ ही बना दिया है। आप ने वहाँ पर 'बिड़ला इण्टरमीडियेट' कॉलिज की स्थापना की है। आप के अनुदान से ही कई अन्य शिक्षण-संस्थाएँ चल रही हैं।

आप ने १९२०-२१ ई० में कलकत्ता के वणिक प्रेस से 'अग्रसर' साप्ताहिक-पत्र का प्रकाशन रामकुमार भुवालका के संरक्षण में कराया। १९२५ ई० में आप ने अंग्रेजी में 'इम्पायर' एवं 'बंगाली' – दैनिक पत्रों का प्रकाशन भी करवाया। 'इम्पायर के

संपादक सुप्रसिद्ध सुरेन्द्रनाथ बनर्जी थे।

आप राजस्थानी भाषा के बड़े प्रेमी हैं। पं० सूर्यकरण पारीक एवं जुगल खींची से राजस्थानी भाषा में कई ग्रन्थ लिखवाये। राजस्थानी लोक साहित्य का संग्रह कराया, जो आज भी बिड़ला सेन्ट्रल लाइब्रेरी (पिलानी) में सुरक्षित है। आप की ही प्रेरणा से डा० कन्हैयालाल सहल राजस्थानी पत्रिका 'मरु भारती' प्रकाशित कर रहे हैं। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार समिति एवं सस्ता साहित्य मण्डल की स्थापना में आप की विशेष भूमिका रही है। उपनिषदों, पुराणों, महाभारत आदि महाकाव्यों में से नवनीत निकालने में आप को आनन्द आता है। गवेषणा की धारा में अवगाहन करते हुए तर्क एवं श्रद्धा के बीच समन्वय स्थापित करने का आप का प्रयत्न रहता है। आप ने स्वयं भी कई पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें प्रमुख हैं – बापू, पैसा, रुपये की कहानी, डायरी के कुछ पन्ने, वे दिन, कुछ देखा कुछ सुना, ध्रुवोपाख्यान, रूप और स्वरूप, गंगोत्तरी और यमुनोत्तरी, आदि।

आप के व्यक्तित्व में कर्म, ज्ञान और भक्ति का समन्वित साक्षात्कार होता है। आप व्यक्ति नहीं वरन् स्वयं में एक संस्था हैं। भारत सरकार ने आप को 'पद्म विभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया है। ●

स्व. भागीरथ कानोड़िया



आप का जन्म २५ जनवरी १८९५ ई० में मुकुन्दगढ़ (राजस्थान) में हुआ। १५ वर्ष की अल्पायु में ही आप बिड़लाओं के यहाँ कलकत्ता चले आए। हैसियन के निर्यात से व्यवसाय आरंभ किया। फिर पाट निर्यात में सर्वोपरि 'रैले कम्पनी' से लोहा ले पाट का निर्यात भी आपने सफलतापूर्वक किया। काल-क्रम से एक बड़े उद्योगपति के रूप में प्रतिष्ठित हो आपने विपुल धनोपार्जन किया।

आप महात्मा गांधी के निष्ठावान अनुयायी थे। १९४२ ई० के 'भारत छोड़ो' आन्दोलन में आप जेल भी गए, पर आजादी के बाद राजनीति से सन्यास ले लिया। खादी के प्रति आपका असीम अनुराग था – शुद्ध खादी भण्डार की स्थापना में आपका भी सहयोग रहा। हरिजन सेवा कार्यों में आप की विशेष रुचि थी। राजस्थान हरिजन सेवक संघ के आप अध्यक्ष रहे। हरिजन बस्तियों में जा कर सेवा कार्यों को आप स्वयं तो करते ही थे, साथ ही अन्य को भी प्रेरित करते थे। १९४३ ई० में बंगाल के अकाल के समय आपने राहत कार्यों का सराहनीय संचालन किया। सारे देश से ४० लाख रुपये एकत्र कर गाँव-गाँव में लंगर खोल दिये। आजादी के बाद राजस्थान में जब भयावह पेय जल संकट उत्पन्न हुआ, तब तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया ने आप को ही साग्रह जल व्यवस्था बोर्ड का अध्यक्ष बनाया। गाँव-गाँव घूम कर अथक परिश्रम से आपने स्थिति को सुधारा। कलकत्ता में मातृ सेवा सदन और सीकर में टी. बी. सेनेटोरियम के लिए भी आपने महत्वपूर्ण भूमिका निबाही।

शिक्षा के क्षेत्र में आपका स्मरणीय योगदान रहा। १६ वर्ष की अल्पायु में ही अपने गाँव मुकुन्दगढ़ में आपने पुस्तकालय खोला।

तत्पश्चात् मारवाड़ी बालिका विद्यालय, श्री-शिक्षायतन, अभिनव भारती, भारतीय संस्कृति संसद, तुलसी लाइब्रेरी आदि मूर्धन्य हिन्दी भाषी संस्थाओं की कलकत्ता महानगरी में स्थापना में आप अग्रणी रहे पर किसी भी संस्था के साथ जुड़े नहीं। पं० हीरालाल शास्त्री की प्रसिद्ध संस्था 'वनस्थली विद्यापीठ' (राजस्थान) के आप सहायक थे। 'सस्ता साहित्य मण्डल' का वर्षों तक आपने सभापति पद से मार्ग दर्शन किया।

स्वयं भी कृति साहित्यकार थे। राजस्थानी साहित्य को आप की विशिष्ट भेंट हैं – 'बहता पानी निर्मला' और गोविन्द अग्रवाल के साथ प्रकाशित 'राजस्थानी कहावतों का कोष'। शांति निकेतन में हिन्दी भवन की स्थापना एवं पं० पद्मसिंह शर्मा की स्मृति पर विशेष अंक निकलवाने में आप का योगदान रहा। आप साहित्यकारों एवं पत्रकारों का विशेष सम्मान करते थे एवं यथासंभव उनकी सहायता भी करते थे।

समाज सुधार के आप प्रबल पक्षधर थे। विधवा विवाह के समर्थन में आन्दोलन के आप अगुआ थे। १९२६ ई० में मारवाड़ी समाज में पहिला विधवा विवाह कराने हेतु तत्कालीन रूढ़िवादी पृष्ठपोषकों ने आपको १० मित्रों सहित जाति बहिष्कृत कर दिया।

आपका निधन २९ अक्टूबर १९७९ ई० को कलकत्ता में हो गया। पर दु:ख कातरता, विनम्र मूक सेवा, लोक संस्कृति एवं स्वदेश के प्रति आपकी निष्ठा वर्त्तमान की युवा पीढ़ी का सदैव मार्ग दर्शन करेगी। •

स्व. ईश्वर दास जालान

आप का जन्म ३० मार्च १८९५ ई० को मुजफ्फरपुर में हुआ। आप के पिता गौरीदत्त जालान थे। १९१४ ई० में बी. ए. पास कर आप उच्च शिक्षा हेतु कलकत्ता आ गए। यह स्मरणीय है कि उस समय कलकत्ता विश्वविद्यालय के अन्तर्गत बंगाल,



बिहार, मध्यप्रदेश और उड़ीसा प्रान्त आते थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम. ए. (राजनीति शास्त्र) में आप ने समस्त छात्रों में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। डिप्टी कलेक्टरशिप का सरकारी प्रस्ताव अस्वीकार कर आप अध्ययन में लगे रहे और कालान्तर में कलकत्ता उच्च न्यायालय के ख्याति-प्राप्त सालीसिटर बने। हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं पर आप का विशेष अधिकार था। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की 'सरस्वती' पत्रिका में आप के कई महत्वपूर्ण लेख छपे।

सामाजिक क्षेत्र में आप की विशेष रुचि रही। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना में आप का प्रमुख योगदान था। आप ने स्वयं कभी कोई पद नहीं लिया, पर साथियों को पदाधिकारी बनवा कर सदा प्रोत्साहित किया।

राजनीति में अपनी गौरवपूर्ण भूमिका से आप ने बड़ाबाजार क्षेत्र की विशेष सेवा की। आजादी के बाद जब डॉ० प्रफुल्ल चन्द्र घोष के नेतृत्व में प० बंगाल में प्रथम कांग्रेसी मन्त्रि-मण्डल गठित हुआ, तब आप विधान-सभा के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। अध्यक्ष के रूप में आपकी भूमिका प्रशंसनीय एवं गौरवपूर्ण रही। स्वयं

तत्कालीन विरोधी दल के नेता ज्योति बसु (सम्प्रति मुख्य मन्त्री) ने आप की निष्पक्षता की भूरि-भूरि सराहना की है। उसी समय लन्दन में आयोजित हुए राष्ट्रमण्डलीय देशों के विधान सभाध्यक्षों के सम्मेलन में आप ने अंग्रेजी में ऐसा धारा-प्रवाह एवं प्रभावशाली भाषण दिया कि सब को आप के विधि-विधान के ज्ञान की बहुत प्रशंसा करनी पड़ी और बाद में वह भाषण पुस्तिकाकार रूप में प्रकाशित भी हुआ। तत्पश्चात् १५ वर्षों तक लगातार आप पश्चिम बंगाल मन्त्रिमंडल में मन्त्री रहे। स्वायत्त मन्त्री के रूप में नगर-निगमों के लिए आप ने नया कानून बनवाया और उनके पार्षदों को भी अधिक अधिकार दिलवाये।

दीर्घ रुग्णावस्था के पश्चात् आप का निधन १९८० ई० में कलकत्ता में हुआ। आप का दीर्घकालीन राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन निष्कलंक रहा। •

स्व. जुहारमल खेमका

आप अग्रवाल समाज के कर्मठ एवं सर्वमान्य कार्यकर्ता थे। अग्रवाल पंचायती में आप का बड़ा ही सम्मान था। कलकत्ते के श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल (अमहर्स्ट स्ट्रीट) और श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय जैसी विशाल संस्थाओं की स्थापना में आप की विशेष भूमिका रही। इन संस्थाओं की स्थापना में अपने स्नेही मित्रों–रामजीदास बाजोरिया, चिम्मनलाल गनेड़ीवाला, दौलतराम चोखानी आदि के सहयोग से आप ने तीन लाख रुपये एकत्र किये। श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के भवन निर्माणार्थ आप ने पच्चीस हजार रुपये स्वयं भी दिए। आप मारवाड़ी एसोसियेशन और मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स के अध्यक्ष पद पर भी रहे।

सं० १९७९ में आप का निधन हो गया। बड़ाबाजार अंचल में सार्वजनिक संस्थाओं के संस्थापक के रूप में आप स्मरणीय रहेंगे। •

स्व. रामेश्वरलाल नोपानी

आप का जन्म १९०२ ई० में कलकत्ते के लब्ध प्रतिष्ठ नोपानी परिवार में हुआ था। आप की शिक्षा स्नातक स्तर तक हुई थी। फिर आप अपने पैतृक व्यवसाय में लग गये।



महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये स्वाधीनता संग्राम में आप ने सक्रिय रूप से सहयोग किया। १९४२ ई० में जब महात्मा गांधी ने 'करो या मरो' का नारा दिया, तब राधाकृष्ण नेवटिया एवं भालचन्द्र शर्मा द्वारा सम्पादित पत्रिका 'करो या मरो' के प्रकाशन का पूरा खर्च आप ही वहन करते थे।

प्रकृति से आप धर्मपरायण, मृदुभाषी एवं विनम्र थे। अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध रहे। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के आप सक्रिय सदस्य थे। शैक्षणिक संस्थाओं, जैसे विकास विद्यालय (राँची) एवं कलकत्ते की सुप्रसिद्ध शिक्षण संस्था श्री दौलतराम नोपानी विद्यालय के संस्थापकों में आप भी थे।

सुप्रसिद्ध औद्योगिक संस्थानों–दौलतराम रावतमल एवं दौलतराम रामेश्वरलाल के

संस्थापकों में आप भी थे। भारतीय चीनी मिल संघ एवं विभिन्न चेम्बरों में आप पदाधिकारी एवं अखिल भारतीय वाणिज्य उद्योग महामण्डल (फिक्की) के अध्यक्ष भी रहे।

अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में आप काशी चले गये एवं वहीं 'मुमुक्ष भवन' के कार्यों की देखभाल करते रहे। १ जुलाई १९८१ ई० को ७९ वर्ष की अवस्था में आप का स्वर्गवास हो गया।

आप लब्धप्रतिष्ठ उद्योगपति एवं विनम्र समाजसेवी के रूप में सदा याद किए जायेंगे।

●

स्व. बलदेवदास सरावगी

आप सुप्रतिष्ठित जूट व्यवसायी एवम् कलकत्ता जूट मिल के स्वत्वाधिकारी थे। आप बड़े दबंग, धर्मपरायण एवं समाजसेवी व्यक्ति थे।

जैन-दर्शन एवं संस्कृति के संरक्षण एवं उन्नयन में आप का सदैव सचेष्ट रहे। आप श्री दिगम्बर जैन युवक समिति के संस्थापकों में थे तथा इसके प्रथम सभापति भी हुए। श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर



के आप ट्रस्टी थे। कार्तिक पूर्णिमा को रथोत्सव के अवसर पर शोभायात्रा के संचालन में आप प्रमुख रूप से भाग लेते थे। आप ने बेलगछिया स्थित श्री दिगम्बर जैन उपवन मन्दिर का जीर्णोद्धार भी कराया।

१९२८ से १९३१ ई० तक मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अध्यक्ष पद से भी आप ने समाज की बहुत सेवा की।

अपने अदम्य उत्साही एवं दृढ़ संकल्पी कर्मठ व्यक्तित्व के लिए आप प्रतिश्रुत रहेंगे।

●

स्व. रामसहाय मल मोर

अपनी दूरदर्शिता, प्रवीणता एवं कुशलता से आप १७ वर्ष की आयु में ही व्यापार एवं उद्योग के क्षेत्र में प्रवेश कर गये एवं अपार सम्पदा अर्जित की। प्रकृति से आप उदार एवं मृदुभाषी व्यक्ति थे।



कलकत्ते की धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध थे। कलकत्ते की शायद ही कोई ऐसी संस्था हो जिसे आपका संरक्षण या सहायता प्राप्त न हो। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्य के रूप में लगभग ६ वर्षों तक आपने काफी सेवा कार्य किये। १९४१-४२ ई० में बर्मा शरणार्थी सेवा उप समितियों के सक्रिय सदस्य के रूप में भी आपने बहुत सेवा कार्य किया। अपने समय के मेधावी नवयुवकों को समाज सेवा के क्षेत्र में कार्य करने के लिए आप प्रेरित भी करते थे।

●

स्व. रामदेव चोखानी

आप का जन्म १८७६ ई० में मण्डावा (राजस्थान) में हुआ था। आपके पिता दौलतराम चोखानी थे। आप की प्राथमिक शिक्षा मण्डावा में ही हुई थी। कलकत्ता आने पर आप पैतृक व्यवसाय में संलग्न हो गये।



आप का व्यक्तित्व बहुमुखी था। आप की सार्वजनिक सेवाएँ वाणी सिद्ध न होकर अनुभूति सिद्ध रही हैं। आपने त्याग-तप-सेवा का व्रत धारण कर अपना पूरा जीवन इसी में अर्पित कर दिया। जिस संस्था को भी अपने सबल हाथों से स्पर्श किया, उसे प्राणवान बना दिया – श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय, श्री विशुद्धानन्द मारवाड़ी अस्पताल, मारवाड़ी एसोसियेशन, आदि संस्थाएँ इसका जीवन्त प्रमाण हैं।

१९२८ ई० में मारवाड़ी समाज – सनातनियों एवं सुधारवादियों, दो भागों में विभक्त था। एक तरह से तनाव पैदा हो गया था और अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का गठन हुआ, तब दोनों गुटों के बीच सेतु बनने के लिए आपने अध्यक्ष बनना स्वीकार कर लिया। स्वयं सुधारवादी होने पर भी जो परम्परावादी एवं रूढ़ि-ग्रस्त थे, उनका आप अपमान भी नहीं करना चाहते थे। बाल विवाह, अनमेल विवाह, पर्दा-प्रथा, मृतक भोज, समुद्र यात्रा निषेध, आदि जर्जर रूढ़ियों को दूर करने के लिए आपने सशक्त अभियान चला कर समाज में जागरण पैदा किया। साथ ही अपने घर से ही इन सुधारों पर अमल भी शुरु कर दिया। १९३५ ई० में तो आपको 'सुधारवादी' का विशेषण ही दे दिया गया।

आपने लार्ड हार्डिंग्ज से मुलाकात की थी एवं आप बंगाल के गवर्नरों को भी परामर्श दिया करते थे। महामना पं० मदनमोहन मालवीय, दीनबन्धु एण्ड्रूज एवं विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के कार्यों में आपने सेवा-भाव से सहयोग किया। हिन्दी साहित्यकारों में बालमुकुन्द गुप्त, पं० माधव मिश्र, पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल प्रभृति विद्वानों से आपका आत्मीय सम्बन्ध बना रहा।

६ जुलाई १९५८ ई० को आपका अभिनन्दन किया जानेवाला था और इस सम्बन्ध में सारी तैयारियाँ की जा चुकी थीं, पर १७ जून को ही आप सहसा रुग्ण हो गये एवं १९ जून को रात्रि में ८० वर्ष की आयु में आपका निधन हो गया।

समाज सेवी एवं सुधारक के रूप में आपकी भूमिका सदैव स्तुत्य रहेगी। •

स्व. मोतीलाल हलवासिया

आप का जन्म १८८३ ई० में हुआ था। आप जानकीदास हलवासिया के कनिष्ठ पुत्र थे। आठवीं कक्षा तक अध्ययन कर आप अपने अग्रज विश्वेश्वरलाल हलवासिया के पास कलकत्ता आ गए और उनके द्वारा स्थापित हैसियन के कारबार में हाथ बँटाने लगे। अमृतसर, आगरा, कलकत्ता तथा सुदूर दक्षिण तक फैले व्यावसायिक एवं औद्योगिक संगठनों की देख-रेख एवं संचालन का भार सँभालते हुए भी आप समाज सेवा में जीवन पर्यंत लगे रहे। आपकी साहित्यिक



रुचि• के कारण आपका घर साहित्यिक गोष्ठियों का केन्द्र हो गया था, साथ ही अग्रज विश्वेश्वरलाल हलवासिया की साहित्य-संरक्षण की योजनाओं के पीछे आपकी प्रेरणा ही काम करती थी।

आपकी सौजन्यता एवं विवेक चातुर्य से प्रभावित होकर बंगाल की तत्कालीन प्रान्तीय सरकार ने आपको हावड़ा का 'मान्य न्यायाधीश' नियुक्त किया।

३९ वर्ष की अल्पायु में ही १९२५ ई० में आपका निधन हो गया। ●

स्व. महादेव लाल डालमिया

आप अत्यन्त सेवाभावी एवं कर्मनिष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के सहायक मंत्री पद पर १९१८



ई० से १९२५ ई० तक आपने अदम्य उत्साह एवं दृढ़ निष्ठा के साथ पीड़ित जनता की हर प्रकार से सेवा की। जुलाई १९२४ ई० में जब मानसून के आक्रोश से सम्पूर्ण दक्षिणी मालाबार क्षेत्र में बाढ़ का भयंकर प्रकोप आया, तब संयोगवश आप मद्रास में ही थे। रामनाथ गोयनका के सहयोग से आपने तत्काल राहत कार्य आरंभ कर दिये। साथ ही आपने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, मद्रास सरकार एवं वहाँ के प्रमुख नेताओं को स्थिति की भयावहता से अवगत कराया एवं सुचारु रूप से ग्राम-ग्राम तक में पीड़ितों को मदद पहुँचाई। ●

स्व. नृपेन्द्र कुमार जैन

आप का जन्म १९०१ ई० में बुन्देलखंड के सागर जिलान्तर्गत देवरी ग्राम में हुआ था। आप सिंघई मूलचन्द जैन के चतुर्थ पुत्र



थे। आपकी शिक्षा-दीक्षा 'ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम' (हस्तिनापुर) में संत विद्वान महात्मा भगवानदीन के सानिध्य में हुई। फिर आप जीवकोपार्जन हेतु कलकत्ता आ गए।

प्रकृति से ही आप सहृदय, परोपकारी एवं धर्म-परायण थे। जैन धर्म के ग्रन्थ एवं चित्र अल्प मूल्य में ही सर्वसुलभ हों, एतदर्थ आपने 'जैन पुस्तक भवन' की स्थापना की और सकड़ों शास्त्र, कथा-संग्रह, पूजन आदि सम्बन्धी ग्रन्थ एवं चित्र प्रकाशित करवाये।

सार्वजनिक एवं सामाजिक सेवा कार्यों

में भी आप सक्रिय रूप से सहयोग करते थे। बिहार भूकम्प के समय आपने स्वयं वहाँ जाकर पीड़ितों की सेवा एवं राहत के लिए कार्य किया। वीर शासन ट्रस्ट में आपका सक्रिय योगदान रहा। निश्छल एवं मिलन-सार इतने थे कि जो भी आपसे मिलता, फिर आजन्म अपनत्व में बँध जाता था।

१५ जनवरी १९७८ ई० को पक्षाघात के कारण आपका निधन हुआ। जैन जगत जब भी आपके द्वारा प्रकाशित साहित्य एवं चित्रों को देखेगा, आपको बरबस याद करेगा। •

स्व. बाबूलाल पोद्दार

आप का जन्म ५ जून १९०२ ई० को भिवानी (हरियाणा) में हुआ था। आप के पिता जुगलकिशोर पोद्दार थे। किशोरावस्था में ही आप कलकत्ता आये और मैट्रिकुलेशन परीक्षा पास कर कमीशन एजेन्ट का व्यवसाय करने लगे।



स्वाधीनता संग्राम के दौरान विदेशी वस्त्र बहिष्कार, नमक सत्याग्रह, भारत छोड़ो आदि आन्दोलनों में आप ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

समाज सुधार एवं सामाजिक सेवा-कार्यों में आप की प्रारम्भ से ही विशेष रुचि थी। मारवाड़ी समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध आप ने जबर्दस्त आन्दोलन चलाया। परदा प्रथा उन्मूलन समिति एवं रास्ता गीत विरोधी समिति आदि संस्थाओं के माध्यम से आन्दोलन और सत्याग्रह चला कर आप ने उल्लेखनीय कार्य किया।

कलकत्ते की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध रहे। श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति की स्थापना आप की ही प्रेरणा एवं पहल का प्रतिफल है। कलकत्ता महानगर में पेयजल वितरण सेवा कार्य सर्वप्रथम इसी संस्था के माध्यम से प्रारंभ हुआ। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कलकत्ता में मकानों की कमी एवं किरायेदारों पर मकान मालिकों की विविध ज्यादतियों के विरुद्ध आप ने कलकत्ता किरायेदार संघ की स्थापना की। किरायेदारों के हितों की रक्षा के लिए आप ने अनेक सफल आन्दोलनों का संचालन किया, जिसके लिए आप को अनेक बार जेल भी जाना पड़ा। असम के भूकम्प पीड़ितों में खाद्य पदार्थ, वस्त्र आदि का वितरण आप ने बड़े ही व्यापक पैमाने पर किया। इस जन-सेवा कार्य के क्रम में ब्रह्मपुत्र में नौका दुर्घटना में २२ अक्टूबर १९५० ई० को आप का निधन हो गया। आप के नाम पर डिब्रूगढ़ में एक मार्ग का नामकरण एवं मुख्य मार्ग पर आप की प्रतिमा भी स्थापित की गई है।

अन्याय के विरुद्ध संघर्ष एवं पीड़ितों के लिए आत्म-बलिदान का प्रतीक आप का जीवन युवकों के लिए सर्वदा श्लाघनीय रहेगा। •

स्व. भूरामल अग्रवाल

आप का जन्म २६ अगस्त १९०६ ई० को अलसीसर में हुआ था। आप के पिता रामचन्द्र अग्रवाल की जब डाल्टनगंज में अकाल मृत्यु हुई, तब आप मात्र ५ वर्ष के थे। १९१६ ई० में आप कलकत्ता आ गए।

रात्रिकाल में अपर्याप्त प्रकाश एवं गद्दी में पढ़ाई का वातावरण न होने एवम् विद्याध्ययन के प्रति अपने प्रबल अनुराग के कारण आप इडेन गार्डेन में लैम्प पोष्ट के



नीचे जाकर पढ़ते थे। १९२६ ई० में प्रेसिडेन्सी कॉलेज में भरती होने के बाद आप ने 'हिन्दी लिटरेरी सोसाइटी' का गठन किया, जिसके प्रतिवेदन पर प्रेसीडेन्सी कॉलेज में हिन्दी विभाग खुला और डा० प्रभुदत्त शास्त्री को प्रथम हिन्दी अध्यापक नियुक्त किया गया। आइ० ए० परीक्षा में संस्कृत भाषा में सर्वप्रथम आने पर आप को 'पंडित हरिश्चन्द्र कविरत्न पुरस्कार' मिला। १९२७ ई० में आयोजित अखिल भारतीय 'अच्छे नागरिक' निबन्ध प्रतियोगिता में आप को 'लार्ड इरविन रजत पदक' पुरस्कार मिला। प्रथम श्रेणी में बी. ए. (आनर्स) करने के बाद कानून के अध्ययन के दौरान इण्टरमीडिएट परीक्षा में आप को 'कासिम बाजार राज स्कालरशिप' एवं टैगोर लॉ लेक्चर्स परीक्षा में 'स्वर्णपदक' मिले। कानून का व्यावहारिक ज्ञान आप ने स्वनामधन्य एस. एन. बनर्जी (सीनियर) एवं काली प्रसाद खेतान से प्राप्त किया। १९३१ ई० में आप कलकत्ता उच्च न्यायालय के एडवोकेट हुए।

१९२८ ई० में आप ने 'हिन्दी छात्र संघ' का गठन किया, जिसके प्रथम अध्यक्ष पण्डित बनारसी दास चतुर्वेदी बने। १९३२ ई० तक आप पोद्दार छात्रावास में रहे। १९३३ ई० में आप ने 'पोद्दार छात्र संघ' की स्थापना की। १९४३-४४ ई० में इसके सभापति बने। १९५४ ई० में इसके वार्षिकोत्सव के आप अध्यक्ष मनोनीत हुए। अध्ययन के अलावा आप व्यायाम एवं शारीरिक-सौष्ठव के भी प्रेमी थे। छात्र जीवन में आप युनिवर्सिटी ट्रेनिंग कोर (सम्प्रति नेशनल केडट कॉर्प्स) में थे।

१९३० ई० में अपने सहयोगियों के साथ 'अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन' की स्थापना में सहयोग दिया। अपने कानूनी पांडित्य को आपने जनहित समर्पित कर दिया। राव कमेटी द्वारा हिन्दू उत्तराधिकार कानून में संशोधन करवा कर विमाता को भी सम्पत्ति में हकदार बनवाया। १९४६ ई० में जब मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डल बंगाल के हिन्दुओं पर हर तरह से अत्याचार कर रहा था, तब उसे रोकने के लिए आप ने 'डिफेंस कमेटी' का गठन किया, जिसका कार्यालय पहिले मारवाड़ी सम्मेलन और फिर भारत चेम्बर आफ कामर्स में रहा। इसके अवैतनिक सचिव के रूप में आप ने लाखों रुपये एकत्रित कर पकड़े गए लोगों की जमानतें लीं और हाईकोर्ट में केस कर सरकार द्वारा लगाये गए सामूहिक जुर्मानों का विरोध किया।

आप प्राचीन भारतीय संस्कृति के अनुरागी अन्वेषक थे। एशियाटिक सोसाइटी के अनुसंधान कार्यों में सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ सुनीति कुमार चट्टोपाध्याय, ए. डी. कुमारस्वामी, कालीदास नाग आदि को आपने पूर्ण सहयोग दिया। जीवन के उत्तरार्द्ध में महारानी बंकावती द्वारा राजस्थानी में १७५५ ई० में रचित 'बृजदासी भागवत्' का आप सम्पादन कर रहे थे। अथक परिश्रम कर के 'मीराबाई' एवं 'सूरदास' के प्रामाणिक चित्रों की भी आप ने खोज की।

२ अगस्त १९७८ ई० को आप की

इहलीला समाप्त हो गई। प्रगतिवादी एवं अन्वेषक, निर्भीक एवं कर्मठ समाजसेवी के रूप में आप की स्मृति सदैव अक्षुण्ण रहेगी। ●

बजरंग लाल लाठ

आप का जन्म जनवरी १९१० ई० में मण्डावा (झुंझनूं) में हुआ। बस्तीराम लाठ के आप पुत्र हैं। विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय से मैट्रिक कर आप व्यवसाय में लग गये।



१९३१ ई० से ही आपने खादी पहिनने का व्रत ले लिया। बड़ाबाजार कांग्रेस की कार्यकारिणी में भी रहे। १९५८ ई० से आप राष्ट्रवादी दल जनसंघ और अब भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध हैं।

रचनात्मक कार्यों में आप की रुचि १९३८ ई० से मुखर हुई, जब युवक सभा व मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की कार्यकारिणी में चुने गए। १९३९ ई० में अस्पताल के मन्त्री व उसके बाद निरन्तर ३ वर्षों तक सोसाइटी के प्रधान मन्त्री रहे। इसके उपसभापति भी रहे। १९४३ से ४७ ई० तक अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के आप प्रधान मन्त्री रहे। बाद में ४ वर्षों तक उपसभापति भी रहे।

गोरक्षा को आप अपना पुनीत कर्त्तव्य समझते हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य एवं आचार्य विनोबा भावे के आन्दोलनों में आप ने सक्रिय काम किया। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी की विभिन्न पदों से आप ने सेवा की है, यथा – शाखा मन्त्री, उपसभापति तथा प्रधान मन्त्री।

दहेज प्रथा के आप कट्टर विरोधी हैं। अपने परिवार में ही आप ने ११ विवाह ऐसे कराए हैं, जिनमें दहेज का बिल्कुल लेन-देन नहीं हुआ। इसी तरह समाज में अन्य अनेकों सादगीपूर्ण विवाह आप के हाथों सम्पन्न हुए हैं।

अपने गाँव की संस्थाओं में भी आप की गहरी रुचि रही है। आप वहाँ की युवक सभा के सभापति एवं विद्यालय के ७ वर्षों तक मन्त्री रहे और गोशाला के मन्त्री तो अभी भी हैं।

सामाजिक एवं धार्मिक रचनात्मक कार्यों में आप नवयुवकों के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। ●

स्व. शिवरतन मोहता

आप का जन्म १९११ ई० में कलकत्ता में हुआ। आप के पिता प्रेमसुख मोहता थे। बी. कॉम. परीक्षा उत्तीर्ण कर जीवकोपार्जन हेतु आप ने स्वल्प काल तक तो नौकरी की, फिर स्वतन्त्र रूप से विद्युत उपकरणों का व्यवसाय करने लगे।



आप बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। आप के सामाजिक जीवन का प्रारम्भ माहेश्वरी भवन से

१६३६ ई० में हुआ, जब आप व्याख्यान समिति के संचालक मनोनीत हुए। तत्पश्चात् लगातार ३० वर्षों तक विभिन्न पदों (यथा– उपमन्त्री, मन्त्री, उपाध्यक्ष एवं अध्यक्ष) पर रह कर आप ने माहेश्वरी भवन एवं इसके अन्तर्गत संस्थाओं, यथा–व्यायामशाला, भवन समिति, सेवा समिति, क्लब, वयस्क विद्यालय, समाजोत्थान समिति, एजूकेशन बोर्ड आदि की महत्वपूर्ण सेवा की। प्राय: १२ वर्षों तक लगातार माहेश्वरी विद्यालय की कार्य समिति में आप निर्वाचित होते रहे।

आप कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन के उपसभापति एवं माहेश्वरी विद्यालय भूतपूर्व छात्र परिषद के सभापति रहे। अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के मंच पर भी एक प्रभावशाली सदस्य के रूप में रहे। १९६३ ई० में आयोजित पूर्वांचल माहेश्वरी सम्मेलन की सफलता के लिए आप स्तम्भ थे।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के तत्वावधान में मुर्शिदाबाद, कालना तथा सम्बलपुर में एवम् श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के माध्यम से भागलपुर में बाढ़-पीड़ितों की सहायता के लिए आपने सराहनीय रूप में राहत कार्य संचालित किए। १९४६ ई० में साम्प्रदायिक दंगों के अवसर पर तथा १९६० ई० में असम-अशान्ति के समय आप निर्भीकतापूर्वक पीड़ितों की सेवा में यथाशक्ति लगे रहे।

सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी आप अग्रणी रहे। १९५४ ई० में आप ने नारी जागरण आन्दोलन चलाया। आप की ही प्रेरणा से माहेश्वरी समाज में महिला कार्यकर्त्रियाँ सार्वजनिक कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लेने लगीं।

आप की ध्येयनिष्ठा, कर्मठता, विनम्रता एवं संगठन-कौशल आदि गुणों से समाज इतना प्रभावित हुआ कि १ मार्च १९६४ ई० को सोहनलाल दूगड़ की अध्यक्षता में आपका अभिनन्दन किया गया। ४ अप्रैल १९६४ ई० को ५३ वर्ष की अवस्था में ही आप का निधन हो गया। आप के बहु-आयामी व्यक्तित्व का मारवाड़ी समाज चिर-ऋणी रहेगा। •

स्व. आनन्दी लाल पोद्दार

आप का जन्म १९१४ ई० में कलकत्ते में हुआ था। आप के पिता रामचन्द्र पोद्दार थे। विशुद्धानन्द विद्यालय से मैट्रिक तक शिक्षा सम्पन्न कर आप व्यापार के क्षेत्र में आ गए। शीघ्र ही आप की गणना हायर-परचेज के अग्रणी व्यवसायियों में होने लगी।



मात्र २५ वर्ष की अल्पायु में ही आप मारवाड़ी एसोसियेशन के सभापति बन गए। उसी समय कलकत्ता कॉरपोरेशन के चुनाव भी सन्निकट थे। राधाकृष्ण नेवटिया आप को नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के पास ले गए। सुभाष बाबू ने आप को सहर्ष अपना सहयोगी बना लिया। १९३९ ई० में ही आप निर्विरोध कौंसिलर निर्वाचित हुए, ४ वर्ष बाद डिप्टी मेयर बने और साल भर बाद ही मेयर चुन लिए गए। बर्लिन से सुभाष बाबू ने बधाई का सन्देश भेजा। कॉरपोरेशन के इतिहास में आप सर्वप्रथम हिन्दी भाषी एवं सर्वाधिक युवा मेयर थे। आप ने अखिल भारतीय

मेयर कांफ्रेंस भी बुलवाई जिसमें श्रीलंका के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। १९४६ ई० में जब भयंकर हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ, तब प्रतिशोध की भावना से जल रहे मुस्लिम लीगी मुख्य-मन्त्री सुहरावर्दी ने आप के घर की भी निष्फल तलाशी करवाई। पर आप तो साम्प्रदायिक ऐक्य के पुजारी थे एवं दोनों सम्प्रदाय आप से स्नेह रखते थे। कांग्रेस में रह कर आप ने बहुत से सार्वजनिक हित में कार्य किए। आप दो बार बंगाल विधान सभा के सदस्य भी चुने गए। कलकत्ता ट्रामवे कं० के आप सर्वप्रथम भारतीय डायरेक्टर बने। 'हिन्दुस्तान क्लब' जैसी वैष्णव भोजन की विशिष्ट संस्था के जन्मदाताओं में आप प्रमुख थे। आप 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' के भी सभापति चुने गए।

यद्यपि ४६ वर्ष की अल्पायु में ही ३० जुलाई १९६० ई० में आप का निधन हो गया, पर २७ वर्षों तक आप कलकत्ते के राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षितिज पर छाये रहे। •

स्व. देवकीनन्दन मानसिंहका

आप ने १५ वर्ष की किशोरावस्था से ही समाज सेवा के क्षेत्र में सक्रिय प्रवेश किया। मारवाड़ी समाज में व्याप्त विभिन्न



रुढ़ियों के विरुद्ध आन्दोलन चलाने हेतु गठित समाज सुधार समिति, रास्ता गीत विरोधी समिति, आदि संस्थाओं में आप ने सोत्साह योगदान दिया।

दिसम्बर १९३८ ई० में कलकत्ते में अनुष्ठित अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के अधिवेशन में पेय जल वितरण का सेवा कार्य सम्पन्न करने के साथ ही तदर्थ 'श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति' की स्थापना में आप ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। आप ने इस संस्था के माध्यम से न केवल देश के विभिन्न भागों में प्राकृतिक प्रकोपों के समय पीड़ित मानवों एवं पशुओं की आजीवन सहायता की वरन् सहस्रों कार्यकर्त्ता भी तैय्यार कर समाज को दिए।

बंगलादेश के मुक्ति युद्ध (१९७१ ई०) के दौरान भारत आनेवाले शरणार्थियों की सेवा हेतु 'श्री काशी विश्वनाथ नवयुवक समिति' नामक एक नई संस्था का आप ने गठन किया। कुछ बाद इसका नाम 'विश्वनाथ सेवा समिति' कर दिया। इसके माध्यम से भी आप ने अनेक वृहत् सेवा-प्रकल्पों को सम्पादित किया।

सफल व्यवसायी, स्वतन्त्रता सेनानी एवं कर्मठ सेवाभावी प्रकृति के इस उदारमना व्यक्तित्व की इहलीला २४ मार्च १९८१ ई० को समाप्त हुई। विविध समाचार-पत्रों एवं सेवा-संस्थानों ने आप को अपनी भाव-भीनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। •

स्व. बाबूलाल सरावगी

आप की शिक्षा मैट्रिक तक हुई थी। आप अदम्य उत्साही एवं दृढ़ संकल्पी व्यक्ति थे। सांस्कृतिक एवं जनहित कार्यों में आप सदा अग्रणी रहते थे। जब बिहार में भीषण एवं भयावह भूकम्प आया था, तो वहाँ पर राहत कार्य करने गये श्री दिगम्बर जैन युवक समिति के सेवादल के आप प्रमुख सदस्य थे। श्री महावीर पुस्तकालय के तो आप प्राण ही थे। अपने मंत्रित्वकाल में दो



वर्षों तक आपने अवैतनिक पुस्तकाध्यक्ष का कार्य भी किया। पुस्तकालय को आपने प्रचुर आर्थिक सहायता भी दी। युवावस्था में ही अपने ही विवाह के अवसर पर विषाक्त भोजन के कारण आपका आकस्मिक निधन हो गया।

आपकी स्मृति में श्री महावीर पुस्तकालय स्थानीय हिन्दी भाषा-भाषी छात्र-छात्राओं के मध्य वाद-विवाद प्रतियोगिता का प्रतिवर्ष आयोजन करता है।

स्व. रंगलाल पोद्दार

मारवाड़ी समाज में आधुनिक ढंग की सभा-सोसाइटियों का प्रारम्भ १८९९ ई० में 'मारवाड़ी एसोसियेशन' की स्थापना के साथ हुआ, जिसका प्रमुख श्रेय आप को ही



था। आप के सहयोगियों में मोतीलाल चाँदगोठिया, प्रह्लादराय डालमिया, शिवनाथ-राय सेकसरिया, दयाचंद सरावगी, रामगोपाल खेमका आदि युवा कार्यकर्त्ता प्रमुख थे। वस्तुतः उस समय मारवाड़ी समाज के धनी युवकों को सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में दीक्षित करने की दिशा में आप ने 'शिक्षा गुरु' का काम किया। फलतः आप का स्थान युवकों में सर्वोपरि हो गया और साथी आप को 'गुरुजी' कहने लगे। आप के द्वारा उत्प्रेरित अनेक युवा कार्यकर्त्ता (यथा – रामदेव चोखानी) कालान्तर में सामाजिक सेवा के क्षेत्र में बहुत यशस्वी हुए।

स्व. मदनमोहन बर्मन

स्वतन्त्रता संघर्ष के दौरान आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका के कारण आपको कारादंड का भी वरण करना पड़ा। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस एवं देशबन्धु चित्तरंजन दास के आप अनन्य सहयोगी थे।



कलकत्ता महानगरी में नवागत हिन्दी-भाषी प्रवासियों के लिए आजीविका की व्यवस्था करना आप अपना परम कर्तव्य समझते थे। आप दीर्घकाल तक कलकत्ता नगर निगम के निर्वाचित पार्षद रहे। निगम की कई विभागीय समितियों के अध्यक्ष या सदस्य के रूप में आपने जनहित में बहुत काम किया। आपके अथक प्रयास से नगर निगम में न केवल हिन्दी भाषी पार्षद अधिक संख्या में चुनकर आये वरन् कर्मचारियों में भी उनकी संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

आपने लिलुआ (हावड़ा) में श्रीकृष्ण गोशाला की स्थापना की एवं उसके कई वर्षों तक मंत्री भी रहे। बाद में उसकी व्यवस्था कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी को सौंप दी गई।

कलकत्ता महानगरी में हिन्दी भाषियों के प्रति अपनी सेवाओं के लिए आप स्मरणीय रहेंगे।

स्व. रामजीदास बाजोरिया

आप के पिता का नाम शिवदयाल बाजोरिया था। आप बड़े ही दबंग एवं कुशाग्र बुद्धि के व्यक्ति थे। आप परम्परावादी विचारधारा के थे। समाज में आपका बड़ा ही सम्मान था। आपकी सम्मति को लोग मानते भी थे। सामाजिक एवं सार्वजनिक कार्यों में आपका सक्रिय सहयोग बराबर मिलता था।

अपने अनन्य मित्र जुहारमल खेमका के साथ आपने 'मारवाड़ी अस्पताल' के लिए २० से २५ लाख रुपये एकत्र किये। साथ ही अपनी ओर से भी दान दिया। आप



मारवाड़ी अस्पताल के प्रधान संचालक भी रहे। आपके विशिष्ट सेवा कार्यों से प्रभावित हो कर सरकार ने आपको 'राय बहादुर' की उपाधि से सम्मानित भी किया।

मारवाड़ी अस्पताल के बहुमुखी विकास में जिस सक्रियता एवं कर्मठता से आपने अपनी सेवायें प्रदान की उसके लिए आप सदा याद किये जायेंगे।

स्व. केशरदेव जालान

आप का जन्म सुप्रसिद्ध व्यवसायिक घराने 'जालान परिवार' में हुआ था। आप के पिता बंशीधर जालान थे। ख्यातिलब्ध उद्योगपति होने के साथ ही आप प्रखर राष्ट्र भक्त भी थे। आप महात्मा गांधी के आन्दोलन से बहुत ही प्रभावित हुए और खद्दर के वस्त्र धारण करने लगे।



१९३७ ई० में जब प्रथम असम्बेली चुनाव हुए, तब उस चुनाव के लिए एक लाख रुपये की जरूरत थी। उम्मीदवारों का चयन शरतचन्द्र बोस, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद एवं प्रफुल्ल घोष करते थे। उस समय जब आपको अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य राधाकृष्ण नेवटिया ने इस अर्थाभाव से अवगत कराया, तब आपने सहर्ष एक लाख रुपये कांग्रेस को चुनाव में जिताने के लिए शरत बाबू एवं मौलाना आजाद को दे दिए।

स्व. ज्वाला प्रसाद कानोड़िया

आप एक कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। प्रकृति से आप परोपकारी एवं सहृदय व्यक्ति थे। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के ग्यारह संस्थापकों में एक आप भी थे।

इसके स्थापना काल में संस्थापक मण्डल के सभी सदस्य प्रति माह अट्ठाइस रुपये जमा करते थे और उसी जमा राशि से सेवा और चिकित्सा का कार्य किया जाता था। आरम्भ में आप हिसाब-परीक्षक के रूप में कार्य करते रहे और फिर सेवा विभाग में सेवा-नायक नियुक्त हुए।



आपके ही नायकत्व में नवयुवक स्वयं-सेवकों का संगठन कार्य सर्वप्रथम इसी संस्था से प्रारम्भ हुआ। बड़े-बड़े सार्वजनिक मेलों, जैसे—शीतलाजी का मेला, पिंजरापोल, गंगा सागर मेला आदि में इसी संस्था के स्वयंसेवक सबसे अधिक सेवा कार्य करते थे। इस संस्था के माध्यम से स्वयंसेवकों को कार्य तत्परता, आत्म निर्भरता एवं आज्ञापालन की अच्छी शिक्षा भी दी जाती थी। इस संस्था के प्रधान मंत्री एवं विशिष्ट व्यक्ति भी सेवा-विभाग के स्वयंसेवक के रूप में सेवा कार्य करने में अपना गौरव समझते थे। घनश्याम दास बिड़ला, ओंकारमल सराफ जैसे गणमान्य व्यक्ति भी सेवा विभाग के स्वयंसेवक के रूप में कार्य कर चुके हैं। सभी स्वयंसेवक आपके आदेशों का पालन करते थे। ●

स्व. लक्ष्मीनारायण मुरोदिया

आप प्रकृति से परोपकारी, सेवाव्रती एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति थे। सदैव मूक रूप



से सात्विक दान करने की आप में विशेष अनुरक्ति रही। साधु सन्तों, विपन्न एवं अभावग्रस्त व्यक्तियों को आप वस्त्र-दान तो देते ही थे, यथा संभव सहायता भी करते थे।

श्रीनारायण महाराज के सहयोग से आप उस समय असहाय रोगियों की सेवा-चिकित्सा का यथा संभव प्रबन्ध करते थे, किन्तु सीमित शक्ति के कारण कार्य क्षेत्र को विस्तृत नहीं कर पाये। जब आपको ज्ञात हुआ कि ओंकारमल सराफ के सद्-प्रयत्नों एवं जुगल किशोर बिड़ला तथा किसनलाल पचीसिया के उदार सहयोग से मानवमात्र की सेवा के लिए मारवाड़ी सहायक समिति (सम्प्रति मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी) खुलने जा रही है, तब आपने भी इसकी स्थापना में यथाशक्ति सहयोग किया और आपको संस्था की प्रबन्ध समिति का कोषाध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ। ●

स्व. मोतीलाल जाजोदिया

आप एक कर्मठ एवं सेवाव्रती सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। आप बड़ी निष्ठा के साथ मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के सर्वांगीण विकास के लिए १२ वर्षों तक सतत् प्रयत्न-शील रहे। १९१७ ई० से १९२८ ई० तक सोसाइटी के अपने मन्त्रित्वकाल में आप ने जनता की बहुत सेवा की। आप ने विविध सेवा कार्यों में सोसाइटी के कार्यकर्त्ताओं को



काम करने के लिए आगे बढ़ाया । सोसाइटी के औषधालय एवं शिक्षा विभाग में विशेष अभिरुचि लेकर उनकी उन्नति का समुचित प्रबन्ध किया । उस समय सोसाइटी के पास अपना कोई भवन नहीं था, आप ने अथक परिश्रम से समाज से तदर्थ चन्दा एकत्र किया । ●

स्व. गौरीशंकर गोयनका

आप एक कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। सामाजिक एवं सार्वजनिक कार्यों में आप सदा अग्रणी रहते थे । कलकत्ते की प्रमुख सामाजिक संस्था मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी से आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध थे । १६२६ ई०



से १९६३ ई० के दीर्घ काल में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के माध्यम से आप ने जनता की सेवा तो की ही, इसके विस्तार के लिए भी बहुत प्रयत्न किया। १६३८ ई० में आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की रसायनशाला विभाग के एवं १९३९-४० ई० में दातव्य औषधालय के मन्त्री रहे ।

राँची (बिहार) में गनपतराय बुधिया का एक बहुत बड़ा बगीचा था, जिसके अन्तर्गत 'आरोग्य भवन' नाम की एक संस्था थी, जहाँ बाहर के लोग स्वास्थ्य लाभ हेतु आते थे । आरोग्य भवन में ठहरने का कोई किराया नहीं लिया जाता था। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के विस्तार के निमित्त एक बार नागरमल मोदी ने आरोग्य भवन को मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी को दे देने का प्रस्ताव रखा। इसी क्रम में जब राधा-कृष्ण नेवटिया एवं बजरंगलाल लाठ के साथ अक्टूबर १९३९ ई० में आप राँची गये और आरोग्य भवन को सोसाइटी को देने का प्रस्ताव रखा, तो गनपतराय बुधिया ने उसे सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसका खर्च चलाने के लिए मोहराबादी के दो बंगले (जोड़ा कोठी) भी दे दिये। १९४० ई० से आरोग्य भवन की सम्पूर्ण व्यवस्था सोसाइटी ने सँभाल ली । ●

स्व. रामकुमार जालान

आप एक कुशल व्यवसायी थे । प्रकृति से आप परोपकारी एवं सहृदय थे, पर साथ ही बड़े व्यावहारिक व्यक्ति भी थे ।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी के



तानाशाह कैसर के विमानों द्वारा जब जगन्नाथ पुरी पर बम गिराए गये, तब उसके आतंक से कलकत्ता भी प्रायः खाली हो गया। उस समय राधाकृष्ण नेवटिया तथा अन्य कई मित्रों के साथ आप जसीडीह (बिहार) चले गये। वहाँ की जलवायु से आप बहुत प्रभावित हुए और हिन्दी भाषियों के ठहरने के लिए एक भवन निर्माण कराने का आपने निश्चय कर लिया। एतदर्थ अथक प्रयत्न से आपने समाज से चन्दा एकत्र किया और बड़ी निष्ठा से 'मारवाड़ी आरोग्य भवन' का निर्माण करवाया। कालांतर में बहुत अधिक लोग वहाँ स्वास्थ्य-लाभ हेतु जाने लगे और फलतः उस भवन ने आज का वृहद् स्वरूप धारण कर लिया है।

वस्तुतः आरोग्य भवन (जसीडीह) आज आपका चिरस्थायी स्मृति स्तम्भ है। ●

स्व. डॉ. बाबूलाल राजगढ़िया

आप का जन्म २९ जनवरी १९०३ ई० को कलकत्ते के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ। आपके पिता सुप्रसिद्ध समाजसेवी केदारनाथ राजगढ़िया थे। लन्दन से आपने एफ. आर. एस. ए. की उपाधि प्राप्त की।



प्रयाग सेवा समिति (कलकत्ता) की स्थापना काल में स्काउट बनाने के कार्यक्रम में आपने अपना नाम सबसे पहले दर्ज कराया था। 'कारनेगी' (अमेरिका में सबसे दानी को 'कारनेगी' कहते हैं) के समान दान देने की आपकी सदैव प्रवृत्ति रहती थी। साहित्य के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि थी। साहित्यिक प्रवृत्ति के होने के फलस्वरूप श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय को आपका सक्रिय सहयोग बराबर मिलता रहा। महात्मा गांधी के आन्दोलन के दौरान जब श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय ने 'यंग इण्डिया' में प्रकाशित महात्मा गांधी के अग्रलेखों का हिन्दी अनुवाद प्रकाशित कराने का निश्चय किया, तो उसके प्रकाशन का सम्पूर्ण व्यय (जो ५ हजार रुपये था) आपने वहन किया। नोबल पुरस्कार प्राप्त फ्रेंच उपन्यास 'थाया' का मुंशी प्रेमचन्द द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद 'अहंकार' का प्रकाशन भी आपने ही कुमारसभा से करवाया।

आप श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के संरक्षकों में थे। केदारनाथ बाबूलाल राजगढ़िया बालिका विद्यालय, सलकिया (हावड़ा) की स्थापना आपने की। इनके अतिरिक्त आप कई स्थानों के दातव्य न्यासों के संचालक भी थे। ●

स्व. नानूराम सराफ

आप बड़े ही सहृदय एवं मिलनसार प्रकृति के थे। कई सामाजिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध थे।



आप श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के संस्थापकों में से एक थे। पुस्तकालय के बहुमुखी विकास के लिए आप जीवन पर्यन्त सक्रिय रहे, साथ ही गणमान्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं एवं नवयुवकों को भी सहयोग करने के लिए प्रेरित करते रहे। ●

स्व. मदनलाल जाजोदिया

१९१६ ई० में स्थापित बाल सभा (सम्प्रति श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय) के आप संस्थापकों में थे। साथ ही आरम्भ में बाल सभा में आनेवाले छात्रों को पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकायें पढ़ने के लिए आपने अपने ही मकान में (जहाँ आज बामनदास कविराज का कार्यालय है) जगह भी दी।

आपका उड़ीसा में सूते का व्यवसाय था।



जब वहाँ चिल्का झील क्षेत्र में भयंकर बाढ़ आ गयी, तब प्रांतीय सरकार ने आपको ही बाढ़ पीड़ितों को राहत पहुँचाने की जिम्मेदारी सौंपी। इस राहत कार्य के दौरान एक आकस्मिक मोटर दुर्घटना में आपका निधन हो गया।

अपनी कर्मठता एवं दृढ़ता के लिए आप सदा याद रहेंगे। ●

स्व. महादेव झुनझुनवाला

आप श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के संस्थापकों में से एक थे। जीवन



पर्यन्त पुस्तकालय के उत्तरोत्तर विकास के लिए आप प्रयत्नशील रहे।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में भी आप ने बहुविध सेवा कार्य किये। १९२६-२७ ई० में आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के सहायक मन्त्री भी रहे। ●

स्व. महावीर प्रसाद अग्रवाल

आप सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता तो थे ही, साथ ही दृढ़ संकल्पी एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता भी।



आप बड़ी निष्ठा के साथ श्री बड़ाबाजार लाइब्रेरी के सर्वांगीण विकास के लिए २२ वर्षों तक सतत् प्रयत्नशील रहे। पद एवं

सम्मान की परवाह न कर दायित्व पालन को ही आपने सदा प्रमुखता दी। एतदर्थ अध्यक्ष का पद छोड़ कर आपने मंत्री पद के दायित्व को संभाला। भारत विभाजन के दुर्भाग्यपूर्ण अवसर पर हुए साम्प्रदायिक दंगों के पश्चात् जब लाइब्रेरी का कार्य अत्यन्त अव्यवस्थित हो गया, तब अपनी कर्मठता से आपने अल्प काल में ही उसमें सुधार किया। १९५२ ई० में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद की अध्यक्षता में गौरवशाली ढंग से आयोजित लाइब्रेरी के स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम की सफलता का प्रमुख श्रेय आपको ही है। आप श्री बड़ाबाजार युवक सभा के भी सक्रिय सदस्य थे। ●

स्व. मदनलाल खेमका

आप का जन्म १९०८ में ई० कलकत्ता में हुआ था। आप के पिता जमनादास खेमका थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त कर आप कलकत्ता उच्च



न्यायालय में सालिसीटर के रूप में पंजीयत हुए। कलकत्ता उच्च न्यायालय एवं सर्वोच्च न्यायालय के आप ख्यातिलब्ध अधिवक्ता थे। आप को कलकत्ता उच्च न्यायालय ने 'नोटरी' भी नियुक्त किया था।

१९४४ ई० में आप कलकत्ता नगर निगम के पार्षद निर्वाचित हुए। बागला अस्पताल के ट्रस्टी एवं बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र (ऋषिकेश) के अध्यक्ष के रूप में आप ने बहुत सेवा कार्य किया। तूफान राहत समिति के आप संयुक्त सचिव थे।

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् आप विभिन्न औद्योगिक समितियों के सदस्य मनोनीत हुए, यथा—बंगाल पुनर्निर्माण (औद्योगिक विकास) समिति, निर्यात सलाहकार समिति, खाद्यान्न एवं मूल्य नियन्त्रण सम्बन्धी संयुक्त सलाहकार समिति, ई० आई० रेलवे की स्थानीय सलाहकार समिति, चेम्बर आफ कामर्स का खाद्य सम्पूर्ति संगठन आदि। मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स के आप १९४३ से १९४५ ई० तक अध्यक्ष रहे। कोयला, कागज, गत्ता, रूई, मैदा, तेल, भूमि विकास, रसायन, औषधि एवं सम्वाद पत्रों से संबंधित विभिन्न सुप्रतिष्ठित उद्योगों (यथा — स्ट्रा प्रोडक्टस लि०, करमचन्द थापर एण्ड ब्रादर्स लि० आदि) के आप निदेशक रहे। ●

स्व. जगन्नाथ बेरीवाल

आप का जन्म ३ फरवरी १९१२ ई० को हरियाणा के बेरी ग्राम में हुआ था। आपके पिता हरगुलाल बेरीवाल थे। अपने परिवार में आप पहले व्यक्ति थे जिन्होंने



आधुनिक शिक्षा प्राप्त की। सुप्रसिद्ध जूट ब्रोकर फर्म 'जयलाल हरगुलाल' आप का पैतृक प्रतिष्ठान था, पर आपने उत्कट आकांक्षा एवं पैनी व्यावसायिक सूझ-बूझ के साथ लौह एवं कोयला उद्योगों में प्रवेश किया

और अथक परिश्रम से शीघ्र ही प्रतिष्ठित उद्योगपतियों में अपना स्थान बना लिया।

१९४० ई० में आप स्वाधीनता आंदोलन की ओर झुके और महात्मा गांधी के अनुयायी हो गये तथा खादी के वस्त्र धारण करने लगे। १९४५ ई० में सीताराम सेकसरिया के प्रोत्साहन से सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में आपने प्रवेश किया। सर्व प्रथम मातृ सेवा सदन (सम्प्रति लोहिया मातृ सेवा सदन) की व्यवस्था-भार को वहन करने के लिए सक्रिय हो गये। १९५४-५५ ई० में वृन्दावन में टी० बी० सेनिटोरियम की स्थापना होने पर आप उसके सचिव बने। १९५७ ई० में आपने मारवाड़ी बालिका विद्यालय के सचिव का पदभार संभाला। आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के १९५८-५९ ई० में सचिव निर्वाचित हुए। आपकी योजना पर रानीगंज में मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी अस्पताल का शिलान्यास १९६१ में हुआ और वह १९६४ ई० में तैयार हो गया।

४ फरवरी १९७१ ई० को मद्रास में आपका निधन हो गया। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी का रानीगंज अस्पताल एवं वृन्दावन का टी० बी० सेनिटोरियम आपके कर्मनिष्ठ सेवाव्रती व्यक्तित्व के स्मारक हैं। ●

स्व. रतनलाल झांझरी

आप का जन्म संवत् १९५६ ई० में हुआ था। अपनी कर्मठता एवं व्यावसायिक प्रतिभा से मुनीमी से जीवन आरम्भ कर आप कालान्तर में सुप्रसिद्ध जूट ब्रोकर फर्म 'जयलाल हरगुलाल' के भागीदार बन गये।

आप दिगम्बर जैन समाज के अग्रगण्य सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। आप कुशल संगठन-कर्त्ता एवं निर्भीक वक्ता थे। श्री दिगम्बर जैन युवक समिति एवं श्री महावीर पुस्तकालय से आप दीर्घ कालावधि तक विभिन्न पदों पर घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध रहे।

आप प्राचीन संस्कृति के अनुरागी एवं स्वाध्याय प्रेमी होने के साथ ही दृढ़ निश्चयी समाज सुधारक भी थे। तत्कालीन रूढ़ि-ग्रस्त समाज में अन्तर्जातीय विवाह एवं विदेश यात्रा पर लगे प्रतिबन्धों को तोड़ने में आपकी विशेष भूमिका रही। आपने सामाजिक निष्कासन की परवाह न कर शास्त्रीय प्रमाणों के आधार पर स्व-रचित 'विजातीय विवाह मीमांसा' शीर्षक पुस्तक में अन्ध-विश्वासियों पर सबल प्रहार किया।



विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक सेवा संस्थाओं को आपने मुक्त-हस्त दान दिया, जिनमें उल्लेखनीय हैं – वृज सेवा समिति सेनेटोरियम को १,००,०००), श्री अहिंसा प्रचार समिति को १४,०००), श्री महावीर पुस्तकालय को ५,०००) तथा बरसावा हाई स्कूल को १,१००)।

सम्वत् २०२२ में आपका निधन हो गया। समाज सुधार एवं दानशीलता के लिए आप स्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. नन्दलाल सरावगी

आप का जन्म १८९७ ई० में हुआ था। आपकी शिक्षा मैट्रिक तक हुई थी। आप सुप्रतिष्ठित जूट ब्रोकर 'रामजीवनदास सरावगी एण्ड सन्स' के भागीदार थे।

प्रकृति से आप धर्मपरायण एवं समाज-सेवी व्यक्ति थे। प्राचीन कला एवं संस्कृति

के संरक्षण में आपकी सक्रिय भूमिका रही। आप श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, श्री अहिंसा प्रचार समिति एवं श्री कुन्दकुन्द विद्यालय (राजखेड़ा) के ट्रस्टी; श्री जैन शिक्षा निकेतन एवं श्री जैन बाला विश्राम (आरा) के अध्यक्ष भी रहे। श्री बंगाल बिहार उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं अन्यान्य सार्वजनिक एवं धार्मिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध रहे। •

स्व. धन्नूलाल अग्रवाल

आप का जन्म १८६६ ई० में हुआ था। एटर्नी-एट-ला की उपाधि प्राप्त कर आप कलकत्ता उच्च न्यायालय के ख्याति-प्राप्त अधिवक्ता बन गए।

आप बड़े विनम्र एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर के आप प्रथम ट्रस्टी मनोनीत हुए। कलकत्ता नगर के जैनेतर समाज में जैन सिद्धान्त के प्रचार-प्रसार में आप सदैव सचेष्ट रहते थे। श्री कार्त्तिक महोत्सव पर निकलनेवाली रथयात्रा में भी आपकी विशेष भूमिका रही।

आपका निधन १९१४ ई० में हो गया। •

स्व. छोगमल चोपड़ा

आप का जन्म ६ फरवरी १८८४ ई० को देरासर (बीकानेर) में हुआ। आप



फूसराज चोपड़ा के पुत्र थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आपने बी.ए. तथा बी. एल. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। आप बहु-भाषाविद् थे। बंगला, अंग्रेजी, संस्कृत एवं हिन्दी भाषाओं पर आपका पूरा अधिकार था, साथ ही गुजराती व उर्दू का भी अच्छा ज्ञान था। आप सुप्रतिष्ठित अधिवक्ता थे। स्माल कोर्ट बार एसोसियेशन के आप सभापति एवं कोषाध्यक्ष भी निर्वाचित हुए।

जैन धर्म के प्रचार के लिए आपने देश के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा की। आपके लेख प्रायः पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहते थे। अपना एक निजी पुस्तकालय भी आपने बनाया था। आप श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के संस्थापकों में थे एवं २० वर्ष तक इसके सभापति भी रहे। इस संस्था की आपने अनेक शाखाएँ भी खुलवाईं। तेरापंथ समाज ने आपके अभिनन्दनार्थ जो १ लाख रुपये की थैली भेंट की, वह भी आपने इसी संस्था को दे दी। उस निधि का उपयोग आपके नाम से मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति देकर किया जाता है। इसी संस्था ने आपको 'समाज-भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी विद्यालय (बालक-बालिका), श्री सुमति शिक्षा सदन, पारमार्थिक शिक्षण संस्था, ओसवाल नवयुवक समिति, अणुव्रत समिति एवं राणावास (पाली) जैन सभा आदि संस्थाओं के आप मन्त्री एवं सभापति पदों पर रहे।

एशियाटिक सोसाइटी, महाबोधि सोसाइटी, संस्कृत परिषद, मारवाड़ी छात्रावास, मारवाड़ी सम्मेलन, भारत चेम्बर आफ कामर्स आदि संस्थाओं से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध थे। आप दहेज प्रथा के सक्रिय विरोधी थे तथा नारी शिक्षा व जागृति के लिए प्रयत्नशील रहते थे।

आप का निधन ६ अप्रैल १९६० ई० को हुआ। •

स्व. मोतीलाल चांदगोठिया

आप स्वतन्त्र विचारों के प्रतिभाशाली युवक थे। सामाजिक कार्यों में आपकी प्रारंभ से ही गहरी अभिरुचि थी। १८९८ ई० में मारवाड़ी एसोसियेशन की स्थापना में आपने बहुत योगदान किया और इसके प्रथम सहकारी मन्त्री मनोनीत हुए। पुनः १९०१ ई० में विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी विद्यालय की स्थापना में विशेष प्रयत्नशील रहे और उसके मन्त्री एवं उपाध्यक्ष पदों पर भी रहे।

आप का निधन मात्र २२ वर्ष की युवावस्था में ही हो गया। आपकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु मारवाड़ी एसोसियेशन द्वारा विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय हाल में आपका तैल चित्र लगाया गया है। ●

स्व. गम्भीरमल पाण्ड्या

आप का जन्म १८८१ ई० में हुआ। सुप्रतिष्ठित वस्त्र - व्यवसायियों में आप अग्रणी थे।

आप धर्म - वत्सल, श्रद्धालु एवं गुणग्राही होने के साथ बड़े कर्मठ एवं प्रबुद्ध सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए आपने अनेक प्रयास भी किए। आप दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष एवं श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर के ट्रस्टी भी बने। खण्डेलवाल महासभा (नावां) ने आपको 'जाति - रत्न' उपाधि से अलंकृत किया। जोधपुर महाराजा ने १९४३ ई० में आपको 'गोल्ड आनर' से विभूषित किया। ●

स्व. बालमुकुन्द डालमिया

आप का जन्म भाद्रपद शुक्ला १ संवत् १९४८ को सुहासड़ा (हिसार) में हुआ। आप के पिता गंगाधर डालमिया थे। आपने कलकत्ता से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की।



जीविकोपार्जन हेतु आप कपड़े की दलाली करते थे।

आप बड़े सहृदय, लोकप्रिय, सेवाव्रती एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। आपने 'डालमिया जातीय सभा' की स्थापना की। इस संस्था का उद्देश्य स्वजातीय बन्धुओं की विपत्ति के समय मदद करना था—यथा बेरोजगार युवक की आजीविका, असहाय बीमार की चिकित्सा, गरीब की लड़की की शादी, अनाथ बच्चे की शिक्षा आदि का प्रबन्ध। इस संस्था के सत्कार्यों से प्रेरणा प्राप्त कर केड़िया सभा तथा खेमका सभा भी स्थापित हुईं।

मारवाड़ी ट्रेड एसोसियेशन की स्थापना के समय से ही आप उसका सेवा विभाग संभालते थे। आपदा में पड़े व्यक्ति की आप तन - मन - धन से मदद करते थे।

अपनी मृत्यु का पूर्वाभास हो जाने पर आप ऋषिकेश चले गए, जहाँ जयदयाल गोयनका का सत्संग चल रहा था। आपका निधन ऋषिकेश में चैत्र शुक्ला १४ संवत् १९८० को हो गया। ●

सोहन लाल जैन (लमेचू)

आप का जन्म संवत् १९५३ में हुआ। आप सुप्रसिद्ध 'फूल मार्का' घी के निर्माता हैं। कलकत्ता घी मर्चेण्ट एसोसियेशन के आप अध्यक्ष रह चुके हैं।



प्रकृति से आप धर्मपरायण एवं निरभिमानी व्यक्ति हैं। विभिन्न धार्मिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध रहे हैं। आप अति मनोज्ञ चन्द्रप्रभ जिनालय (मधुवन), मुन्नालाल चैरिटेबल ट्रस्ट एवं सोहनलाल चैरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक; श्री दिगम्बर जैन भवन (कलकत्ता) के प्रबन्धक ट्रस्टी; श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर, श्री सरावगी बालिका विद्यालय के ट्रस्टी; लमेचू जैन एजुकेशनल ट्रस्ट, जैन इण्टर कालेज (करहल) के अध्यक्ष; एवं श्री बंगाल-बिहार-उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। ●

स्व. छोटेलाल कानोड़िया

आप का जन्म संवत् १९५५ में हुआ। आपके पिता सूरजमल कानोड़िया थे। आप मेकलोड कम्पनी के निदेशक तथा इंडियन प्रोड्यूस एसोसियेशन के ट्रस्टी थे।

आप मननशील, धर्मपरायण एवं उत्साही समाजसेवी थे। आपके नेतृत्व में धार्मिक प्रवचन प्रायः होते रहते थे। फरवरी १९६२ ई० में कम्पनी बागान (रवीन्द्र कानन) में आयोजित अष्ट-ग्रह योग महायज्ञ अनुष्ठान (जिसमें भाग लेने के लिए देश भर के बड़े-बड़े सन्तों एवं विद्वानों का कलकत्ते में आगमन हुआ था) के आयोजन में आपकी विशेष भूमिका रही। करपात्री महाराज के गोवध विरोधी आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया और उनसे आशीर्वाद प्राप्त कर दैनिक सन्मार्ग का प्रकाशन प्रारंभ किया, जिसमें पं० सूर्यनाथ पांडेय का बहुत सहयोग मिला।



कलकत्ता की सभी मारवाड़ी सामाजिक संस्थाओं में आप सोत्साह भाग लेते थे। कलकत्ता पिंजरापोल के आप बहुत समय तक मन्त्री रहे। भारत सरकार द्वारा मद्रास में आयोजित 'कृषि एवं पशुपालन सम्मेलन' में आपने बंगाल सरकार के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

बनारस स्थित अपने अस्पताल के आप बहुत वर्षों तक मन्त्री रहे और फिर अध्यक्ष भी बने। आपके कुशल निर्देशन में अस्पताल का बहुमुखी विकास हुआ। ●

इन्द्र चन्द्र भुवालका

आप एक कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के मन्त्री के रूप में आपने बहुत सेवा कार्य किया। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थापना में आपकी सक्रिय भूमिका रही। बड़ाबाजार



युवक सभा के संस्थापकों में एक आप भी हैं। पर्दा प्रथा उन्मूलन के उद्देश्य से आपने राधाकृष्ण नेवटिया एवं अन्य कई मित्रों के सहयोग से 'युगान्तर क्लब' की स्थापना की थी एवं समाज से पर्दा प्रथा समाप्त करने के लिए अभियान भी चलाया। ●

ईश्वरी प्रसाद गोयनका

आप का जन्म १६०५ ई० में हुआ। आपके पिता घनश्यामदास गोयनका थे। मैट्रिक को परीक्षा उत्तीर्ण करने के साथ आपने संस्कृत, बंगला और अंग्रेजी भाषाओं का विशेष अध्ययन भी किया। ज्योतिष एवं आयुर्वेद का भी आपको अच्छा ज्ञान है।

आप नगर की विभिन्न सेवा संस्थाओं से सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी के आप दो बार अध्यक्ष रह चुके हैं, सम्प्रति ट्रस्टी हैं। श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय एवं सावित्री पाठशाला के आप ट्रस्टी, मंत्री एवं सभापति के पदों पर रह चुके हैं। आप श्री विशुद्धानन्द मारवाड़ी अस्पताल के सभापति भी निर्वाचित हो चुके हैं।

धार्मिक सेवा क्षेत्र में भी आपकी भूमिका सराहनीय रही है। ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम (हरद्वार व चूरू), आयुर्वेदिक कालेज (हरद्वार) के आप अध्यक्ष बन चुके हैं। गोविन्द भवन में आपके व्याख्यान होते रहते हैं। आध्यात्मिक चिंतन एवं मनन में आपकी विशेष अनुरक्ति है।

आप कुशल उद्योगपति हैं। यूनाइटेड कमर्शियल बैंक, आक्टेवियस स्टील कं० लि० एवं संलग्न उद्योग समूह के आप निदेशक एवं चैयरमेन रह चुके हैं। आप भारत चेम्बर आफ कामर्स के अध्यक्ष भी निर्वाचित हुए। ●

मिश्रीलाल जैन

आप का जन्म १६१० ई० में हुआ। अपनी कार्य कुशलता एवं दूरदर्शिता से आपने अपार सम्पदा अर्जित की है। आप मैंगनीज अयस्क के अग्रगण्य निर्यातक तथा ख्यातिलब्ध चलचित्र-वितरक के रूप में व्यावसायिक क्षेत्र में सुप्रतिष्ठित हैं।



प्रकृति से आप धर्मानुरागी एवं स्वाभिमानी व्यक्ति हैं। कई धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के विभिन्न पदों पर रह कर आपने सार्वजनिक सेवा के क्षेत्र में बहुत यश एवं सम्मान अर्जित किया है।

आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव समिति (प० बं०), श्री जैन सभा, श्री अहिंसा प्रचार समिति, श्री बंगाल-बिहार-उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री दिगम्बर जैन शिक्षालय एवं श्री दिगम्बर जैन दातव्य औषधालय के आप अध्यक्ष रह चुके हैं। श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में नवीन वेदी तथा चाईंबासा

(संथाल परगना) में प्रसूति गृह के निर्माण में आपने मुक्त हस्त दान दिया है। •

स्व. इन्द्रचन्द्र केजरीवाल

आप का जन्म कात्तिक कृष्णा ६ सम्वत् १६७० को भभुआ (रोहतास) में हुआ। आप के पिता जानकीदास केजरीवाल थे। अल्पायु में ही आपको पितृ वियोग सहना



पड़ा। आप अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि और विलक्षण व्यावसायिक प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति थे। २० वर्ष की अवस्था में ही कप्तानगंज (गोरखपुर) में आपने चीनी की मिल बैठाई। ३२ वर्ष की अवस्था में आपने बड़े साहस के साथ विषम परिस्थितियों में कलकत्ते में ५२ नं० जकरिया स्ट्रीट का मकान बनवाया।

सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों भी आपकी बहुत रुचि थी। भभुआ और सासाराम में आपने कई धर्मशालाएँ बनवाईं। अलसीसर में आपने जानकीदास हाईस्कूल बनवाया। आपने तीन ट्रस्ट भी स्थापित किये – पहिला कनीराम चेरिटेबल ट्रस्ट धर्मशालाओं के सुप्रबंध के लिए, दूसरा जानकीदास चेरिटेबल ट्रस्ट स्कूल के सुचारु संचालन के लिए और तीसरा गणपतराय चेरिटेबल ट्रस्ट कलकत्ते में ठाकुरबाड़ी, आरा में हनुमान मन्दिर व अलसीसर में सत्यनारायण मन्दिर की देख-भाल के लिए।

आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के ४ वर्षों तक सभापति रहे। अलसीसर में आपने गोशाला की स्थापना की। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी की कचरापाड़ा शाखा के आप मन्त्री थे। राजस्थान में जब भी अकाल पड़ा, आपने राहत कार्यों के लिए मुक्त-हस्त दान दिया। जरूरत पड़ने पर मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी को भी आपने आर्थिक सहायता दी। आर्थिक अवनति हो जाने पर भी आपके धार्मिक कार्यकलाप पूर्ववत चलते रहे।

चैत्र कृष्णा १५ सं० २०३६ को लखनऊ में आपका निधन हो गया पर दाह-संस्कार वाराणसी में किया गया।

आपकी स्थापित विविध संस्थाएँ आपके कर्मशील जीवन्त व्यक्तित्व की स्थायी यादगार हैं। •

स्व. साहू शांतिप्रसाद जैन

आपका जन्म १६११ ई० में नजीबाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। आपने विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी। अपने श्वसुर प्रसिद्ध उद्योगपति रामकृष्ण डालमिया के सहयोग से आपने उद्योग क्षेत्र में प्रवेश किया। कागज, चीनी, वनस्पति, एसबेस्टस, पाट, रसायन, उर्वरक, कोयला, समाचार



जगत आदि विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में साहू जैन उद्योग ने आपके कुशल निर्देशन में व्यापक सफलताएँ प्राप्त कीं। आप फेडरेशन आफ

इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज, इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स, इण्डियन पेपर मिल्स एसोसियेशन, इण्डियन सुगर मिल्स एसोसियेशन, बिहार चेम्बर आफ कामर्स आदि के अध्यक्ष रहे।

देश भर के विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सामाजिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध रहे। आपने भारतीय ज्ञानपीठ की स्थापना की और उसमें जैन धर्म एवं दर्शन से सम्बद्ध श्रेष्ठतम प्राचीन ग्रन्थों का प्रकाशन तो करवाया ही, साथ ही समकालीन श्रेष्ठतम हिन्दी साहित्य को भी प्रकाशित कराया। अपनी पत्नी रमा जैन की प्रेरणा से आपने सर्वश्रेष्ठ भारतीय साहित्यिक कृति पर प्रति वर्ष १ लाख रुपये के ज्ञानपीठ पुरस्कार की अभिनव योजना प्रारम्भ की।

आपने अनेक प्राचीन जैन तीर्थों एवं मन्दिरों का जीर्णोद्धार करवाया। आप श्री बंगाल बिहार उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थ कमेटी, भारतीय दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी (बम्बई), अहिंसा प्रचार समिति, भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव से सम्बन्धित अखिल भारतीय एवं अनेक प्रान्तीय समितियों के अध्यक्ष रहे। राजेन्द्र छात्रावास एवं गोबिन्द बल्लभ पन्त छात्र भवन के भी आप अध्यक्ष थे। मूर्ति देवी सरस्वती इण्टर कालेज, साहू जैन कालेज (नजीबाबाद), एस० पी० जैन कालेज (सासाराम), साहू जैन ट्रस्ट एवं साहू जैन चैरिटेबुल सोसाइटी के आप संस्थापक थे। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अध्यक्ष के रूप में भी आपने बहुत सेवा कार्य किये। कलकत्ता में आयोजित निरामिष सम्मेलन के भी आप अध्यक्ष थे।

आप का निधन २७ अक्टूबर १९७७ ई० को हुआ। उदारमना, निरभिमानी एवं निरन्तर कर्म-शील आपका व्यक्तित्व भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा। ●

नथमल सेठी

आप का जन्म १९१५ ई० में हुआ। आप सुप्रतिष्ठित पाट व्यवसायी हैं। आप ईस्ट इण्डिया जूट एण्ड हेसियन एक्सचेंज के निदेशक, बंगाल जूट बेलर्स एसोसियेशन के अध्यक्ष एवं बंगाल चेम्बर आफ कामर्स के आरबीट्रेटर रह चुके हैं।



प्रकृति से आप उदार, विनम्र एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति हैं। कई शैक्षणिक, सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध रहे हैं। आप महावीर हायर सेकेण्डरी स्कूल (लाडनूं) के प्रबन्धक ट्रस्टी; श्री दिगम्बर जैन विद्यालय, श्री दिगम्बर जैन बालिका विद्यालय, श्री अहिंसा प्रचार समिति, श्री दिगम्बर जैन रथ-यात्रा कमेटी, श्री जैन सभा आदि के ट्रस्टी, सभापति एवं उपसभापति रह चुके हैं। वीर शासन ट्रस्ट के आप विशिष्ट सहयोगी हैं। ●

मदनलाल पाण्ड्या

आप का जन्म १९१५ ई० में हुआ। आप एक कुशल व्यवसायी हैं। बंगाल चेम्बर आफ कामर्स के आप पंच भी रह चुके हैं।

प्रकृति से आप सहृदय, व्यवहार कुशल एवं निष्ठावान समाजसेवी व्यक्ति हैं। कई धार्मिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं



रहते हुए आपने बड़ी कुशलता एवं लगन से समाज की बहुत सेवा की। आप श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (पुरुलिया) के ट्रस्टी; श्री दिगम्बर जैन सम्मेलन के उपाध्यक्ष; श्री बंगाल-बिहार-उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर एवं श्री जैन शिक्षालय के मन्त्री; तथा आल इण्डिया भगवान महावीर २५००वां निर्वाण महोत्सव सोसाइटी की केन्द्रीय एवं प्रान्तीय समितियों के सदस्य रह चुके हैं। ●

से आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध रहे हैं। श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर के ट्रस्टी, श्री अहिंसा प्रचार समिति के अध्यक्ष, श्री बंगाल-बिहार-उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री एवं वीर शासन ट्रस्ट के आप विशिष्ट सहयोगी रह चुके हैं। श्री अहिंसा प्रचार समिति व श्री दिगम्बर जैन विद्यालय के भवन निर्माण; तथा श्री दिगम्बर जैन भवन व श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर के नव-निर्माण में आपकी विशिष्ट भूमिका रही है। ●

मालीराम सरावगी

आप का जन्म १९१७ ई० में हुआ। आप एक कर्मठ समाज सेवी हैं। अनेक धार्मिक



एवं शैक्षणिक संस्थाओं के विभिन्न पदों पर

स्व. बद्रीप्रसाद पोद्दार

आप का जन्म १९२० ई० में हुआ। आप रामचन्द्र पोद्दार के पुत्र थे। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। आप को उद्योग एवं व्यवसाय का व्यापक अनुभव था। सूती वस्त्र, जूट, चाय, इस्पात, कोयला खान, परिवहन, रसायन एवं विद्युत आदि उद्योगों [यथा, शावालस,



जनरल इलेक्ट्रिक (जी. इ. सी.), इंगलिश इलेक्ट्रिक, कलकत्ता ट्रामवे, यूनाइटेड क्रेडिट आदि] के आप निदेशक रहे। भारत चेम्बर आफ कामर्स (कलकत्ता) तथा फेडरेशन आफ इन्डियन चेम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज के आप अध्यक्ष निर्वाचित हुए। अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य मण्डल के एशियाई तथा प्रशान्त महासागरीय आयोग के आप अध्यक्ष थे। टोकियो में आयोजित एशियाई

उत्पादकता कांग्रेस में आपने भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

आप ११ वर्षों तक पश्चिम बंग विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। आप कांग्रेस विधायक दल के कोषाध्यक्ष तथा अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के सदस्य भी रहे। आप अनेक सरकारी संस्थानों से सम्बद्ध रहे – यथा, राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद तथा इंडियन रेडक्रास सोसाइटी के उपाध्यक्ष ; अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा, केन्द्रीय भविष्य निधि ट्रस्ट तथा राष्ट्रीय जहाजरानी बोर्ड के सदस्य ; कलकत्ता पोर्ट ट्रस्ट के कमिश्नर एवं कलकत्ता इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के ट्रस्टी। आप के नेतृत्व में एक वाणिज्य प्रतिनिधि मंडल रुस, यूगोस्लाविया, बल्गेरिया, वियतनाम तथा कोरिया भी गया।

शिक्षा जगत में भी आपकी विशेष भूमिका रही। आप भारतीय तकनीकी संस्थान (आई. आई. टी.) खड़गपुर के अध्यक्ष, तथा विज्ञान संग्रहालय सम्बन्धी राष्ट्रीय परिषद व जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी के सदस्य भी थे।

चिकित्सा एवं सेवा के क्षेत्र में सक्रिय सार्वजनिक संस्थाओं में आप व्यक्तिगत रुचि रखते थे। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के आप सभापति रह चुके थे। अंधत्व निवारण संघ के आप उपाध्यक्ष थे।

आपका निधन कलकत्ता में १६ जुलाई १९८१ ई० को हो गया। सुविख्यात उद्योगपति एवं लब्ध-प्रतिष्ठ समाज सेवी के रूप में आप स्मरणीय रहेंगे। •

श्रीमती शकुन्तला चिन्तामणि

आप का जन्म १९२१ ई० में हुआ। आपने एम. ए., साहित्य-रत्न की उपाधि प्राप्त की है।

प्रकृति से आप सहृदय एवं परोपकारी हैं। प्रगतिशील सामाजिक विचारों से ओत-प्रोत होते हुए भी आप धर्म में पूर्ण आस्था रखती हैं। नारी को समाज में गौरव एवं समान अधिकार मिले, इसके लिए आप सतत्



प्रयत्नशील तो रहती ही हैं; साथ ही साम्प्रदायिक एकता के लिए भी विशेष जागरुक हैं।

विभिन्न महिला संगठनों, सामाजिक एवं शिक्षण समितियों से आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हैं। श्री दिगम्बर जैन महिला परिषद की मन्त्रिणी होने के साथ ही गुजराती महिला मण्डल, जैन महिला समिति, माहेश्वरी महिला समिति शिल्प शिक्षण केन्द्र, मंजूषा, मनीषा, तेरापन्थी महिला परिषद, महिला आर्य समाज, मातृ समाज, नारी जागृति समिति, मारवाड़ी सम्मेलन, भारतीय संस्कृति संसद आदि संस्थाओं की आप सक्रिय सदस्या हैं। •

हिम्मत सिंह जैन

आप का जन्म १९२६ ई० में हुआ। बी. काम. एवम् एफ. सी. ए. की उपाधि प्राप्त कर चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट के रूप में आप कार्यरत हैं।

प्रकृति से आप सहृदय, कुशल संगठन कर्त्ता एवं निष्ठावान सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एवं धार्मिक संस्थाओं से आप घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध हैं। आप वीर शासन ट्रस्ट के प्रबन्धक ट्रस्टी,

श्री दिगम्बर जैन मेवाड़ प्रान्तिक महाविद्यालय के ट्रस्टी, श्री दिगम्बर जैन युवक समिति के अध्यक्ष, आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव समिति



(प० बं०) के उपाध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन विद्यालय तथा श्री दिगम्बर जैन रथयात्रा कमेटी के मन्त्री रह चुके हैं। २५०० वर्षीय भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति (स्टेट कमेटी बिहार), श्री बंगाल-बिहार-उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर, श्री जैन सभा, श्री दिगम्बर जैन दातव्य औषधालय आदि की कार्यकारिणी समिति के आप वरिष्ठ सदस्य भी रह चुके हैं। सेठ सूरजमल जालान गर्ल्स कालेज के आप सचिव हैं। •

कन्हैया लाल केजड़ीवाल

आप का जन्म २१ मार्च १९१५ ई० को चूड़ीग्राम (अजीतगढ़, राजस्थान) में हुआ। आप गुलराज केजड़ीवाल के पुत्र हैं। आपने मिडिल तक शिक्षा प्राप्त की। व्यावसायिक क्षेत्र में अपने संगठन कौशल के लिए आप लोकप्रिय हैं। कलकत्ता में वस्त्र व्यवसाय को सूत्र-बद्ध करने के लिए आपने अथक परिश्रम से टेक्सटाइल मर्चेण्टस एसोसियेशन की स्थापना करवाई और ४ वर्षों तक उसके सभापति भी रहे। भारत चेम्बर



आफ कामर्स की कार्यकारिणी के आप सुदीर्घ काल से सदस्य हैं। औद्योगिक क्षेत्र में भी आप सफल रहे और हावड़ा में एक डाई-कास्टिंग फैक्टरी भी स्थापित की है।

प्रकृति से आप धर्मपरायण एवं व्यवहार कुशल व्यक्ति हैं। समाज सेवा में आप का प्रबल अनुराग है। आप श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के सभापति भी रहे। सुदीर्घ काल से आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। सोसाइटी की विभिन्न उपसमितियों के सदस्य एवं आरोग्य भवन (राँची) के मन्त्री के रूप में आपने बड़े ही व्यवस्थित ढंग से सराहनीय सेवा कार्य किए हैं। अमहर्स्ट स्ट्रीट स्थित श्री विशुद्धानन्द सरस्वती अस्पताल की कार्यकारिणी के आप सदस्य हैं।

शिक्षा जगत से भी आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। बालिकाओं के शिक्षण में आपकी विशेष रुचि है। आप बालिका शिक्षा सदन की प्रबन्ध समिति के वरिष्ठ सदस्य हैं। अपने पिता की स्मृति में बम्बई के मारवाड़ी कमर्शियल स्कूल की १ मंजिल तथा अपने ग्राम के स्कूल में १ ब्लॉक आपने बनवाया है।

आप का संगठन कौशल एवं सेवानुराग अनुकरणीय है। •

स्व. हाफाराम खेमका

आप सुप्रतिष्ठित व्यवसायी एवं प्रबुद्ध संगठनकर्त्ता थे। अपनी दूरदर्शिता, निर्भीकता एवं अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने की क्षमता से आप तत्कालीन व्यवसायी समाज में अग्रगण्य हो गये थे।

१८३४ ई० में कलकत्ता चेम्बर आफ कामर्स तथा १८५३ ई० में बंगाल चेम्बर आफ कामर्स की स्थापना हुई। इन दोनों प्रतिनिधि संस्थाओं में अंग्रेज व्यापारियों का वर्चस्व था और इनके माध्यम से वे भारतीय व्यवसायियों (विशेष कर सूती वस्त्र आयातकों) पर मनमानी शर्त्तें थोप देते थे व विवाद उठने पर उनके खिलाफ गलत निर्णय भी दिलवाते थे। साथ ही वायदा सौदों पर भारतीयों को बहुत लम्बी रकम अग्रिम देनी पड़ती थी, जिसका उपयोग कर अंग्रेज कच्चा माल खरीद कर यहाँ से ले जाते और ब्रिटेन में अपनी मिलों में बनवा कर अनाप-शनाप भाव पर पुनः भारत को ही बेचते थे। इस धाँधली के विरोध में १८८७ ई० में एक तरफ तो बंगाल नेशनल चेम्बर आफ कामर्स की स्थापना हुई, तो दूसरी ओर आपके नेतृत्व में मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स का उदय हुआ। आप इस के संस्थापकों में तो थे ही, प्रथम सभापति भी मनोनीत हुए। इस संस्था के माध्यम से आपने अंग्रेज व्यापारियों की मनमानी का जम कर विरोध किया, फलतः भारतीय व्यवसायियों की स्थिति में भी पर्याप्त सुधार आया।

व्यापारिक संगठनों के आदि जनक के रूप में आप मारवाड़ी समाज में स्मरणीय रहेंगे। •

स्व. हीरालाल मुरारका

आप का जन्म ३१ दिसम्बर १८८६ ई० को हुआ था। अपनी कर्मठता एवं व्यावसायिक प्रतिभा के बल पर आपने पिपराइच (गोरखपुर) में डायमण्ड सुगर मिल की स्थापना की।

आप प्रकृति से गम्भीर, मृदुभाषी एवं सनातन धर्म के प्रति आस्थावान थे। धार्मिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों को दूर करने में आप सदैव तत्पर रहते थे। श्राद्ध पर द्वादश खर्च को बन्द करवाने में आप का महत्वपूर्ण योग रहा। सट्टा या फाटका खेलने तथा मादक द्रव्यों के सेवन के आप अन्यतम विरोधी थे। तत्कालीन मारवाड़ी समाज के नेताओं पर आप अंकुश रखते थे और उन्हें लोक कल्याणकारी कार्यों में प्रवृत्त कराते थे।

आपका विभिन्न सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध था। आप कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी तथा मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के सभापति, मारवाड़ी एसोसियेशन के उपसभापति, पोद्दार छात्र निवास तथा मारवाड़ी ब्राह्मण भवन के सक्रिय सहयोगी थे। नवलगढ़ (राजस्थान) के विद्यालय, पिंजरापोल, औषधालय एवं पुस्तकालय के आप सभापति एवं मन्त्री पद पर रहे। धर्म सांड सहायक समिति एवं नवद्वीप भजनाश्रम के आप सहायक थे।

राजनीतिक क्षेत्र में भी आपकी धाक थी। पं० मदनमोहन मालवीय तथा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध था। आप बम्बई में ७ अप्रैल १९६८ ई० को गोलोकवासी हुए।

संयमित जीवन एवं सार्वजनिक सेवा में आप का प्रबल अनुराग सामाजिक उत्थान के लिए हमारा पथ-प्रदर्शक रहेगा। •

स्व. लोकनाथ ढांढनिया

आप सुप्रसिद्ध वस्त्र-व्यवसायी थे। प्रकृति से ही आप धर्मपरायण, सेवाव्रती एवं परमार्थी थे।

आप मारवाड़ी सहायक समिति (सम्प्रति मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी) के संस्थापकों में

एक थे। आपकी ही जोड़ा कोठी (तुलापट्टी) वाली गद्दी (मे० रामकृष्ण चण्डीप्रसाद) में



ओंकारमल सराफ एवं अन्य संस्थापकगण एकत्र हुए और इस ऐतिहासिक संस्था की स्थापना की गई। जुगलकिशोर बिड़ला इस संस्था के प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुए और आप को उपाध्यक्ष बनाया गया। शीघ्र ही ४२/२, बांसतल्ला स्ट्रीट में समिति का कार्यालय खुल गया। आपने इस संस्था की उन्नति में सोत्साह अथक परिश्रम किया। •

स्व. देवी प्रसाद खेतान

आप का जन्म १४ अगस्त १८८८ ई० को मेदिनीपुर में हुआ था। आप नौरंग राय खेतान के पुत्र थे। १९०२ ई० में आपने पटना डिवीजन से मैट्रिक परीक्षा में सर्वोच्च



स्थान और छात्रवृत्ति भी प्राप्त की। प्रेसीडेंसी कालेज से आपने बी. ए. किया, तब देशरत्न डॉ० राजेन्द्र प्रसाद आपके सहपाठी थे। प्रख्यात एटर्नी धन्नूलाल अग्रवाल के संरक्षण में आपने विधि ज्ञान प्राप्त किया और १९११ ई० में एटर्नी हो कर अपनी 'खेतान एंड कम्पनी' स्थापित कर ली। मारवाड़ी एसोसियेशन ने आपको इस सफलता पर 'स्वर्ण-पदक' से अलंकृत किया। कलकत्ता उच्च न्यायालय में आप देशबन्धु चित्तरंजन दास के सहायक थे। उनकी अनुपस्थिति में भी आपने मुकदमों को इतने सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया कि सर्वत्र बहु-प्रशंसित हो गए।

१९०५ ई० में बंग-भंग विरोधी राष्ट्रीय आन्दोलन में आपने भी रुचि ली। १९१९ ई० में रामदेव चोखानी के सहयोग से आपने मांटेग्यू चेम्सफोर्ड से मिल कर राजस्थानी प्रवासियों को विभिन्न राज्यों में नागरिक बनने का अधिकार दिलवाया। १९२० ई० में रेलवे कमीशन के समक्ष अपनी दलील में आपने इस बात पर बल दिया कि रेलवे का संचालन भारत सरकार द्वारा होना चाहिए न कि निजी ब्रिटिश कम्पनी द्वारा। प्रलोभन देकर भोले-भाले निर्धन भारतीय किसानों को अंग्रेज विदेशों में भेज कर कुलीगिरी करवाते थे और स्वदेश लौटने भी नही देते थे। इस अत्याचार के विरोध में आपने 'एण्टी इण्डेंचर्ड एग्रीगेशन लीग' की स्थापना की और १९१६ ई० में वाइस राय कौंसिल में इस प्रश्न को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया जिसके फलस्वरूप १९२० ई० से इस दुष्प्रथा का अन्त हो गया। आपकी सराहनीय सार्वजनिक सेवाओं से प्रभावित हो १९२१ ई० में बंगाल सरकार ने कलकत्ता नगर निगम के भारतीयकरण की नीति के तहत आपको पार्षद मनोनीत किया। १९२२ ई० में आप लेजिस्लेटिव कौंसिल के भी सदस्य बना दिए गए। १९२३ ई० में कलकत्ता कॉरपोरेशन एक्ट तैयार करने में आपने सुरेन्द्र

नाथ बनर्जी को सहयोग दिया। स्वाधीनता प्राप्ति के उपरान्त संविधान सभा का जब गठन हुआ, तब आप भी उसके सदस्य मनोनीत हुए।

१८ वर्ष की तरुणावस्था से ही आप सामाजिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं में रुचि लेने लगे। श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय एवं मारवाड़ी एसोसियेशन से आप घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध रहे। मेरठ की वैश्य सभा का २० वाँ अधिवेशन जब कलकत्ता में हुआ, तब आप उसकी स्वागत समिति के सचिव थे। १९३४ ई० में उज्जैन में अग्रवाल महासभा का अधिवेशन आपकी अध्यक्षता में हुआ। १९१६ ई० में जब मारवाड़ी सहायक समिति परिवर्त्तित हो मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी बनी, तब आप उसके प्रथम सचिव निर्वाचित हुए। आप समाज-सुधार के प्रबल समर्थक थे, विशेषतः पुनर्विवाह के।

१९१९ ई० में आप बिड़ला ब्रदर्स लि० के जेनरल मैनेजर तथा कानूनी सलाहकार बनाए गए। १९२२ ई० में आप विनिमय दर सम्बन्धी कार्यों में दिलचस्पी लेने लगे तथा इम्पीरियल प्रिफेंरस के विरुद्ध अभियान ही छेड़ दिया। १९२६-२७ ई० में घनश्याम दास बिड़ला, पुरुषोत्तम दास ठाकुरदास आदि मूर्धन्य उद्योगपतियों के साथ मिलकर आपने फेडरेशन आफ इण्डियन चेम्बर्स आफ कामर्स एण्ड इण्डस्ट्री (फिक्की) की स्थापना में भाग लिया एवं उसका विधान भी आपने ही बनाया। १९२८ ई० में जिनेवा में आयोजित इण्टरनेशनल लेबर कांफ्रेस में भाग लेने गए भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के परामर्शदाता के रूप में आप भी गए। आप १९३४ ई० में बंगाल मिल ओनर्स एसोसियेशन तथा १९३६ ई० में 'फिक्की' व इण्टरनेशनल चेम्बर आफ कामर्स (भारत शाखा) के अध्यक्ष निर्वाचित हुए।

२ मार्च १९४८ ई० को आप का निधन हुआ। अपनी बहुमुखी प्रतिभा एवं सार्वजनिक सेवाओं के लिए आप स्मरणीय रहेंगे। •

स्व. काली प्रसाद खेतान

आप नौरंगराय खेतान के पुत्र थे। एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप ने बैरिस्टरी की शिक्षा प्राप्त करने हेतु इंगलैण्ड जाने का निश्चय किया।



तत्कालीन रूढ़िवादी मारवाड़ी समाज में विदेश यात्रा पर प्रतिबन्ध लगा हुआ था। प्रायः २५ वर्ष पूर्व विदेश से लौटने पर इन्द्रचन्द दुधोड़िया एवं इन्द्रचन्द नाहटा को प्रबल सामाजिक विरोध एवं जाति बहिष्कार का सामना करना पड़ा था, फलतः वे दोनों पुनः विदेश लौट गए थे। ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में यह एक साहसिक कदम था। आपके पिता की सामाजिक ख्याति एवं मिलनसारिता तथा चिम्मनलाल गनेड़ीवाल के सहयोग से इस कार्य में मारवाड़ी एसोसियेशन एवं मारवाड़ी समाज के उदार वर्ग की सहानुभूति आप को प्राप्त हो गई।

१९११ ई० में श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के भवन-निर्माण का शिलान्यास कलकत्ता विश्वविद्यालय के कुलपति स्वनामधन्य सर आशुतोष मुखर्जी ने किया। उसी समय आम सभा में उन्होंने आपकी विदेश यात्रा की घोषणा की, जिसका उपस्थित जन-समुदाय ने स्वागत किया। परन्तु आपको

विदेश से लौटने पर पुनः कट्टरपन्थी रूढ़िवादियों के प्रबल विरोध एवं जाति बहिष्कार का सामना करना पड़ा। विडम्बना यह थी कि प्रोत्साहनकर्त्ता चिम्मनलाल गनेड़ीवाल भी विरोधी बन गये थे। कालान्तर में तीर्थयात्रा करने पर आपको पुनः समाज ने अंगीकार कर लिया।

आप प्रकाण्ड विद्वान थे। सुप्रसिद्ध राजनेता चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य ने कलकत्ता में जब भी सार्वजनिक मंच पर भाषण किए, तब उनका अंग्रेजी से हिन्दी में धाराप्रवाह अनुवाद आपने ही किया। सामाजिक सेवा के कार्यों में आपकी विशेष अनुरक्ति थी। श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के आप सचिव भी रहे। ●

स्व. दुर्गा प्रसाद खेतान

आप का जन्म १८९२ ई० में हुआ। सुविख्यात समाजसेवी नौरंगराय खेतान के आप पुत्र थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान के साथ बी. ए., एम. ए. तथा बी. एल. की परीक्षाएँ आपने



उत्तीर्ण कीं। कलकत्ता उच्च न्यायालय की परीक्षा में भी सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर आप १९१७ ई० में एटर्नी हुए। कालान्तर में आप लब्ध-प्रतिष्ठ एडवोकेट तथा नोटरी (पब्लिक) हुए। १९१९ ई० में जब अग्रज देवी प्रसाद खेतान एटर्नी का काम छोड़ कर बिड़ला ब्रदर्स में चले गए, तब आपने बड़ी कुशलता से 'खेतान एण्ड कम्पनी' सोलीसीटर फर्म के सब अदालती काम सँभाल लिए। शीघ्र ही आप की गणना मूर्धन्य एटर्नियों में होने लगी।

सार्वजनिक सेवा कार्यों में आपकी रुचि थी। ६ वर्षों तक आप कलकत्ता नगर निगम के पार्षद रहे। १९३४ ई० में आप ईस्ट इंडियन रेलवे कम्पनी तथा कलकत्ता परिवहन की परामर्शदातृ समितियों के सदस्य मनोनीत हुए। इन समितियों के माध्यम से जनता की सुविधा के लिए कई नई योजनाएँ आपने कार्यान्वित करवाईं। आपके ही प्रयत्न से रेलगाड़ियों में भोजन-यान जुड़ना प्रारम्भ हुआ। १९३६ ई० में कलकत्ता में आयोजित अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के अधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष निर्वाचित हुए। हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार में आप का विशेष अनुराग था। मूक पशुओं की रक्षा के लिए आपने बहुविध कार्य किए।

१९३९ ई० में ही अस्वस्थता के कारण एटर्नीशिप से अवकाश ले आप भारत इंश्योरेंस कम्पनी के वाइस-चेयरमेन हो गए। ●

भगवती प्रसाद खेतान

आप का जन्म ९ जुलाई १९०४ ई० को बक्सर (बिहार) में हुआ। आप के पिता



सुविख्यात समाजसेवी नौरंगराय खेतान थे।

आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. (आनर्स) एवं बी.एल. की उपाधि प्राप्त कर अग्रज दुर्गा प्रसाद खेतान के सानिध्य में 'खेतान एण्ड कम्पनी' में एटर्नीशिप का अध्ययन किया। १९३० ई० में आप कलकत्ता उच्च न्यायालय की परीक्षा में उत्तीर्ण हो एटर्नी बन गये। आपके कुशल संचालन में आज खेतान एंड कम्पनी अग्रगण्य सोलीसिटर फर्म के रूप में विख्यात है। इनकारपोरेटेड ला सोसाइटी, लीगल एड सोसाइटी, इंडियन ला इंस्टीच्यूट आदि कानूनी संगठनों के आप वरिष्ठ सदस्य हैं।

बड़ाबाजार के सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के विभिन्न सेवा शिविरों में आप ने सोत्साह भाग लिया। बड़ाबाजार लाइब्रेरी जब घोर विशृंखलता की स्थिति में पहुँच गई, तब आप ने उसके पुनरुद्धार में सहयोग किया। १९२८ ई० में पोद्दार छात्र निवास के अन्तर्गत स्थापित मारवाड़ी छात्र संघ के आप अध्यक्ष बने।

शिक्षण जगत से आपका गहरा तादात्म्य रहा है। श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय, श्री शिक्षायतन (स्कूल और कालेज) तथा मारवाड़ी बालिका विद्यालय के आप अध्यक्ष रह चुके हैं। बालीगंज शिक्षा सदन की स्थापना में आपने सक्रिय सहयोग किया। रामकृष्ण मिशन इंस्टीच्यूट आफ कल्चर तथा ज्योतिर्मय क्लब से भी सक्रिय रूप में सम्बद्ध है। बिड़ला एजूकेशन ट्रस्ट, विश्वमंगल ट्रस्ट, रघुमल चैरिटी ट्रस्ट, रायबहादुर विश्वेश्वर लाल हलवासिया ट्रस्ट, बजाज चैरिटेबल ट्रस्ट, भुवालका जन कल्याण ट्रस्ट, ज्वाला प्रसाद भरतिया ट्रस्ट, नन्दलाल भरतिया ट्रस्ट आदि विभिन्न न्यासों के ट्रस्टी पद से जन-कल्याण हेतु आप सदैव सचेष्ट रहते हैं।

उद्योग एवं व्यवसाय जगत के अपने व्यापक अनुभव के आधार पर आप अनेक लब्ध-प्रतिष्ठ कम्पनियों के डायरेक्टर एवं चैयरमेन रहे।

प्राचीन आदर्शों के आप संरक्षक हैं और सर्जनात्मक कार्यों में प्रबुद्ध मार्गदर्शक। •

स्व. मंगतूराम जयपुरिया

आप का जन्म २२ फरवरी १९०१ ई० को नवलगढ़ (राजस्थान) में हुआ। आप आनन्दराम जयपुरिया के पुत्र थे। अपनी प्रबन्ध-कुशलता एवं दूरदर्शिता के बल पर आपने पैतृक व्यवसाय को खूब बढ़ाया और



अपार सम्पदा अर्जित की। स्वदेशी कॉटन मिल्स आपका प्रसिद्ध संस्थान था। संगठित उद्योगों के विकास हेतु उत्तर प्रदेश तथा राजस्थान राज्य सरकारों द्वारा नियुक्त परामर्शदातृ समिति के आप वरिष्ठ सदस्य थे।

धार्मिक और सार्वजनिक सेवा कार्यों में आपकी गहन अभिरुचि थी। आप श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल तथा बंगीय सहायता उपसमिति के अध्यक्ष; मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, ढाका दंगा सहायता उपसमिति, तुलसी स्मारक समिति, इन्टरनेशनल क्लब तथा कानपुर रोटरी क्लब के वरिष्ठ सदस्य रहे। नवलगढ़ की प्रायः सभी संस्थाओं को आपका सक्रिय सहयोग प्राप्त था।

शिक्षण जगत से आपका गहरा तादात्म्य

रहा। अनेक शिक्षण संस्थाओं की स्थापना एवं विकास में आप की विशेष भूमिका रही। १९४५ ई० में आपने सेठ आनन्दराम जयपुरिया कालेज आफ आर्टस् साइन्स एण्ड कामर्स की स्थापना की जिसका उद्घाटन पं० जवाहरलाल नेहरू ने किया। सेठ आनन्दराम जयपुरिया कालेज तथा होस्टल (आनन्द नगर), सेठ गजाधर जयपुरिया इंटर कालेज (नवलगढ़), जयपुरिया केन्द्र हाईस्कूल तथा छात्रावास (पाण्डेश्वर), जयपुरिया बाल मंदिर (सामला), जयपुरिया विद्या मन्दिर (कानपुर) आदि शैक्षणिक संस्थाओं की स्थापना में आपकी विशेष भूमिका रही।

नवलगढ़ में १७५ शैया वाले सेठ आनन्दराम जयपुरिया नेत्र अस्पताल का निर्माण भी आपने करवाया। इसके अतिरिक्त वाराणसी, वृन्दावन, हरिद्वार, विंध्याचल तथा चित्रकूट तीर्थस्थलों पर यात्रियों की सुविधार्थ आपने अतिथि गृहों का निर्माण करवाया जो अपने सुप्रबन्ध के लिए सुविख्यात हैं।

आपके द्वारा स्थापित विभिन्न सार्वजनिक सेवा संस्थान आपकी स्मृति के अक्षय कीर्त्ति-स्तम्भ हैं। ●

कमल कुमार जैन

आप का जन्म १९३० ई० में हुआ। बी. काम., एल-एल. बी. एवं एफ. सी. ए.



की उपाधि प्राप्त कर आप चार्टर्ड एकाउण्टेण्ट के रूप में कार्यरत हैं।

आप धर्मानुरागी, सहृदय एव कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। अपनी बहुमुखी प्रतिभा एवं दूरदर्शिता से आपने विभिन्न सामाजिक आयोजनों की सफलता में प्रमुख दायित्व का निर्वाह किया है।

श्री जैन सभा एवं आल इंडिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव समिति (प० बं०) के आप मंत्री रह चुके हैं। सम्प्रति आप श्री बंगाल-बिहार-उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के मंत्री एवं जैन युवा संगठन व भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष हैं। ●

श्रीचन्द मोदी

आप का जन्म सम्वत् १९६४ में हुआ। आपने मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। सम्प्रति होजयारी व्यवसाय में संलग्न हैं। भारत चेम्बर आफ कामर्स तथा मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स के आप सदस्य हैं।



स्वभाव से आप उदार, मिलनसार एवं कर्मठ व्यक्ति हैं। श्री दिगम्बर जैन युवक समिति तथा श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर के आप मन्त्री रह चुके हैं। गो सेवा में आपकी विशेष अनुरक्ति है। चुरू पिंजरापोल सोसाइटी के मन्त्री के रूप में आपने संस्था की उन्नति में विशेष सहयोग किया।

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के आप विभागीय मन्त्री पद पर रहे। कुरीतियों को दूर करने के लिए हुए समाज सुधार आन्दोलनों में आपने सक्रिय भाग लिया, यथा पर्दा प्रथा विरोध आदि।

किशोरी लाल ढांढनिया

आप का जन्म १२ फरवरी १९१३ ई० को अमरावती (महाराष्ट्र) में हुआ। आप के पिता डेडराज ढांढनिया थे। आप की शिक्षा-दीक्षा कलकत्ता में ही हुई। छात्र जीवन में स्काउटिंग के ट्रूप लीडर के रूप में आपने दार्जिलिंग शिविर में भाग लिया था।



राजनैतिक क्षेत्र में आप की विशेष भूमिका रही है। आप कलकत्ता नगर निगम के पार्षद, विभिन्न महत्वपूर्ण उपसमितियों के अध्यक्ष तथा उप-महापौर रहे। १९६४ ई० में आप पश्चिम बंग विधान परिषद के सदस्य बने।

आप विभिन्न सामाजिक, शैक्षणिक एवं सार्वजनिक संस्थाओं से सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं, यथा – मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, श्री विशुद्धानन्द हास्पिटल, लोहिया मातृ सेवा सदन, पंजाब सेवा समिति, कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, पोद्दार छात्र निवास, सावित्री पाठशाला, ज्ञान भारती, बड़ाबाजार लाइब्रेरी, बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय आदि। अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के चौथे अधिवेशन के आप सभापति थे।

आप ने भारत चेम्बर आफ कामर्स के अध्यक्ष पद पर रह कर प्रभावशाली ढंग से काम किया। आपके अध्यक्षता काल में मोरारजी देसाई, डॉ० विधान चन्द्र राय एवं लाल बहादुर शास्त्री जैसे गणमान्य राजनेताओं का चेम्बर में स्वागत किया गया। १९६४ ई० में आप बिहार चेम्बर आफ कामर्स के अध्यक्ष बने।

आज भी आप सक्रिय रूप से सामाजिक कार्यों में भाग ले रहे हैं और अपने गुणों से समाज को लाभान्वित कर रहे हैं। ●

पुरुषोत्तम दास हलवासिया

आप का जन्म ६ मई १९२१ ई० को राउरकेला (उड़ीसा) में हुआ। आप कालूराम खेतान के पुत्र हैं। जब आप ४ वर्ष के थे, तभी मोतीलाल हलवासिया की अकस्मात् मृत्यु के उपरान्त उनकी पत्नी ने आपको दत्तक ले लिया। आपने कलकत्ते में ही इण्टरमीडियेट (प्रथम वर्ष) तक शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन में स्काउटिंग, साहित्य-प्रतियोगिता, कविता-पाठ एवं नाटकों में भाग लेते रहे, साथ-साथ लेख एवं कविता भी लिखते रहे। जो पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहते थे। १३ वर्ष की अल्पायु में ही आप मारवाड़ी सभा पुस्तकालय के मन्त्री हो गए।

१९३७ ई० में आप ने वस्त्र व्यवसाय में प्रवेश किया, फिर १९४३ ई० में शेयर बाजार में अपनी क्षमता दिखलाई। उद्योग क्षेत्र में पाईप फैक्टरी बैठाई और जूट का उत्तम निर्यात किया। ग्रेफाइट एवं खनिजों का भी आपका अच्छा व्यवसाय है।

आप कर्मठ एवं विचारवान व्यक्ति हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आप तरुणावस्था से ही स्वयंसेवक हैं। भारतीय संस्कृति एवं हिन्दी भाषा के उन्नयन में आप सतत् प्रयत्नशील रहते हैं।



१९४३ ई० से ही आप अपने सुविख्यात पैतृक न्यास 'हलवासिया ट्रस्ट' के संयोजक ट्रस्टी हैं और इसके द्वारा प्रति वर्ष देश भर की सार्वजनिक एवं धार्मिक सेवा संस्थाओं को लाखों रुपयों का अनुदान दिया जाता है। १९४६ ई० में आपने 'आर्यावर्त प्रकाशन गृह' स्थापित किया जिसके माध्यम से सत्-साहित्य प्रसार के साथ कई लोकोपयोगी ग्रन्थ प्रकाशित किये गए। उसी वर्ष आपने 'आर्यावर्त संस्कृति संसद' स्थापित की, जो कालान्तर में 'भारतीय संस्कृति संसद' बन गई। हरियाणा छात्र परिषद (१९६१ ई०), हरियाणा मित्र मण्डल (१९६२ ई०), कलकत्ता नागरिक संघ एवं देवालय संरक्षण समिति (१९८१ ई०) की स्थापना में आपने मुख्य रूप से भाग लिया। १९६२ ई० में 'जन कल्याण ट्रस्ट' की स्थापना कर आपने भिवानी में 'हलवासिया बाल मंदिर' बनवाया जिसमें २००० छात्र-छात्राएँ अध्ययनरत हैं।

आप विभिन्न सार्वजनिक एवं सामाजिक सेवा संस्थाओं से सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं, यथा – कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, बाबा काली कमलीवाला पंचायत क्षेत्र, आदि। हरियाणा चेरिटेबुल ट्रस्ट के आप उपाध्यक्ष रह चुके हैं। सार्वजनिक संस्थाओं पर एकाधिपत्य जमानेवालों के आप विरोधी तथा सेवाभावी कार्यकर्त्ताओं के प्रति संवेदनशील हैं।

१९३९ ई० में शान्ति निकेतन में 'हिन्दी भवन' की स्थापना आपके ट्रस्ट से हुई, जिसमें हलवासिया भाषण माला एवं हलवासिया ग्रन्थ माला का प्रारंभ किया गया। इस योजना में हिन्दी भाषा के अनेक श्रेष्ठ शोध ग्रन्थों का प्रकाशन आपकी प्रेरणा से हो रहा है। शिक्षा पद्धति में मौलिक परिवर्तन के आप पक्षधर हैं तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से अपना दृष्टिकोण प्रकट करते रहते हैं।

भारतीय राजनीति में आप राष्ट्रवाद के पक्षधर हैं। भारतीत जनसंघ के प्रतिनिधि के रूप में आपने पश्चिम बंगाल विधान सभा के निर्वाचनों में भाग लिया। १९४८ ई० एवं १९६४ ई० में आपने जेल यात्रा भी की। हरियाणा प्रदेश के निर्माण हेतु जो आन्दोलन हुआ, उसमें आप विशेष सक्रिय रहे।

समाज, शिक्षा एवं संस्कृति में आई विकृतियों को दूर करने के लिए आप का अथक प्रयास अनुकरणीय है। ●

बासदेव थरड़

आप का जन्म माघ शुक्ला त्रयोदशी सम्वत् १९६३ को नवलगढ़ में हुआ। ९ वर्ष की आयु में आप परिवार सहित कलकत्ता आये। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आपने बी. ए. (आनर्स) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आप सफल व्यवसायी हैं। मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स के आप सक्रिय सदस्य हैं।

सामाजिक एवं सार्वजनिक सेवा प्रतिष्ठानों से आप प्रारम्भ से ही सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। श्री बड़ाबाजार युवक सभा,



बंगाल मारवाड़ी युवक सम्मेलन तथा बड़ा-बाजार लाइब्रेरी के आप सदस्य रह चुके हैं। आप नवलगढ़ विद्यालय तथा बंगाल प्रान्तीय स्काउट एसोसियेशन के मन्त्री; बड़ाबाजार कांग्रेस कमेटी के सेवा मन्त्री; मारवाड़ी बालिका विद्यालय की कार्यकारिणी एवं नीलरतन सरकार अस्पताल की परामर्शदातृ समिति के सदस्य रहे।

१९४१ ई० में मेदिनीपुर में आपने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी द्वारा किए गए बाढ़ पीड़ितों के सेवा-कार्य का संचालन किया। आप सोसाइटी के अस्पताल विभाग के संयुक्त संयोजक तथा आउटडोर विभाग के मन्त्री रह चुके हैं। अपनी सेवा के बल पर दो-तीन वर्षों तक आपने सोसाइटी के प्रधान मंत्री के पद पर सफलता पूर्वक कार्य किया। अपर इंडिया क्लब, युगान्तर क्लब, अखिल भारतीय मारवाड़ी एसोसियेशन, एशियाटिक सोसाइटी आदि से आप सम्बद्ध हैं।

स्काउटिंग में आप की विशेष रुचि है। १९३७ ई० में कलकत्ता में आयोजित अखिल भारतीय स्काउट जम्बूरी के आप संचालक तथा मन्त्री थे। विंध्याचल व दार्जिलिंग स्काउट शिविरों के आप प्रधान रहे। १९२९ ई० में भारतीय आंचलिक सेना में आप लेफ्टिनेंट के पद तक पहुँचे।

अपनी संगठन प्रतिभा एवं सेवा-निष्ठा से आप सार्वजनिक क्षेत्र में लोकप्रिय कार्यकर्त्ता हैं। ●

बजरंग लाल सोमानी

आप का जन्म फाल्गुन कृष्ण १५ संवत् १९६९ में बक्तावरपुरा (झुंझनू) में हुआ। आप के पिता का नाम विशेश्वर लाल सोमानी था। आप प्रतिष्ठित व्यवसायी हैं तथा 'टेक्सटाइल मर्चेण्टस् एसोसियेशन' के विशेष सहयोगी।



आप बहुत उत्साही एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। 'मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी' के विभिन्न पदों पर रह कर आपने समाज की विशेष सेवा की है। इसकी आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए समय-समय पर आपने सदस्यता अभियान चलाये तथा चंदा एकत्र किया। सोसाइटी द्वारा संचालित भ्रमणशील-चिकित्सा-यान के द्वारा गरीब बस्तियों एवं तारकेश्वर मेला में रोगियों की चिकित्सा में आपने स्वयं भाग लिया। सेवादल (बिलासराय कटरा) से भी आप सक्रिय रूप से सम्बद्ध हैं। १९६२ ई० में चीन द्वारा भारत पर हुए हमले के समय 'ताराचन्द जकरिया स्ट्रीट मोहल्ला कमेटी' की तरफ से मुख्य मन्त्री कोष के लिए अनुदान एकत्र करने में आपने सक्रिय भाग लिया।

धार्मिक कार्यों में भी आपका विशेष

अनुराग है। १६४८ ई० में जकरिया स्ट्रीट स्थित जबरेश्वर महादेव की प्राण-प्रतिष्ठा कराने में आपकी विशेष भूमिका रही।

अपने जन्म स्थान वक्तावरपुरा में जनकल्याण सेवा समिति के तत्वावधान में आपने धर्मशाला का निर्माण करवाया है।●

नेमिचन्द कन्दोई

आप का जन्म २१ जुलाई १६२१ ई० भरूंगामारी (पूर्वी बंगाल) में हुआ। आप के पिता पन्नालाल कन्दोई थे। १६३७ ई० में मैट्रिक पास कर आप व्यवसाय में संलग्न हो गए।



सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में आपकी गहरी अभिरुचि है। आप सरदार शहर परिषद के संस्थापक एवं सभापति, यौगिक संघ के सभापति एवं मन्त्री तथा अग्रसेन स्मृति भवन के ट्रस्टी एवं मन्त्री रह चुके हैं।

आप को अपने पूर्वजों की भूमि सरदार शहर से विशेष अनुराग है। वहाँ के सार्वजनिक पुस्तकालय के मन्त्री पद से आपने उसकी उन्नति में विशेष योगदान किया। सम्प्रति सरदारशहर गौशाला के ट्रस्टी एवं मन्त्री हैं। गांधी विद्या मन्दिर, बालिका विद्यालय, बाल मन्दिर आदि सरदारशहर की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। ●

रामचन्द्र फूलफगर

आप का जन्म कार्तिक कृष्णा १५ संवत् १६८२ को लाडनूं (राजस्थान) में हुआ। सम्प्रति कलकत्ता ही आपका कार्यस्थल है।



बाल्यावस्था से ही आप सार्वजनिक सेवा कार्यों में संलग्न हैं। आप ओसवाल भवन के ट्रस्टी, जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी विद्यालय तथा बालिका विद्या भवन के मंत्री, जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी महासभा तथा ओसवाल नवयुवक समिति के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता रह चुके हैं। राजस्थान से आए सैकड़ों युवकों को आजीविका अर्जित करने में आपने सहयोग किया है।

लाडनूं की सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाओं में आपका विशेष अनुराग है, यथा—ओसवाल सभा, जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा, जे. बी. हायर सेकेण्डरी स्कूल, स्वास्थ्य निकेतन आदि। लाडनूं में आयोजित राज्य स्तर की अनेक क्रीड़ा प्रतियोगिताओं के आप निर्णायक रह चुके हैं।

आप बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी एवं निःस्वार्थ समाजसेवी हैं। ●

दीपचन्द नाहटा

आप का जन्म ११ नवम्बर १६२६ ई० को सरदारशहर (राजस्थान) में हुआ। आप के पिता कुन्दनमल नाहटा थे। १६४१

ई० में स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय सहयोग के कारण आप को विद्यालय से निष्कासित कर दिया गया। कालान्तर में कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. काम. कर आप चाय उद्योग में संलग्न हैं। आप इण्डियन टी प्लाण्टर्स एसोसियेशन तथा नेशनल एलायंस आफ यंग एण्टरप्रेन्योर्स के उपाध्यक्ष; टी एसोसियेशन आफ इण्डिया, टी बोर्ड आफ इण्डिया, भारत चेम्बर आफ कामर्स तथा कलकत्ता चेम्बर आफ कामर्स के कार्यकारिणी सदस्य रह चुके हैं।



अनेक सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं से भी आप सम्बद्ध हैं। आप अणुव्रत समिति (प० बंगाल) के अध्यक्ष, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के महासचिव, सरदारशहर परिषद तथा जैन श्वेताम्बर महासभा के कार्यकारिणी सदस्य रह चुके हैं।

समाज सुधार आन्दोलनों में आप की विशेष रुचि है। १९४७ ई० में सरदारशहर में हुए पर्दा निवारण आन्दोलन के आप सचिव थे, जिसके समर्थन में जानकी देवी बजाज, सीताराम सेकसरिया, बनवारीलाल सिंघी सदृश समाजसेवी वहाँ गए।

आप प्रबुद्ध एवं कर्मठ समाजसेवी हैं। ●

अभिमन्यु भुवालका

आप का जन्म १२ जुलाई १९२६ ई० को कलकत्ता में हुआ। प्रसिद्ध समाजसेवी रामकुमार भुवालका आप के पिता थे। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर आप पैतृक व्यवसाय में संलग्न हो गये।



आप भुवालका जनकल्याण ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी हैं, जिससे प्रति वर्ष लाखों रुपये सार्वजनिक सेवा संस्थाओं को जनकल्याण कार्यों हेतु अनुदान दिए जाते हैं। बाबा काली कमलीवाला पंचायत क्षेत्र के भी आप ट्रस्टी हैं। श्री विशुद्धानंद मारवाड़ी अस्पताल के आप उपसभापति हैं। भारत आरोग्य मन्दिर एवं मारवाड़ी बालिका विद्यालय में आप सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। ●

नन्दलाल सुरेका

आप का जन्म ७ अगस्त १९२८ ई० को मुकुन्दगढ़ (राजस्थान) में हुआ। आप के पिता बैजनाथ सुरेका थे। बी० कॉम० तक शिक्षा प्राप्त कर आप खनिज व्यवसाय में संलग्न हैं।



आप अनेक सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थाओं से घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध हैं। सुप्रसिद्ध नाट्य-संस्था 'अनामिका' के आप संस्थापक सदस्य हैं। अनामिका कला संगम के आप संस्थापक सदस्य तथा निदेशक हैं। आप तरुण संघ, मारवाड़ी छात्र संघ तथा बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के सहायक सचिव ; मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के विभागीय सचिव तथा आल इण्डिया मारवाड़ी फेडरेशन की सामाजिक सुधार समिति के अध्यक्ष रह चुके हैं। आप हिन्दी हाई स्कूल की कार्य समिति के सदस्य तथा विद्या मन्दिर के सचिव हैं।

क्रीड़ा-जगत में आप की अनुरक्ति है। युगान्तर क्लब के आप सचिव हैं तथा अमेचर स्पोर्ट्स क्लब के विभागीय सचिव। व्यावसायिक संगठन कलकत्ता जूनियर चेम्बर की सांस्कृतिक समिति के आप अध्यक्ष हैं तथा विकास के सभापति।

आप कर्मठ एवं उत्साही सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। •

सुखाराम शर्मा

आप का जन्म ५ सितम्बर १९२९ को बाल समन्द (राजस्थान) में हुआ। आप के



पिता लादूराम शर्मा थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आपने बी. काम. किया।

छात्र जीवन से आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सक्रिय सदस्य हैं। १९४८ ई० में संघ पर प्रतिबन्ध लगने के फलस्वरूप संघ के सत्याग्रहियों के साथ ६ माह तक जोधपुर सेन्ट्रल जेल में आप कैद रहे। आप भारतीय जनसंघ की स्थापना से ही उसके निष्ठावान सदस्य हैं। आप कलकत्ते की अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं, यथा—कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी (लिलुआ) के सहमंत्री ; श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय, भारतीय भाषा परिषद, श्री विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल, डीडवाना नागरिक सभा आदि के सक्रिय सदस्य एवं श्री रघुमल चैरिटी ट्रस्ट के प्रबन्धक हैं।

आप व्यवहारकुशल एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। •

जुगलकिशोर जैथलिया

आप का जन्म आश्विन शुक्ल १३ सम्वत् १९९४ (१९३७ ई०) में छोटीखाटू (नागौर) में हुआ। कन्हैयालाल जैथलिया के आप पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आपने एम. काम. एवं एल. एल-बी. परीक्षा उत्तीर्ण कीं। सम्प्रति आयकर सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं।

विद्यार्थी काल से ही साहित्य के प्रति लगाव रहा। अपने गाँव छोटीखाटू में जन-सहयोग से आपने एक विशाल पुस्तकालय स्थापित किया, जिसके विभिन्न साहित्यिक आयोजनों में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा एवं गुरुदत्त जैसे मूर्धन्य मनीषी आप के प्रयत्नों से शामिल हुए। १९७१ से १९७५ ई० तक आप सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय के मन्त्री रहे। १९७४ से १९७७ ई० तक श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मन्त्री (सम्प्रति उपाध्यक्ष) के



रूप में इस संस्था के गौरव को पुनर्प्रतिष्ठित करने का श्रेय आप को है। आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं विश्व हिन्दू परिषद् के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता हैं तथा राजस्थान परिषद के संस्थापक सदस्य एवं अर्थ-मन्त्री। आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के आरोग्य भवन (रांची) की उपसमिति के भी सदस्य हैं।

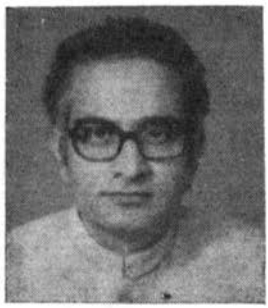
आप के सम्पादन में श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय से शिवाजी राज्यारोहण त्रिशताब्दी, हल्दीघाटी चतु:शती, वन्देमातरम् शत्वार्षिकी, सूरदास पंचशती एवं बालवर्ष आदि स्मारिकाएँ प्रकाशित हुईं, जिनकी साहित्यिक क्षेत्र में सर्वत्र सराहना हुई। श्री छोटीखाटू हिन्दी पुस्तकालय की अनेक साहित्यिक स्मारिकाओं का आप ने सम्पादन किया है। सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'तुलसीदास: चिंतन-अनुचिंतन' के सह-सम्पादन के पश्चात् श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय से प्रकाश्य स्मारिका 'समर्थ रामदास त्रिशताब्दी' के सम्पादन कार्य में आप संलग्न हैं। आपातकाल के समय श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मंच से आप ने जनजागरण का स्वर बुलन्द किया एवं शासन की दुर्नीतियों को चुनौती दी, फलस्वरूप ८-९ माह तक आप को भूमिगत रहना पड़ा।

कुशल संगठनकर्त्ता, प्रबुद्ध साहित्य प्रेमी एवं कर्मठ समाजसेवी के रूप में राष्ट्र एवं समाज के चारित्रिक उत्थान हेतु आप अहर्निश संलग्न हैं। •

शिवरतन जासू

आप का जन्म २४ फरवरी १९४१ ई० को डीडवाना (राजस्थान) में हुआ। भंवरलाल जासू के आप पुत्र हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय से आप ने बी. काम. किया।

प्रारम्भिक जीवन से ही आप की सामाजिक, साहित्यिक एवं रचनात्मक कार्यों में विशेष अभिरुचि रही। १९७० ई० से कलकत्ता ही आप का कार्य-स्थल है। डीडवाना प्रवासियों की संस्था श्री डीडवाना नागरिक



सभा के आप मन्त्री तत्पश्चात् अध्यक्ष रहे। १९७७ ई० से आप श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मन्त्री हैं। आप सेवा संस्थान 'योगक्षेम' की कार्यकारिणी के सक्रिय सदस्य हैं।

भारत सेवक समाज के माध्यम से भी आप ने अनेक रचनात्मक कार्यों में सक्रिय रूप से सहयोग किया। भारत-पाक युद्ध एवं बांगला देश मुक्ति संग्राम जैसे राष्ट्रीय संकट काल में आप ने शरणार्थी शिविरों में सक्रिय रूप से सेवायें की।

आप उत्साही एवं लोकप्रिय सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। •

स्व. जयनारायण पोद्दार

आप का जन्म १८५२ ई० में रामगढ़ (राजस्थान) में हुआ था। पालीराम पोद्दार आप के पुत्र थे। १८६६ ई० में आप कलकत्ता आ गये तथा 'ताराचन्द घनश्यामदास' फर्म की कलकत्ता गद्दी के मुनीम बन गये। कालान्तर में अपनी व्यावसायिक प्रतिभा से १९०१ ई० में आपने 'जयनारायण रामचन्द्र' फर्म की स्थापना की।

प्रकृति से आप ईश्वर-भक्त और दानी थे। पैतृक सम्पत्ति से मिले ३ लाख रुपये आप ने दान कर दिए। मथुरा-वृंदावन के पास बरसाने में आपने एक विशाल मन्दिर बनवाया।

सभा एवं पंचायत संचालन के अपने चातुर्य के लिए आप मारवाड़ी समाज में प्रसिद्ध थे। मारवाड़ी समाज की पंचायत में अपने फर्म की ओर से आप सरपंच के आसन पर बैठते थे।

जीवन के उत्तरार्द्ध में आप बरसाने चले गए और वहीं राधाकृष्ण की भक्ति में शेष जीवन व्यतीत कर दिया। आपका देहावसान १९२४ ई० में हुआ।

अपनी दानशीलता तथा अनुपम पंच निर्णयों के लिए आप स्मरणीय रहेंगे। •

स्व. रामचन्द्र पोद्दार

आप का जन्म संवत् १९२८ में राजस्थान के रामगढ़ में हुआ था। आप जयनारायण पोद्दार के पुत्र थे। संवत् १९४८ में आप दिल्ली आ कर पैतृक दूकान की देख-रेख करने लगे। संवत् १९५३ में आप कलकत्ता आये और 'ताराचन्द घनश्यामदास' फर्म में अपने पिता के साथ काम करने लगे। आप के प्रयत्न से प्रसिद्ध संस्थान शावालेस कम्पनी की मुसद्दीगिरी प्राप्त हुई।

आप आस्था से सनातन धर्मावलम्बी थे एवं कलकत्ते की अनेक धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं को सहयोग प्रदान करते थे। •

स्व. गंगाबक्स कानोड़िया

आप का जन्म १ फरवरी १८८२ ई० को मुकुन्दगढ़ में हुआ। आप रामदत्त कानोड़िया के पुत्र थे। १४ वर्ष की अवस्था में आप अर्थोपार्जन हेतु पैदल ही कलकत्ता चले आए। यहाँ जुगलकिशोर बिड़ला के सहयोग से आपने पहले रूई का निर्यात और फिर चांदी का व्यवसाय किया।



आपने व्यापार में प्रचुर धनोपार्जन तो किया ही, साथ ही मुक्त-हस्त दान भी दिया। अपने पैतृक ग्राम मुकुन्दगढ़ में आपने १ लाख रुपये लगा कर विद्यालय तथा २६ हजार रुपये से औषधालय स्थापित किया। १९४२ ई० में बंगाल के भयावह अकाल के समय आपने पूर्व बंगाल के बवासी क्षेत्र के १७ गाँवों में भोजन की सम्पूर्ण व्यवस्था स्वयं की। समाज सेवा एवं परोपकार में आप की सदैव प्रवृत्ति बनी रही। मारवाड़ी समाज में किसी भी विषय पर विवाद हो जाने पर दोनों पक्षों को आपका पंचायती निर्णय मानना पड़ता था।

आप रामभक्त एवं सनातनी थे, साथ ही स्वामी दयानन्द के साहित्य में भी अनुरक्त थे। तीर्थ यात्रा में आपकी विशेष रुचि थी। ६० वर्ष की वृद्धावस्था में आप सार्व-

जनिक जीवन से अवकाश ले मुकुन्दगढ़ चले गए और वहीं २५ जून १९४८ ई० को आप की इहलीला समाप्त हुई। अपनी सदाशयता के लिए आप सदैव श्रद्धास्पद रहेंगे। ●

स्व. बद्रीदास गोयनका

आप का जन्म १८८३ ई० में हुआ था। आप के पिता रामचन्द्र गोयनका थे। कॉलेज तक शिक्षा प्राप्त कर आप पैतृक व्यवसाय में लग गये। आप ने रैली ब्रदर्स की बेनियनशिप प्राप्त करने के अतिरिक्त नये उद्योग-धन्धे भी स्थापित किए। सन् १९३५ में अग्रज सर हरिराम गोयनका का स्वर्गवास होने पर सामाजिक सेवा के क्षेत्र में आप ने प्रवेश किया।

अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन का जब कानपुर में अधिवेशन हुआ, तब आप को उसका सभापति बनाया गया। अग्रज के समान आप को भी सरकार ने 'सर' की राजकीय उपाधि से अलंकृत किया। आप कलकत्ता कारपोरेशन के पार्षद, बंगाल विधान परिषद तथा कलकत्ता इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट के सदस्य बने। रिजर्व बैंक आफ इंडिया की स्थापना होने पर आप को भी उसका एक निदेशक मनोनीत किया गया।

९० वर्ष की आयु में आप का निधन २६ फरवरी १९७३ ई० को हुआ। ●

स्व. रामेश्वर दास नाथानी

आप का जन्म सन् १८८६ ई० को दूधवाखारा (बीकानेर) में हुआ। आप के पिता प्रख्यात व्यवसायी बलदेव दास नाथानी थे। आप भी पैतृक व्यवसाय में संलग्न हो गए और अपार सम्पदा अर्जित की। वस्त्र, स्वर्ण, चाँदी, जूट व शेयर बाजार के अग्रगण्य व्यवसायियों में आप का स्थान था।

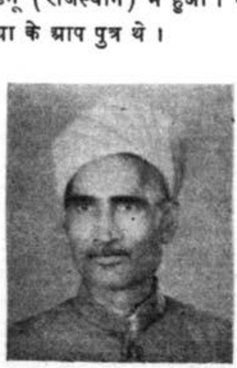
आप भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। आप ने १९१८ ई० में अपने गोपाल बाग में लक्ष चण्डी यज्ञ का पाठ कराया। द्वारका-पुरी, सेतुबन्ध रामेश्वरम्, जनकपुर रोड, जनकपुर धाम (नेपाल), मुजफ्फरपुर, बहल (हरियाणा) एवं साहबगंज तिवारीपट्टी (गोरखपुर) आदि तीर्थ स्थानों में आपने यात्रियों की सुविधार्थ धर्मशालाएँ बनवायीं। अपने गाँव दूधवाखारा में श्री नाथानी कष्ट निवारण भण्डार नामक संस्था स्थापित की जिसके अन्तर्गत मंदिर, दातव्य औषधालय, गोशाला, पाठशाला, धर्मशाला एवं कन्या पाठशाला का निर्माण कराया गया।

आपने अनेक सामाजिक संस्थाओं को मुक्त हस्त सहायता दी, जिनमें प्रमुख हैं – श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल (१½ लाख रु०), आर. एस. दास स्कूल (१ लाख रु०), कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी, गोखले मेमोरियल स्कूल, मेटरनिटी स्कूल, बी. एस. अस्पताल। इनके अतिरिक्त आपने देहरादून स्कूल (१ लाख रु०), मेवाड़ अनाथालय, महाराणा कालेज (उदयपुर), विद्या भवन (उदयपुर), राजस्थान महिला विद्यालय आदि को भी सदाशयतापूर्वक आर्थिक सहयोग दिया।

अपनी दानशीलता एवं समाज सेवा के लिए आप चिरस्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. पूनम चन्द भूतोड़िया

आप का जन्म ५ नवम्बर १९०३ ई० को लाडनूं (राजस्थान) में हुआ। सूरजमल भूतोड़िया के आप पुत्र थे।



सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में आप की रुचि रही। ओसवाल नवयुवक समिति के आप आजीवन ट्रस्टी थे। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी विद्यालय, श्री जैन विद्यालय तथा मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी से आप घनिष्ठ रूप में सम्बद्ध रहे। आप ने मनसुखा (मिदनापुर) में भूतोड़िया आदर्श विद्यालय तथा बालीगुड़ी (हुगली) में होम्योपैथिक औषधालय की स्थापना की।

आप रूढ़ियों एवं आडम्बर के विरोधी थे। महिला उत्थान में आप की विशेष रुचि रही। लाडनूं में आप ने भूतोड़िया गर्ल्स कॉलेज तथा कुनणी देवी महिला शिक्षण संस्थान की स्थापना की। पेय जल संकट निवारण हेतु लाडनूं में आप ने कुएँ खुदवाए।

आप का निधन १९ नवम्बर १९७९ ई० को हुआ। सम्प्रति राजस्थानी साहित्य की विशिष्ट सेवा के लिए १०,००० रु० का 'पूनम चन्द भूतोड़िया पुरस्कार' दिया जाता है। आप के द्वारा निर्मित संस्थान आप की यशस्विता के मुखर स्मारक हैं। ●

स्व. रामरिखदास हरलालका

आप का जन्म ३० जून १८६४ ई० को मण्डावा (राजस्थान) में हुआ। आप हरध्यानदास हरलालका के पुत्र थे। १० वर्ष की अल्पायु में ही अर्थोपार्जन हेतु आप अपने चाचा के साथ कलकत्ता आ गए और मात्र १ वर्ष बाद स्वतन्त्र रूप से भवानीपुर में अपनी कपड़े की दुकान खोल ली, जो कि शीघ्र ही बहुत लोकप्रिय हो गई।

१९३२ ई० में भवानीपुर क्षेत्र के पहिले अस्पताल की आप ने स्थापना की, जिसका उद्घाटन डॉ० विधानचन्द्र राय ने किया। फिर भवानीपुर के अपने ही मकान में आप ने विद्यालय भी स्थापित किया, जो आप के ही नाम पर चल रहा है। ५ वर्ष बाद आप की सहायता से दूसरा विद्यालय आदर्श हिन्दी हाईस्कूल भी स्थापित हुआ।

जीवन के अन्तिम ३३ वर्ष आप ने ज्योतिहीन अवस्था में भगवदाराधन में गुजारे। १ नवम्बर १९४६ ई० को आप का निधन हुआ। भवानीपुर क्षेत्र में सार्वजनिक सेवा संस्थानों के आदि संस्थापक के रूप में आप हमें स्मरणीय रहेंगे। ●

स्व. दीपचन्द पोद्दार

आप का जन्म सम्वत् १९३२ में हुआ और सम्वत् १९५९ में कलकत्ता आ कर 'ताराचन्द घनश्यामदास' फर्म में व्यापार देखने लगे। व्यवसायी वर्ग में आप की निष्पक्षता एवं न्याय-परायणता की धाक थी। उनके आपसी विवादों में आप का पंच-फैसला सर्वमान्य होता था।



वैदिक सिद्धान्तों पर आप की अटूट श्रद्धा थी। कई वर्षों तक आप पूर्वांचल आर्य समाज की प्रतिनिधि सभा तथा गुरुकुल वैद्यनाथ धाम के सभापति रहे। आप बाबा काली कमलीवाला के कार्यों में सक्रिय सहयोग करते थे। ●

स्व. गंगाधर बागला

आप का जन्म १८८६ ई० के लगभग हुआ था। आप के पिता राजा शिवबक्स बागला सुविख्यात व्यवसायी थे। आपने भी

अपनी प्रतिभा से पैतृक व्यवसाय में उत्तरोत्तर वृद्धि की।

आप प्रकृति से धर्म - परायण एवं सदाशय थे। आपने अनेक मन्दिरों का निर्माण करवाया। हावड़ा में निर्मित बागला धर्मशाला में आपने गोपाल मन्दिर बनवाया।

१९६१ ई० आप में गोलोकवासी हुए। आप के द्वारा स्थापित देवालय आपकी यश - कीर्त्ति के स्मारक हैं। ●

किशन लाल पोद्दार

आप का जन्म २५ अक्टूबर १८९३ ई० को रामगढ़ में हुआ। दीपचन्द पोद्दार आप के पिता थे। अपनी प्रतिभा के बल पर आप सुप्रसिद्ध फर्म 'ताराचन्द घनश्यामदास' के सर्वेसर्वा बन गए।

आप की विचारधारा आर्य समाज तथा सनातन धर्म में समन्वय की है। अनेक धार्मिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक संस्थाओं से आप का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी तथा आर्य महिला शिक्षा के आप ट्रस्टी हैं। आप आर्य समाज कलकत्ता, आर्य कन्या महाविद्यालय, बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र तथा गुरु - कुल महाविद्यालय (देवघर) के सभापति, और श्री रघुमल आर्य विद्यालय के मन्त्री रह चुके हैं।

आप सफल व्यवसायी तथा धर्मप्राण सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं। ●

महेश प्रसाद खत्री

आप का जन्म २२ अगस्त १८९७ ई० को कलकत्ता में हुआ। आप मुन्नीलाल खत्री के पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से आप ने राजनीति शास्त्र में एम. ए. किया। अंग्रेजी, संस्कृत तथा हिन्दी भाषा के आप विद्वान हैं। सम्प्रति आप दीवानी अदालत के मूर्धन्य अधिवक्ता हैं। आप वेस्ट बंगाल



बार एसोसियेशन के अध्यक्ष रह चुके हैं तथा प्रेसिडेंसी स्माल काजेज कोर्ट बार एसोसियेशन के सभापति हैं।

कलकत्ता महानगरी में इलाहाबाद बैंक, हिन्दुस्तान कार्माशियल बैंक, ओरियण्टल बैंक आफ कामर्स तथा पंजाब नेशनल बैंक के आप न केवल मुसद्दी ही रहे वरन् उनकी स्थापना तथा संचालन में भी योगदान किया।

हनुमान मन्दिर न्यास, गोबर्धन दास मक्कड़ ट्रस्ट (गोबर्धन), सारस्वत खत्री संस्कृति परिषद, सारस्वत खत्री विद्यालय तथा सारस्वत खत्री बालिका विद्यालय के उन्नयन में ट्रस्टी, संरक्षक या सदस्य के रूप में आपकी विशेष भूमिका रही। शिक्षा प्रचार तथा समाज सुधार कार्यों में आप सदैव अग्रगण्य रहते हैं। आडम्बर तथा प्रचार से आप सर्वथा दूर ही रहते हैं।

आप की नि:स्वार्थ सेवा एवं बहुमुखी व्यक्तित्व से प्रभावित हो १९७८ ई० में अखिल भारतीय खत्री सभा ने कलकत्ता शाखा की स्वर्ण जयंती के अवसर पर आपको 'जाति रत्न' की उपाधि से अलंकृत किया। ●

मोहनलाल जालान

आप का जन्म १९०५ ई० को कलकत्ता में सुप्रसिद्ध औद्योगिक घराने 'सूरजमल नागरमल' में हुआ। आप के पिता सूरजमल

जालान थे। अपनी प्रतिभा एवं दूरदर्शिता से आपने पैतृक व्यवसाय का औद्योगिक क्षेत्र में उल्लेखनीय विस्तार किया। बैंक आफ बीकानेर के आप चैयरमेन रह चुके हैं।



आप उदार, धर्मनिष्ठ एवं गुणग्राही समाजसेवी हैं। महिला जगत में शिक्षा-विस्तार में आपकी गहरी अभिरुचि है। सेठ सूरजमल जालान गर्ल्स कालेज, सेठ सूरजमल जालान बालिका विद्यालय, जालान संगीत विद्यालय, श्री हनुमान बालिका विद्यालय (सलकिया), महिला जागृति परिषद (बीकानेर) तथा सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय के आप अनेक वर्षों से सभापति हैं। सावित्री पाठशाला, सावित्री गर्ल्स कालेज तथा श्री विशुद्धानन्द सरस्वती विद्यालय के आप सभापति रह चुके हैं।

सार्वजनिक सेवा क्षेत्र में भी आप की विशेष भूमिका रही। आप ने मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी, श्री विशुद्धानन्द सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल, श्री हनुमान अस्पताल (सलकिया), श्री हनुमान अस्पताल (घुसुड़ी), मेंटल हास्पिटल (मानकुण्डू) तथा कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी के सभापति पद से समाज की बहुविध सेवा की।

क्रीड़ा जगत में भी आपका अनुराग है। श्री बड़ाबाजार युवक सभा तथा कालेज स्क्वायर स्वीमिंग क्लब के आप सभापति रह चुके हैं।

अपने पूर्वजों की भूमि रतनगढ़ के उन्नयन में आपकी विशेष अनुरक्ति है। १९५५ ई० से ही आप रतनगढ़ चैरिटी ट्रस्ट के सभापति हैं। रतनगढ़ में अपनी माता की स्मृति में आपने रमा ज्ञान भवन स्थापित किया, जिसका शिलान्यास तत्कालीन मुख्य-मन्त्री मोहनलाल सुखाड़िया ने किया।

अपनी माता की स्मृति में आप ने रमा बाई ट्रस्ट स्थापित किया है। इससे तथा अपने पैतृक ट्रस्ट (सेठ सूरजमल ट्रस्ट) से आप प्रति वर्ष विशाल धनराशि सार्वजनिक संस्थाओं को अनुदान में देते हैं। सेठ सूरजमल जालान स्मृति भवन की रजत जयन्ती पर आपने वयोवृद्ध समाजसेवी बद्रीदास गोयनका का अभिनन्दन किया। सेठ सूरजमल जालान पुस्तकालय में तुलसी जयन्ती पर प्रति वर्ष राम-कथा के मूर्धन्य मनीषी का व्याख्यान आयोजित करते हैं।

अपनी कर्मठता एवं सेवा भाव के लिए आप अनुकरणीय हैं। •

लक्ष्मण चन्द्र सिंह

आप का जन्म फरवरी १९०६ ई० को कलकत्ता में हुआ। रामनारायण सिंह आप के पिता थे। मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण कर आप ने कॉलेज में भी अध्ययन किया। शिक्षा क्षेत्र में आप की विशेष सेवाएँ हैं। लाजपत भवन, लाजपत एजूकेशन सोसाइटी, लाजपत



बालिका विद्यालय, लाजपत हिन्दी हाई स्कूल, रामनारायण शिक्षा निकेतन, आदर्श हिन्दी हाई स्कूल आदि से आप सम्बद्ध रहे।

अपर इण्डिया एसोशियेशन के भी आप सक्रिय सदस्य हैं। अध्ययनकाल में ही आप स्वाधीनता संग्राम में शामिल हो गए। ८३ नं० वार्ड से आप कलकत्ता नगर निगम के कांग्रेसी पार्षद के रूप में निर्वाचित हुए।

ईश्वर-भक्ति एवं गोसेवा में आप की दृढ़ आस्था है। अपने मकान के ऊपर ही आप ने राधाकृष्ण मन्दिर बनवाया है तथा द्वितीय विश्व-युद्ध तक प्रति वर्ष बेहाला में गोपाष्टमी मेले का आयोजन करते रहे।

आप शिक्षाव्रती एवं धर्मपरायण कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। ●

बांके लाल कपूर

आप का जन्म १७ मई १९०७ ई० को माइथन (आगरा) में हुआ। आपके पिता बनारसी दास कपूर थे। कलकत्ता से आपने मैट्रिकुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण की।



अपनी रुग्णावस्था में कमला नेहरू जब कलकत्ता में रहती थीं, तब जवाहरलाल नेहरू के स्नेह-भाजन होने के कारण उनकी देख-रेख का भार आप पर ही था।

१९४६ ई० में जब मुस्लिम लीग द्वारा प्रत्यक्ष कार्यवाही का आह्वान किया गया, तब महात्मा गांधी के आदेश पर नोआखाली में जा कर साम्प्रदायिक दंगों से पीड़ित हिन्दू समाज की आपने सेवा की, विशेषकर महिलाओं की असुविधाएँ दूर कीं।

श्री काशी विश्वनाथ सेवा समिति के सेवा कार्यों में आप सक्रिय रूप से भाग लेते रहे हैं। १९३४ ई० में बिहार में भूकम्प के बाद पीड़ित लोगों की सेवा करने गये थे। सामाजिक एवं राजनीतिक जागरण का कार्य करनेवाली हिन्दी नाट्य समिति एवं अन्य संस्थाओं से आपका घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। कलकत्ता रेडक्रास सोसाइटी और कलकत्ता राजयक्ष्मा संघ आदि के माध्यम से भी आप रोगियों की सेवा कर रहे हैं। ●

नन्दलाल जैन

आप का जन्म १९१० ई० में बुन्देलखंड के देवरी (सागर) में हुआ। सिंघई मूलचन्द जैन आप के पिता थे। १९२० ई० में अध्ययन हेतु आप कलकत्ता आए। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर आपने हिन्दी साहित्य सम्मेलन से 'विशारद' की उपाधि भी प्राप्त की। सम्प्रति सुप्रतिष्ठित मुद्रक एवं प्रकाशक हैं।



प्रारम्भ से ही आप का धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं से सक्रिय सम्बन्ध रहा। आप श्री दिगम्बर जैन युवक समिति,

बड़ाबाजार के कार्यकर्त्ता –

श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर, गोरखा दुःख निवारण समिति तथा श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के अध्यक्ष रह चुके हैं। सम्प्रति श्री वीर शासन ट्रस्ट के ट्रस्टी तथा बड़ाबाजार लाइब्रेरी के उपाध्यक्ष हैं। विश्व हिन्दू परिषद, श्री बंगाल-बिहार-उड़ीसा दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, श्री दिगम्बर जैन दातव्य औषधालय, आल इंडिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वां निर्वाण महोत्सव समिति (प० बं०), श्री जैन सभा आदि की कार्यकारिणी के आप सक्रिय सदस्य रहे।

प्राचीन भारतीय संस्कृति के आप उपासक हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के आप कार्यवाह रह चुके हैं। श्री बड़ाबाजार कुमारसभा पुस्तकालय के मंच से आपात्-काल में शासन का मुखर विरोध होने पर आप को कारादण्ड का भी वरण करना पड़ा।

जैन साहित्य एवं चित्र सर्व सुलभ हो सकें, इस हेतु आप सतत प्रयत्नशील हैं। अल्प मूल्य में श्रेष्ठ प्रकाशन के साथ आपने कई ग्रन्थों का सम्पादन भी किया है।

अपने उत्साह, कर्मठता तथा व्यवहार कुशलता से आप आज भी युवा कार्यकर्त्ताओं के प्रेरक बने हुए हैं। ●

सत्यनारायण टांटिया

आप का जन्म माघ शुक्ल सप्तमी संवत् १९७१ को सरदारशहर (राजस्थान) में हुआ। शिवनारायण टांटिया आप के पिता थे। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. काम. एवं कानून की शिक्षा प्राप्त की। सम्प्रति आप पाट व्यवसाय, चाय बगान एवं वनस्पति उद्योग में संलग्न हैं।

आप उत्साही, कर्मठ एवं धर्मपरायण व्यक्ति हैं। मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के आप प्रधान मंत्री रह चुके हैं। आप श्री विशुद्धानंद सरस्वती मारवाड़ी अस्पताल, सरदारशहर



परिषद व टांटिया हाई स्कूल के सभापति हैं। कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी से भी सम्बद्ध हैं। टांटिया हाईस्कूल एवं शिवसागर कॉलेज (असम) के संस्थापकों में आप हैं।

मारवाड़ी आरोग्य भवन (जसीडीह), रामकृष्ण मिशन आश्रम (नरेन्द्रपुर), रामकृष्ण मिशन इन्स्टीच्यूट आफ कल्चर, बाबा कालीकमलीवाला पंचायत क्षेत्र, पब्लिक लाइब्रेरी एवं अग्रसेन भवन (सरदारशहर) आदि संस्थाओं से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। राजस्थान में पिछले साल जो अकाल पड़ा था, उसमें आप ने पीड़ितों की राहत के लिए सराहनीय सेवा कार्य किया।

आप प्रबुद्ध व्यवसायी एवं कर्मठ समाजसेवी हैं। ●

भगवान दत्त जोशी

आप का जन्म ९ फरवरी १९१५ ई० को बारह गुवाड़ चौक (बीकानेर) में हुआ। आप केदारनाथ जोशी के पुत्र हैं। आगरा विश्वविद्यालय से बी. ए. तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) से विशारद कर आपने अध्यापन से जीवन प्रारम्भ किया। फिर आप बैंक व्यवसाय से संलग्न रहे। सम्प्रति कलकत्ता में प्रसिद्ध औद्योगिक घराने 'बांगड़' में आप मुनीम तथा मुख्तारे आम हैं।

धार्मिक संस्थाओं से आप प्रारम्भ से ही घनिष्ठ रूप में सम्बन्धित हैं। आप पुष्टिकर जातीय सम्मेलन (बीकानेर), राजस्थान ब्राह्मण संघ (कलकत्ता) तथा आध्यात्मिक उत्थान मण्डल (प० बंगाल) के अध्यक्ष; बंग प्रान्तीय धर्म संघ के उपाध्यक्ष; गोरक्षा महाभियान समिति तथा अखण्ड हरिकीर्तन संघ के मन्त्री हैं।

समाज सुधार के आप प्रबल पक्षधर हैं। बीकानेर पुष्टिकर समाज में प्रचिलित हानिकारक रूढ़िवाद के विरुद्ध आपने अभियान चलाया। यज्ञोपवीत, विवाह एवं मृत्यु के अवसर पर होनेवाले विभिन्न सामाजिक भोजों को आप ने समाप्त करवाया।

आप भारतीयता के उपासक तथा प्रबुद्ध समाज सुधारक हैं। ●

गणपत लाल खत्री

आप का जन्म २६ जुलाई १६२३ ई० को अमृतसर में हुआ। आप लक्ष्मीनारायण खत्री के पुत्र हैं। कालेज में शिक्षा प्राप्त कर आप हैन्डीक्राफ्ट व्यवसाय में संलग्न हैं।



अनेक सार्वजनिक सेवा संस्थाओं से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। पंजाबी बिरादरी के आप संरक्षक हैं। आप कलकत्ता युवक सभा, कोलूटोला वेलफेयर एण्ड कल्चरल एसोसियेशन, कालेज स्क्वायर स्वीमिंग क्लब, पंजाब सेवा समिति तथा बड़ाबाजार लाइब्रेरी के उपसभापति रह चुके हैं। इण्डियन होस्टल एसोसियेशन तथा एस. एस. हॉग मार्केट ट्रेडर्स एसोसियेशन के आप संयुक्त मन्त्री रहे।

राजनैतिक क्षेत्र में भी आप सक्रिय हैं। २३ नं० वार्ड की कांग्रेस कमेटी तथा ४६ नं० वार्ड की सिटिजन्स कमेटी के आप सभापति रह चुके हैं।

पश्चिम बंग शासन द्वारा आप को 'जस्टिस आफ पीस' भी नियुक्त किया गया। ●

भैरवदान तापड़िया

आप का जन्म २४ जून १६२६ ई० को जसवन्तगढ़ (राजस्थान) में हुआ। आप गणेशमल तापड़िया के पुत्र हैं। कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. परीक्षा उत्तीर्ण कर आप पैतृक व्यवसाय में संलग्न हो गए। आप टेक्सटाइल मर्चेन्टस् एसोसियेशन के मन्त्री तथा भारत चेम्बर आफ कामर्स के सदस्य हैं।



सामाजिक तथा सेवा कार्यों में आप की रुचि है। आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के अर्थ मन्त्री हैं। कलकत्ता यौगिक संघ के भी आप मन्त्री रह चुके हैं। ●

रामनिवास लखोटिया

आप का जन्म २८ अप्रैल १९३२ ई० को अजमेर (राजस्थान) में हुआ। आप के पिता मोहनलाल लखोटिया थे। आगरा विश्वविद्यालय से बी. काम. तथा एम. काम. की परीक्षाओं में आप सर्वोच्च रहे। एल. एल-बी. परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण कर १९५५ ई० में केन्द्रीय राजस्व विभाग में



प्रथम श्रेणी के अधिकारी पद से आप ने जीवन प्रारम्भ किया। १९५७ ई० में आय-कर अधिकारी की विभागीय परीक्षा में आप सम्पूर्ण भारत में प्रथम आए। सम्प्रति आप प्रख्यात आय-कर सलाहकार हैं। ईस्टर्न चेम्बर आफ कामर्स तथा एसोसियेशन आफ कम्पनी सेक्रेटरीज, एक्जीक्यूटिव्स एण्ड एकाउंटेंटस् के आप अध्यक्ष रह चुके हैं। अखिल भारतीय कर दाता संघ के आप संस्थापक-सभापति हैं।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों में आप की विशेष अभिरुचि है। आप माहेश्वरी समाजोत्थान समिति, माहेश्वरी सेवा समिति, माहेश्वरी संगीतालय, पश्चिम बंग प्राकृतिक चिकित्सा परिषद, सामाजिक आर्थिक अध्ययन परिषद तथा अजमेर एसोसियेशन के अध्यक्ष रह चुके हैं। आप अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के कलकत्ता अधिवेशन के उप-स्वागताध्यक्ष तथा तथा नागपुर अधिवेशन में महामन्त्री बने।

कई सेवा तथा दातव्य न्यासों के आप प्रबन्ध न्यासी व सभापति हैं। अपने माता तथा पिता की स्मृति में आपने 'मोहनलाल गंगादेवी लखोटिया धर्मशाला' का अजमेर में निर्माण कराया है।

१९७८-७९ ई० में लायन्स क्लब्स् इन्टरनेशनल, डिस्ट्रिक्ट-३२२ बी के आप डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रहे। अपने कार्यकाल में आपने बाढ़-ग्रस्त इलाकों में राहत कार्य करवाए तथा ११५ नलकूप लगवाए। भारत में लियो आन्दोलन के प्रणेताओं में आप हैं, साथ ही लियो क्लब आफ कलकत्ता (ईस्ट) के सभापति भी रहे। अनेक निःशुल्क नेत्र चिकित्सा केन्द्रों का आपने संचालन किया। भारतीय रेडक्रास के आप उप-संरक्षक व आजीवन सदस्य हैं तथा पश्चिम बंग रेडक्रास के उपसभापति रह चुके हैं।

आय-कर के सम्बन्ध में आपने हिन्दी व अंग्रेजी में अनेक पुस्तकें लिखी हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न, दृढ़ संकल्पी तथा कर्मठ समाजसेवी हैं। ●

आशा रानी लखोटिया

आप का जन्म ८ जुलाई १९३३ ई० को श्रीनगर (अजमेर) में हुआ। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से आपने साहित्य-रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप का विवाह प्रख्यात



आय कर विशेषज्ञ रामनिवास लखोटिया के साथ हुआ।

आप जागरुक तथा कर्मठ सामाजिक कार्यकत्री हैं। देश के कई स्थानों पर महिला संगठन कायम करने का आप को श्रेय है। आप मारवाड़ी महिला सम्मेलन (आसनसोल) की उद्घाटन कर्त्ता, अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला सम्मेलन (कलकत्ता) की स्वागत मंत्रिणी तथा हैदराबाद, इचलकरञ्जी आदि अनेक स्थानों पर हुए महिला सम्मेलनों की मुख्य अतिथि रह चुकी हैं। सम्प्रति आप माहेश्वरी महिला समिति की अध्यक्षा, अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा के कार्यकारी मण्डल की सक्रिय सदस्या तथा भारतीय रेडक्रास की आजीवन सदस्या हैं। आप को लायनेस क्लब आफ कलकत्ता (ईस्ट) की संस्थापक-अध्यक्षा तथा हिन्दुस्तान क्लब की महिला समिति की संयोजिका होने का भी गौरव प्राप्त हो चुका है। कई बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रों में आपने राहत कार्यों में सक्रिय भाग लिया है। आप अनेक सेवा एवं दातव्य न्यासों की ट्रस्टी हैं।

आप भाव-प्रवण कवियत्री तथा कुशल नाट्यकार-निर्देशक भी हैं। आप के दो कविता संग्रह 'जीवन पथ में' तथा 'राजस्थानी गीत संग्रह' प्रकाशित हो चुके हैं। हिन्दी तथा राजस्थानी में आपने कई एकांकी नाटक लिखे हैं और मंचन में उनका सफल निर्देशन भी किया है।

आप कुशल संगठनकर्त्ता तथा लोकप्रिय सामाजिक कार्यकत्री हैं। •

स्व. ब्रह्मदत्त झुनझुनवाला

आप पर-दुःख कातर, गुणग्राही तथा अनन्य गौ-सेवक थे। गो-रक्षा आन्दोलन जब कलकत्ते में हुआ, तब आप ने उसमें बड़े साहस तथा उत्साह के साथ भाग लिया—फलतः जेल यात्रा भी की। १९४६ ई० में आप कलकत्ता पिंजरापोल सोसाइटी की सोदपुर शाखा के मन्त्री बनाए गए। आप की यह प्रबल इच्छा थी कि राष्ट्रीय स्तर पर गायों की रक्षा तथा सम्वर्द्धन हो।

गुणी साहित्यकारों का सम्मान तथा आतिथ्य-सत्कार करने में आप सदैव तत्पर रहते थे। जहाँ कहीं भी साहित्यिक आयोजन होते थे, आप वहाँ संरक्षक के रूप में उपस्थित रहते थे। बंगाली समाज के राजनैतिक नेताओं की विपत्ति में आप ने मदद की तथा उनके आन्दोलनों में विवेक-सम्मत सहयोग भी किया। हावड़ा क्षेत्र के जरूरतमन्द मजदूरों के प्रति भी आप बड़े दयार्द्र थे और उनके सुख-दुःख में सहभागी बनते थे।

आप की विनम्रता तथा सेवा भावना आज भी स्मृति में सजीव है। •

मोहन लाल चोखानी

आप का जन्म १९२० ई० में कलकत्ता में हुआ। सुविख्यात समाजसेवी रामदेव चोखानी आप के पिता थे। स्कूली शिक्षा प्राप्त कर १९३७ ई० में आप आयात-निर्यात के पैतृक व्यवसाय में संलग्न हो गए।



२ वर्ष बाद ही इण्डियन चेम्बर आफ कामर्स की एक्सपोर्ट एडवाइजरी कमेटी के आप सदस्य चुने गए। कलकत्ता शेयर बाजार में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया और

कम्पनियों में व्याप्त दुष्प्रवृत्तियों को दूर करने में खुल कर योग दिया।

सामाजिक संस्थाओं से आप सक्रिय रूप में सम्बद्ध हैं। १९४६ ई० में आप मारवाड़ी एसोसियेशन के संयुक्त मंत्री बने। उसी वर्ष कलकत्ता में भयंकर साम्प्रदायिक दंगे सत्तारूढ़ मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डल के इशारे पर हुए। प्रभावित क्षेत्रों में आहत-पीड़ित जनों की आपने बहुत सेवा की। १९४९ ई० में आपने कल्चरल एसोसियेशन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति जन-मानस को जाग्रत करना है। आप अनेक वर्षों तक अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की स्थायी समिति के सदस्य रहे। १९७७ ई० में ईश्वरदास जालान अभिनन्दन समारोह की स्वागत समिति का आप को मन्त्री बनाया गया।

आप जागरूक तथा सेवाव्रती कार्यकर्त्ता हैं। •

स्व. रामेश्वरदास पाटोदिया

आप का जन्म २१ जनवरी १९०९ ई० को कानपुर में हुआ। कानपुर विश्वविद्यालय से आपने बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।



कलकत्ता महानगर ही आप का कार्यस्थल रहा। जीवन के प्रारंभ में आपने जूट तथा शेयर बाजार में काम किया, फिर 'मोटर व्यवसाय' में प्रवृत्त हुए और 'मैन आफ आँटोमोबाइल्स' के रूप में प्रसिद्ध हुए। हायर पर्चेज एसोसियेशन तथा रायल एक्सचेंज के आप अध्यक्ष बने। भारत चेम्बर आफ कामर्स, इंजीनियरिंग एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल, इंडियन रोड ट्रांसपोर्ट एसोसियेशन तथा इंजीनियरिंग एसोसियेशन की कार्य-कारिणी के आप सक्रिय सदस्य थे।

सार्वजनिक सेवा कार्य में प्रारम्भ से ही आपकी प्रवृत्ति थी। कानपुर में छात्रावस्था में ही अमर शहीद पं० गणेश शंकर विद्यार्थी का सानिध्य आप को प्राप्त हुआ था। आप हिन्दुस्तान क्लब के सभापति एवं सचिव पदों पर रहे। आप मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी के ४४ वें स्थापना दिवस समारोह के संयुक्त संयोजक तथा १९६४ ई० में इसके स्वर्ण जयन्ती समारोह के संयोजक बने। आप वेलफेयर सोसाइटी के प्रबन्धक न्यासी तथा संगीत कला मन्दिर के सदस्य थे। नवलगढ़ पिंजरापोल तथा राणी सती मन्दिर (झुंझनूं) के आप उपसभापति निर्वाचित हुए।

साहित्यिक जगत से आप का गहरा लगाव था। आप बड़ाबाजार लाइब्रेरी के १९४५-४६ ई० में मंत्री तथा १९६०-६३ ई० तक सभापति रहे। आप के लेख 'दैनिक प्रताप' में प्रकाशित होते रहते थे। आनन्दीलाल पोद्दार स्मृति ग्रन्थ का विश्वम्भर नाथ कौशिक के साथ आपने सह-सम्पादन किया।

आपका निधन १० दिसम्बर १९८१ ई० को हुआ। आप बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कर्मठ समाजसेवी थे। •

ताराचन्द पोद्दार

आप का जन्म १७ जून १९११ ई० को हुआ। रामरिक्षपाल पोद्दार के आप पुत्र हैं। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर आप रूई के व्यवसाय में संलग्न हैं। आप कलकत्ता काटन मर्चेण्टस् एण्ड ब्रोकर्स एसोसियेशन के ५ वर्ष